लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें सीरीज़–18

जियोर्जिया की लोक कथाऐं

1894

पहला भाग

अंग्रेजी अनुवाद ः मरजोरी वारड्रौप

हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

जून 2022

Series Title: Lok Kathaon Ki Classic Pustaken Series–18
Book Title: Georgia Ki Lok Kathayen-1 (Georgian Folk Tales-1)
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Map of Georgia

विंडसर, कैनेडा

जून 2022

Contents

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है। फिर इनका एकत्रीकरण आरम्भ हुआ और इक्का दुक्का पुस्तकें प्रकाशित होनी आरम्भ हुई और अब तो बहुत सारे देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें उनकी मूल भाषा में और उनके अंग्रेजी अनुवाद में उपलब्ध हैं।

सबसे पहले हमने इन कथाओं के प्रकाशन का आरम्भ एक सीरीज़ से किया था – "देश विदेश की लोक कथाऐं" जिनके अन्तर्गत हमने इधर उधर से एकत्र कर के 2500 से भी अधिक देश विदेश की लोक कथाओं के अनुवाद प्रकाशित किये थे – कुछ देशों के नाम के अन्तर्गत और कुछ विषयों के अन्तर्गत।

इन कथाओं को एकत्र करते समय यह देखा गया कि कुछ लोक कथाऐं उससे मिलते जुलते रूप में कई देशों में कही सुनी जाती है। तो उसी सीरीज़ में एक और सीरीज़ शुरू की गयी – "एक कहानी कई रंग"[1]। इस सीरीज़ के अन्तर्गत एक ही लोक कथा के कई रूप दिये गये थे। इस लोक कथा का चुनाव उसकी लोकप्रियता के आधार पर किया गया था। उस पुस्तक में उसकी मुख्य कहानी सबसे पहले दी गयी थी और फिर वैसी ही कहानी जो दूसरे देशों में कही सुनी जाती हैं उसके बाद में दी गयीं थीं। इस सीरीज़ में 20 से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। यह एक आश्चर्यजनक और रोचक संग्रह था।

आज हम एक और नयी सीरीज़ प्रारम्भ कर रहे हैं "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें"। इस सीरीज़ में हम उन पुरानी लोक कथाओं की पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद कर रहे हैं जो बहुत शुरू शुरू में लिखी गयी थीं। ये पुस्तकें तब की हैं जब लोक कथाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ ही हुआ था। अधिकतर प्रकाशन 19वीं सदी से आरम्भ होता है। जिनका मूल रूप अब पढ़ने के लिये मुश्किल से मिलता है और हिन्दी में तो बिल्कुल ही नहीं मिलता। ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें हम अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने के उद्देश्य से यह सीरीज़ आरम्भ कर रहे हैं।

इस सीरीज़ में चार प्रकार की पुस्तकें शामिल हैं –

1. अफीका की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
2. भारत की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
3. 19वीं सदी की लोक कथाओं की पुस्तकें
4. मध्य काल की तीन पुस्तकें – डैकामिरोन, नाइट्स औफ स्ट्रापरोला और पैन्टामिरोन। ये तीनों पुस्तकें इटली की हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सारी लोक कथाऐं बोलचाल की भाषा में लिखी जायें ताकि इन्हें हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

[1] "One Story Many Colors"

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब पुस्तकें “लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें” नाम की सीरीज के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये पुस्तकें आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरी भाषओं के लोक कथा साहित्य को हिन्दी में प्रस्तुत करेंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

जियोर्जिया की लोक कथाऐं–1

संसार में सात महाद्वीप हैं – एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अन्टार्कटिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया – सबसे पहले सबसे बड़ा और सबसे बाद में सबसे छोटा। एशिया महाद्वीप संसार का सबसे बड़ा महाद्वीप है – क्षेत्रफल में भी और जनसंख्या में भी। क्षेत्रफल में इसको सबसे बड़ा महाद्वीप बनाता है रूस देश और जनसंख्या में इसको सबसे बड़ा महाद्वीप बनाते हैं चीन और भारत। इसमें संसार के 40 प्रतिशत से भी अधिक लोग रहते हैं।

इस महाद्वीप में कुल मिला कर 48 से ज़्यादा देश है पर इसके इतने सारे देशों में भी काफी देशों की लोक कथाऐं मिल जाती हैं जैसे रूस जापान चीन भारत अरब आदि। जियोर्जिया भी इनमें से एक देश ऐसा है जिसकी लोक कथाऐं सबसे पहले लिखी हुई लोक कथाओं में से आती हैं।

1900 से पहले की प्रकाशित लोक कथाओं की पुस्तकों में से एक पुस्तक यहॉ के जियोर्जिया देश से भी आती है जो 1894 में प्रकशित हुई थी।[2] हालॉकि यह पुस्तक 1894 में प्रकाशित हुई जरूर थी पर इस संग्रह में इससे भी पुरानी लिखी हुई कहानियों का संग्रह है। सो अब प्रस्तुत है तुम सबके हाथों में यह पुस्तक "जियोर्जिया की लोक कथाऐं–1"[3] हिन्दी में। इस पुस्तक में यूरोप महाद्वीप के जियोर्जिया देश की लोक कथाओं की एक पुरानी पुस्तक का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया जा रहा है। इस पुस्तक में कुल 38 लोक कथाऐं दी गयी हैं जिन्हें उन्होंने तीन हिस्सों में बॉटा है – 16 लोक कथाऐं जियोर्जिया की, 8 लोक कथाऐं मिन्ग्रैलियन की और 14 लोक कथाऐं गुरियन की।[4]

लोक कथाऐं अधिक होने की वजह से इसे दो भागों में बॉट दिया गया। इसके पहले भाग में केवल जियोर्जिया लोक कथाऐं ही दी जा रही हैं। इस भाग में वहॉ की कुल 16 कथाऐं दी गयीं हैं। बाकी बची हुई 22 लोक कथाऐं इसके दूसरे भाग में दी जायेंगी।

मरजोरी ने ये लोक कथाऐं तीन स्रोतों से इकट्ठी की हैं।[5] उन्होंने ये लोक कथाऐं इन स्रोतों से इकट्ठा कर के उनका अंग्रेजी में अनुवाद किया है। ऐसा लगता है कि इन कथाओं का अनुवाद 27 साल बाद किया गया क्योंकि इस पस्तक में सबसे पुरानी प्रकाशित लोक कथाऐं 1867 की हैं। आशा है कि इतनी पुरानी लोक कथाऐं तुम सबको हिन्दी में पढ़ कर अच्छा लगेगा और यूरोप की वे लोक कथाऐं जो अंग्रज़ी में होने की वजह से या फिर उनके भारत में उपलब्ध न होने की वजह से तुम लोग नहीं पढ़ सकते वे सब अब तुम हिन्दी में आसानी से पढ़ सकोगे।

---

[2] Taken from the book "Georgian Folk Tales". Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt in the Strand. 1894. 38 folktales. This book in English is available at : http://www.archive.org/stream/cu31924029936006#page/n7/mode/2up **and** http://www.sacred-texts.com/asia/geft/index.htm

[3] Georgia Ki Lok Kathayen-1 – contains folktales from Georgia country of Europe

[4] Georgian Tales (16 Tales), Mingrelian Tales (8 Tales) and Gurian Tales (14 Tales).

[5] Part I. is a collection edited by Mr. Aghniashvili, and published in Tiflis, in 1891, by the Georgian Folklore Society, under the title, *Khalkhuri Zghaprebi*.
Part II. comprises the Mingrelian stories in Professor A. A. Tsagareli's *Mingrelskie Etyudy, S. Pbg*., 1880 (in Mingrelian and Russian). They were collected by him during 1867-1869.
Part III. is an anonymous collection, entitled *Gruzinskiya Narodnyya Skazki. Sobr. Bebur B.* S. Pbg*., 1884.

1 गुरू और चेला[6]

एक बार की बात है एक बहुत ही गरीब किसान था। उसके एक बेटा था। एक दिन किसान की पत्नी ने अपने पति से कहा — “हमारे बेटे को कोई काम सीखना चाहिये क्योंकि जब वह तुमसे अलग हो जायेगा तो अगर वह तुम्हारी तरह से बे पढ़ा लिखा रहा तो फिर वह क्या करेगा।”

पहले तो किसान ने पत्नी की बात सुनी अनसुनी कर दी पर पत्नी भी उसके पीछे पड़ी रही और उसको चैन से बैठने ही नहीं दिया। आखिर उसको अपने बेटे को ले कर बाहर जाना ही पड़ा।

सो किसान अपने बेटे को ले कर उसके लिये कोई गुरू ढूँढने चल दिया। रास्ते में उनको प्यास लगी। किसान को एक छोटी से नदी दिखायी दे गयी। उसने उसमें से जब तक उसकी प्यास नहीं बुझी बहुत जल्दी जल्दी पानी पिया।

पानी पी कर जब उसने अपना सिर ऊपर उठाया तो वह बोला “ओह तू कितना अच्छा है।”

जैसे ही उसने यह कहा तो पानी में से एक शैतान एक आदमी के रूप में निकला और किसान से पूछा — “ओ आदमी तुझे क्या चाहिये? मैं वख्रक[7] हूँ। तुझे क्या परेशानी है?”

---

[6] Master and Pupil (Tale No 1)

[7] Vakhraca

किसान ने उसको अपनी सारी कहानी सुनायी। शैतान को जब यह सब पता चला तो उसने किसान से कहा — "तू अपना यह बेटा मुझे दे दे। मैं इसको एक साल तक पढ़ाऊँगा।

फिर तू यहाँ आना। उस समय अगर तू इसको पहचान ले तो ठीक है यह तेरा। और अगर तू इसको न पहचान सके तो फिर यह मेरा, केवल मेरा होगा। तेरा इससे कोई लेना देना नहीं होगा।"

इस शैतान के पास इन शर्तों पर और भी बच्चे थे पालने के लिये। और एक साल में तो बच्चे इतना बदल जाते हैं कि उनके माता पिता भी उनको नहीं पहचान सकते हैं। और वह शैतान इस बात का फायदा उठा रहा था।

पर किसान को तो इन सब बातों कुछ भी पता नहीं था सो वह शैतान की इस बात पर राजी हो गया और अपने बच्चे को शैतान को दे कर चला गया।

धीरे धीरे एक साल गुजर गया। और एक साल गुजरने के बाद वह किसान फिर उसी नदी के किनारे आया।

उसको शैतान तो घर पर नहीं मिला हाँ उसके आँगन में बहुत सारे लड़के खेलते हुए मिले। उसने उन लड़कों में से अपने बेटे को पहचानने की बहुत कोशिश की उनको बार बार देखा पर वह अपने बेटे को नहीं पहचान सका।

यह देख कर किसान बहुत दुखी हुआ। वह दुखी दुखी खड़ा था कि उसके बेटे ने खुद ने उसको पहचाना।

बेटे ने पिता से कहा — "मेरा गुरू अभी अभी आने वाला होगा। वह हम सबको फाख्ताओं[8] में बदल देगा और फिर हम सब उड़ जायेंगे। उस उड़ान में सबसे पहले मैं उड़ूँगा और जब हम वापस लौटेंगे तब मैं सबके पीछे होऊँगा। जब मेरा गुरू आपसे पूछे कि इनमें आपका बेटा कौन सा है तब आप मेरी तरफ इशारा कर दीजियेगा।"

यह सुन कर किसान बहुत ख़ुश हुआ और वह अपने लड़के के गुरू के आने का इन्तजार करने लगा। कुछ ही देर में गुरू आ गया। उसने अपने सब शिष्यों को बुलाया उनको फाख्ताओं में बदला और उनको उड़ जाने के लिये कहा। किसान का बेटा उन सबमें सबसे पहले उड़ा और जब वे सब लौटे तो वह सबसे पीछे था।

गुरू ने पूछा — "क्या तू जानता है कि तेरा बेटा कौन सा है?"

किसान को तो मालूम था कि उसका बेटा कौन सा है सो उसने उसकी ओर इशारा कर दिया।

जब शैतान को अपने शिष्य की चाल का पता चला तो वह बहुत गुस्सा हुआ। पर अब क्या हो सकता था। अपनी शर्त के अनुसार बेटा अपने पिता के साथ चला गया।

[8] Translated for the word "Dove". See its picture above.

चलते चलते वे एक ऐसी जगह आये जहाँ कुछ कुलीन लोग शिकार के लिये आये हुए थे। उनके कुछ ग्रेहाउन्ड कुत्ते एक बड़े खरगोश[9] का पीछा कर रहे थे पर वे उसको पकड़ नहीं पा रहे थे।

बेटे ने पिता से कहा — “आप जंगल में जाइये और एक बड़े खरगोश का पीछा कीजिये। मैं अपने आपको एक कुत्ते में बदल लूँगा और फिर मैं उस बड़े खरगोश को उनके सामने ही पकड़ लूँगा।

ये कुलीन लोग आपका पीछा करेंगे और आपसे मुझे उनको बेचने के लिये कहेंगे। आप मुझे उनको ऊँची कीमत पर बेच दीजियेगा। फिर मैं पहला मौका पाते ही उनसे बच कर आपके पास भाग आऊँगा और आ कर आपको पकड़ लूँगा।”

यह सुन कर पिता जंगल में गया और एक बड़े खरगोश का पीछा किया। इधर बेटे ने अपने आपको एक ग्रेहाउन्ड कुत्ते में बदला और कुलीन आदमियों के सामने सामने ही उस खरगोश को पकड़ लिया।

यह देख कर वे तो भौंचक्के रह गये। वे उस किसान के चारों तरफ इकट्ठा हो गये और उससे वह कुत्ता उन्हें बेचने के लिये जिद

[9] Translated for the word “Hare” – Hare is a rabbit-like animal, but a bit larger than the rabbit. See its picture above.

करने लगे। किसान ने उनसे उसकी बड़ी ऊँची कीमत माँगी जो उन्होंने उसको दी और उस कुत्ते को खरीद लिया।

उन्होंने उस कुत्ते के गले में रस्सी बाँधी और उसको ले कर चल दिये। काफी दूर जाने के बाद उन्होंने देखा कि एक बड़ा खरगोश एक झाड़ी में से निकल कर भागा। उसको देखते ही उन्होंने अपने हाउन्ड को खोल दिया और उसको बड़े खरगोश के पीछे भेज दिया।

जब कुत्ते ने बड़े खरगोश का काफी देर तक पीछा कर लिया और कुलीन लोगों को भी उसने पीछे छोड़ दिया तो वह फिर से लड़के में बदल गया और अपने पिता के पास भाग गया।

पिता और बेटा अपने रास्ते चले गये। पर जो पैसा अभी उन्होंने कमाया वह काफी नहीं था। बेटा बोला "मुझे अभी और पैसा कमाना है।"

उन्होंने चारों तरफ देखा तो उन्होंने देखा कि कुलीन लोगों का एक और समूह एक चिड़िया का पीछा कर रहा था। कुछ बाज़[10] उसके पीछे उड़ रहे थे पर वे उस चिड़िया को पकड़ नहीं पा रहे थे।

सो लड़के ने एक बाज़ का रूप रखा और कुलीन लोगों के सामने सामने हवा में इस चिड़िया का पीछा करने लगा और जल्दी ही उसे नीचे गिरा दिया।

---

[10] Translated for the word "Falcon". See its picture above.

कुलीन लोग यह देख कर बहुत खुश हुए। उन्होंने किसान से कहा कि वह वह बाज़ उनको बेच दे। किसान ने उनसे फिर से इसकी बड़ी ऊँची कीमत माँगी और वह बाज़ उनको बेच दिया। बाज़ बेच कर वह किसान अपने रास्ते चला गया।

कुलीन लोग उस बाज़ को ले कर अपने रास्ते चले गये। चलते चलते उनको एक और चिड़िया मिली तो उन्होंने अपने बाज़ को उस चिड़िया के पीछे उसको पकड़ने के लिये छोड़ दिया।

बाज़ उस चिड़िया के पीछे उड़ने लगा। जैसे ही उसने देखा कि वे कुलीन लोग अब उसकी आँखों से ओझल हो गये हैं तो उसने अपने आपको लड़के में बदला और फिर अपने पिता के पास आ गया।

पिता और बेटा अपने उस पैसे को ले कर फिर अपने घर की तरफ चल दिये। पर बेटा अपने उतने पैसे से अभी भी सन्तुष्ट नहीं था। उसने अपने पिता से कहा — "आइये अब मैं अपने आपको एक घोड़े में बदल लेता हूँ। आप मेरे ऊपर सवार होइये किसी शहर में जाइये और मुझे बेच दीजिये।

पर ध्यान रहे कि आप मुझे किसी ऐसे आदमी को मत बेचियेगा जिसकी आँखें कई रंग की हों। और अगर आप मुझे उसे बेच भी दें तो उसको मेरे सिर पर लगाने वाला मत दीजियेगा। क्योंकि आपको मालूम हैं कि अगर आपने ऐसा किया तो मैं उस आदमी से अपने आपको छुड़ा नहीं पाऊँगा।

यह कह कर उस लड़के ने अपने आपको एक बहुत ही शानदार घोड़े में बदला। उसका पिता उस पर चढ़ गया और उस पर सवार हो कर शहर चल दिया। वहाँ जा कर उसने देखा कि उस घोड़े को तो बहुत लोग खरीदना चाहते थे।

पर उनमें से जो उस घोड़े को सबसे ज़्यादा खरीदना चाहता था वह था एक कई रंग वाली आँखों वाला आदमी।

जब भी कभी कोई उसकी कीमत एक रूबल[11] भी बढ़ाता तो वह आदमी उसकी कीमत दस रूबल बढ़ा देता। किसान को पैसे का लालच आ गया और उसने उस घोड़े को उसी कई रंग वाली आँखों वाले आदमी को बेच दिया। उस आदमी ने उस घोड़े के साथ साथ उसके सिर पर लगाने वाला साज़ भी खरीद लिया।

घोड़ा खरीद कर वह उस घोड़े पर चढ़ा और चल दिया। वह वहाँ से दौड़ गया और तुरन्त ही किसान की आँखों से ओझल हो गया। वह बहुत खुश था कि उसने अपने शिष्य को एक बार फिर से पा लिया था।

वह घर पहुँचा और उस घोड़े को एक अँधेरे कमरे में बन्द कर दिया और कमरे के दरवाजे को ताला लगा दिया। उसका शिष्य लेट गया। वह बहुत दुखी था। वह सोचता रहा और रोता रहा। पर उसको कोई सहायता नजर नहीं आ रही थी।

[11] Rouble is presently the name of the currency of Russia but was of some nearby countries too. Presently the currency of Georgia is Georgian Lari.

समय गुजरता रहा पर उसको वहॉ से भागने का कोई मौका हाथ नहीं लगा। एक दिन उसने देखा कि सूरज की एक किरन एक छेद में से हो कर अस्तबल में आयी। बस उसने आपको एक चूहे में बदला और बाहर भाग लिया।

उसके गुरू ने देखा तो उसने अपने आपको एक बिल्ली के रूप में बदला और उसके पीछे भागा। सो चूहा आगे आगे और बिल्ली उसके पीछे पीछे।

जैसे ही बिल्ली चूहे को अपने मुॅह में दबोच कर पकड़ने वाली थी चूहा तुरन्त ही एक मछली में बदल गया और एक नदी में तैरने लगा। गुरू एक जाल में बदल गया और मछली का पीछा करने लगा।

जैसे ही जाल मछली को पकड़ने वाला था कि मछली एक चिड़िया में बदल गयी और वहॉ से उड़ गयी। उसके गुरू ने उसका एक बाज़ का रूप रख कर पीछा किया। जब बाज़ उसको अपने पंजों में पकड़ने ही वाला था कि वह एक लाल सेब में बदल गया और राजा की गोद में जा गिरा।

बाज़ ने अपने आपको राजा के हाथ में एक चाकू में बदला। जब राजा चाकू से उस सेब को काटने जा रहा था कि सेब 80 पौंड बाजरे में बदल कर कपड़े पर बिखर गया।

शैतान ने अपने आपको एक मुर्गी में बदला और उस बाजरे को खाना शुरू कर दिया। जब उसने करीब करीब सारा बाजरा खा लिया और केवल बाजरे का एक दाना रह गया तो यह दाना एक सुई में बदल गया और उसने अपने आपको मुर्गी के सामने लुढ़का दिया। मुर्गी ने भी उसको तुरन्त ही देख लिया और अपने आपको एक धागे में बदल कर उस सुई के छेद में पिरो दिया।

जैसे ही वह धागा उस सुई को पकड़ कर रखता कि सुई आग में बदल गयी और उसने धागे को जला दिया। धागे के जलते ही लड़का शैतान के चंगुल से निकल कर भाग गया।

वह सीधा अपने पिता के पास पहुँच गया और फिर वे सब खुशी खुशी रहे।

2 तीन बहिनें और उनकी सौतेली माँ[12]

एक बार की बात है एक बहुत ही गरीब किसान था। उसके तीन बेटियाँ थीं। इस किसान की पत्नी मर गयी थी सो उसने दूसरी शादी कर ली थी। यह दूसरी पत्नी इन तीनों बेटियों को इस तरह नफरत करती थी जैसे लोग प्लेग से नफरत करते हैं।

वह रोज अपने पति को तंग करती "अपनी इन तीनों बेटियों को यहाँ से ले जाओ और कहीं छोड़ आओ। मुझसे नहीं सँभलती तुम्हारी ये बेटियाँ।"

एक दिन जब उससे नहीं रहा गया तो वह बीमार पड़ गयी और बिस्तर पर लेट गयी। वह अपनी करारी रोटी भी साथ में ले गयी और कराहने लगी। वह एक तरफ लेट गयी और उसने वह रोटी अपने नीचे दबा ली।

अब जब वह करवट बदलती तो वह रोटी उसके नीचे टूटती और आवाज करती तो वह कहती मेरी तो हड्डियाँ चटक रही हैं। मुझे दूसरी करवट लिटा दो।"

पर इसकी असली वजह तो उसकी वे तीनों सौतेली बेटियाँ थीं। उसके पति ने यह सब देख कर आखिर यह तय कर लिया कि वह उनको कहीं छोड़ आयेगा।

---

[12] Three Sisters and Their Stepmother (Tale No 2)

अगले दिन वह एक जंगल में दूर चला गया। वहाँ उसने सेब का एक बहुत बड़ा पेड़ देखा जिस पर बहुत सारे सेब लदे पड़े थे। उसने उसके नीचे एक गहरा गड्ढा खोदा। पेड़ पर से अपनी तीनों बेटियों के लिये तीन सेब तोड़े और घर चला गया।

घर पहुँच कर एक एक सेब उसने अपनी तीनों बेटियों को दिया। उसकी बेटियों को उन सेबों का स्वाद बहुत अच्छा लगा तो उन्होंने अपने पिता से कहा — "पिता जी ये सेब आपको कहाँ से मिले? क्या आप हमारे लिये ऐसे सेब और नहीं ला सकते?"

पिता ने जवाब दिया — "जंगल में तो ऐसे पेड़ बहुत सारे लगे हैं पर अभी तो वहाँ से और सेब लाने का मेरे पास समय नहीं है। अगर तुमको ये सेब इतने ही अच्छे लगे तो तुम मेरे साथ चलो। मैं वहाँ पेड़ हिला कर सेब गिरा दूँगा तुम उनको बीन लेना और घर ले आना।"

किसान की बेटियाँ तो यह सुन कर बहुत खुश हो गयीं और पिता के साथ चलने के लिये तुरन्त ही तैयार हो गयीं। उनके पिता ने जो सेब के पेड़ के नीचे गड्ढा खोदा था वह उसने उनसे छिपा कर ढक दिया था।

वह उनको वहाँ ले गया और बोला — "देखो ये रहे वे सेब। मैं इस पेड़ को हिलाता हूँ पर जब तक मैं तुमसे इन्हें बीनने के लिये न कहूँ तुम इनको बीनना मत। फिर जब मैं बोलूँ तब तुम उन

सबको मिला लेना और जो कोई भी जो सेब ले ले वह सेब उसका।"

सो पिता पेड़ के ऊपर चला गया और वहाँ जा कर उस पेड़ को हिलाया। फिर उसने अपनी बेटियों को बुलाया और कहा — "अब पकड़ो कौन सेब पकड़ सकता है।"

तीनों बेटियाँ अचानक ही उस ढके हुए गड्ढे की तरफ दौड़ पड़ीं। गड्ढा जिस चीज़ से ढका हुआ था वह उनका बोझ नहीं सह सका सो वह तीनों लड़कियों को लिये हुए गड्ढे में गिर पड़ा।

उनके पिता ने उनके लिये उस गड्ढे में बहुत सारे सेब फेंक दिये और उनको वहीं छोड़ कर वहाँ से घर चला गया।

पहले तो लड़कियों को अपने पिता का व्यवहार समझ में नहीं आया पर बाद में उनको पता चला कि उनका पिता उनको उस जंगल में किसी खास उद्देश्य से लाया था।

उन्होंने आपस में बात की कि हमारी नीच सौतेली माँ ही इस सबके लिये जिम्मेदार थी। पर अब क्या हो सकता था अब वहाँ तो उनको किसी सहायता की भी उम्मीद नहीं थी। सो तीनों की तीनों लड़कियाँ वहाँ बैठ कर रोने लगीं।

वे रोती रहीं रोती रहीं जब तक उनके चेहरे पीले नहीं पड़ गये। उनके आँसुओं से ऊपर आसमान और नीचे जमीन दोनों ही हिल गये।

आखिर पेड़ से झड़े सेब भी खत्म हो गये। सो उन्होंने सोचा और सोचा तो आपस में तय किया कि वे तीनों अपनी अपनी सबसे छोटी उँगली से खून निकालेंगी और जिसका खून सबसे मीठा होगा उसको खा लिया जायेगा।

सो उन्होंने ऐसा ही किया। सबका खून निकालने के बाद यह पाया गया कि सबसे छोटी लड़की का खून सबसे मीठा है।

यह देख कर वह डर गयी वह बोली — "बहिनों तुम लोग मुझे मत खाओ। मैंने तीन सेब छिपा कर रखे हैं। हम अभी उन्हें खा लेते हैं फिर भगवान शायद हमारी कुछ सहायता करें।"

कह कर वह घुटनों के बल बैठ गयी और प्रार्थना करने लगी — "हे भगवान तेरे नाम पर, मैं तुझसे प्रार्थना करती हूँ कि तू मेरा एक हाथ कुल्हाड़ी बना दे और दूसरा हाथ फावड़ा बना दे।"

भगवान ने उसकी सुन ली उसने तुरन्त ही उसका एक हाथ कुल्हाड़ी बना दिया और दूसरा हाथ फावड़ा बना दिया। सो एक हाथ से उसने गड्ढा खोदा और दूसरे हाथ से गड्ढे की मिट्टी बाहर फेंकी।

वह गड्ढा खोदती रही खोदती रही जब तक कि उसको एक चूहे का बिल नहीं मिल गया। उसने वहाँ से कुछ छोटी छोटी गिरियाँ उठायीं और अपनी बहिनों को दीं।

उसके बाद भी वह खोदती रही खोदती रही कि उसने अस्तबल की एक दीवार तोड़ दी। अब अस्तबल की यह दीवार एक राजा

की थी। इसमें बादाम और किशमिश बिखरे पड़े थे। सो ये लड़कियाँ उस अस्तबल में जाती और बादाम और किशमिश चुराती और उन्हें खा लेतीं।

अस्तबल में घोड़ों की देखभाल करने वाले बहुत ताज्जुब में थे कि वहाँ से ये बादाम और किशमिश कौन चुरा कर ले जाता है। हमारे घोड़े बेचारे भूखे रहते हैं।

छोटी लड़की फिर खोदती रही खोदती रही कि उसने एक बुढ़िया के घर की खिड़की तोड़ी। यह बुढ़िया रोज सुबह मास[13] के लिये चर्च जाया करती थी।

बुढ़िया के लिये दुखी होते हुए वह उसके घर में घुस गयी। वहाँ जा कर उसने उसका घर साफ किया फिर बीन्स उबलने रखीं। अपने तीनों के लिये काफी सारी रोटी ली और चोरी से वहाँ से वापस चली आयी।

जब वह बुढ़िया घर आयी तो वह तो बहुत आश्चर्यचकित रह गयी। “यहाँ कौन आया था जो मेरी रोटी चुरा कर ले गया।” शायद वह इसका पता लगा सकती थी। सो अगले दिन वह चर्च नहीं गयी। अगले दिन उसने अपने आपको एक चटाई में लपेटा और दरवाजे के साथ लग कर खड़ी हो गयी।

---

[13] Mass is one of the names by which the sacrament of the Eucharist is commonly called in the Catholic Church. The term Mass often colloquially refers to the entire church service in general.

उसने देखा कि कुछ देर बाद ही एक एक कर के तीन लड़कियाँ वहाँ आयीं। असल में उन्होंने सोचा कि इस समय तो बुढ़िया तो चर्च गयी होगी तो उसके घर में चलते हैं।

बुढ़िया ने उनको अपनी चटाई के अन्दर से देखा। तो वह तो जो कुछ उसने देखा उसको देख कर आश्चर्यचकित रह गयी। उसने देखा कि तीनों लड़कियाँ उसके घर में घुसीं। तीनों एक से एक सुन्दर थीं। एक से एक गोरी थीं लगता था जैसे उनको सूरज ने कभी छुआ ही न हो।

वह उनको देखती रही और देखती रही पर जब उससे नहीं रहा गया तो उसने अपनी चटाई हटा दी और उनमें से एक को अपनी बाँहों में पकड़ लिया और पूछा — "तुम कौन हो जो एक देवदूत की तरह लगती हो? तुम इन्सान हो या कोई देवदूत हो?"

लड़की बोली — "हम देवदूत नहीं हैं हम इन्सान हैं। हम तीन बहिनें हैं। बस हम पर बहुत मुसीबत आ पड़ी है इसलिये हम यहाँ हैं।"

तब उसने अपनी कहानी बुढ़िया को बतायी। उसकी कहानी सुन कर बुढ़िया बहुत खुश हुई कि उसको वे तीनों बहिनें मिल गयीं। वह उनकी अपनी आँखों की पुतली ती तरह से रक्षा करती। जब वह बाहर जाती तो वह उनके ऊपर टोकरी ढक जाती ताकि उन्हें कोई देख न ले और उन्हें कोई ले न जाये।

एक बार बुढ़िया ने लड़कियों को टोकरी के नीचे रखा और घर का दरवाजा बन्द कर के वह मास के लिये चर्च चली गयी।

लड़कियों के दिमाग में आया कि वे किशमिश खायें। सो वे उठीं उन्होंने अपने ऊपर से टोकरी उठायी और वहाँ से निकल कर घुड़साल में चली गयीं। जैसे ही वे किशमिश चोरी कर रही थीं कि घोड़ों के रखवाले बाहर निकल आये और उन्होंने उन तीनों लड़कियों को पकड़ लिया। पकड़ कर वे उन्हें राजा के पास ले गये।

राजा ने उनसे पूछा कि वे कौन हैं तो उन्होंने राजा को भी अपनी पूरी कहानी सुना दी। राजा ने पूछा — "तुम लोग क्या क्या कर सकती हो?"

सबसे बड़ी लड़की ने कहा — "मैं एक ऐसा कालीन बुन सकती हूँ जिसके ऊपर आपकी सेना का हर सिपाही बैठ जाये उसके बाद भी आधा कालीन बिना खुला रह जाये।"

दूसरी लड़की बोली — "मैं एक अंडे के खोल में इतना सारा खाना पका सकती हूँ कि आपकी सारी सेना वह खाना खाले फिर भी उतना ही खाना और बच जाये।"

राजा ने तीसरी लड़की से पूछा — "और तुम क्या कर सकती हो?"

तो तीसरी लड़की बोली — "मैं सुनहरे बालों वाले बेटे पैदा कर सकती हूँ।"

राजा उसके इस जवाब से बहुत खुश हुआ। उसने उससे शादी कर ली। राजा ने उसकी सबसे बड़ी बहिन का काम जॉचने की कोशिश की पर वह तो इतना बड़ा कालीन भी नहीं बुन सकी जिस पर एक आदमी भी बैठ जाये।

उसकी दूसरी बहिन भी अंडे के खोल में इतना भी खाना नहीं पका सकी जो एक चिड़िया के पेट भरने के लिये भी काफी हो।

राजा को उन दोनों पर बहुत गुस्सा आया तो उसने अपनी पत्नी से कहा — "अगर तुमने भी मुझे धोखा दिया तो देखना तुम तीनों में से कोई ज़िन्दा नहीं बचेगा।"

कुछ समय बाद राजा की पत्नी को बच्चे की आशा हुई। उसी समय इत्तफाक से राजा के एक दुश्मन ने राजा पर हमला कर दिया और राजा को लड़ाई के लिये जाना पड़ा।

जाने से पहले उसने यह सन्देश छोड़ा "अगर मेरी पत्नी के बेटा हो तो दरवाजे पर तलवार लटका देना और अगर उसके बेटी हो तो चरखा लटका देना।"

कुछ दिनों बाद ही उसकी पत्नी के बच्चा होने वाला हुआ तो उसकी बहिनें किसी को उसके कमरे में अन्दर ही न जाने दें। वे खुद ही उसकी देखभाल करती रहीं। उसने एक सुनहरे बाल वाले बेटे को जन्म दिया।

यह देख कर उसकी दोनों बड़ी बहिनें बहुत गुस्सा हुईं। उनको लगा कि वे तो राजा के सामने झूठी पड़ गयीं और उनकी यह छोटी बहिन अपनी बात की सच्ची निकली। उनकी इच्छा हुई कि वह भी उनकी तरह से झूठी साबित हो।

सो वे उठीं और बिना माँ की जानकारी के उन्होंने सुनहरे बालों वाले बच्चे को उठा कर उसकी जगह एक कुत्ते के बच्चे को रख दिया। बच्चे को मारने की उनकी हिम्मत नहीं हुई सो उसके लिये उन्होंने एक बक्सा बनाया उसको उसमें रखा और नदी में बहा दिया।

नदी का पानी उस बक्से को बहा ले चला। वह बक्सा जा कर एक मिल चलाने वाली मशीन में फँस गया जिससे मिल रुक गयी। मिल वाला वहाँ देखने के लिये आया कि उसकी मिल क्यों रुक गयी तो उसने देखा कि वहाँ तो एक बक्सा फँसा पड़ा था।

उसने बक्सा निकाल लिया और उसे खोला तो उसमें तो उसको सुनहरे बालों वाला एक लड़का निकला। मिल वाले के कोई बच्चा नहीं था सो वह उस बच्चे को घर ले आया और उसे अपने बच्चे की तरह पालने लगा। इस बीच बहिनों ने एक मूसल[14] दरवाजे के ऊपर टाँग दिया।

[14] Translated for the word “Pestle” – a small stick made of wood, stone or metal to grind something. A picture is given given to show a mortar and pestle.

कुछ समय बाद राजा लड़ाई पर से लौटा तो उसने दरवाजे पर मूसल टॅगा देखा तो लोगों से पूछा — "अरे यह क्या, यह मैं क्या देख रहा हॅू? मेरी पत्नी के क्या बच्चा हुआ है?"

लोगों ने जवाब दिया "कुत्ते का बच्चा।"

यह सुन कर राजा को गुस्सा तो बहुत आया पर फिर सोचा लगता है कि किसी ने मेरे साथ मजाक किया है। देखता हॅू कि अबकी बार मेरी पत्नी किसको जन्म देती है।

इस बात को एक साल गुजर गया। उसकी पत्नी को फिर से बच्चे की आशा हो आयी। एक दिन जब राजा शिकार के लिये गया हुआ था तो उसकी रानी ने फिर से एक सुनहरे बालों वाले लड़के को जन्म दिया।

उसकी बहिनों ने पहले की तरह से फिर से किसी को भी उसके कमरे में नहीं जाने दिया। बच्चे को उन्होंने फिर से मॉ के पास से उठाया और अबकी बार उन्होंने उसके पास कुत्ते के बच्चे की बजाय एक बिल्ली का बच्चा रख दिया।

इस बार भी उन्होंने उसके बच्चे को एक बक्से में बन्द किया और बक्से को नदी में बहा दिया। इत्तफाक से वह बच्चा फिर से उसी मिल वाले को मिल गया।

मिल वाला उस बच्चे को भी उठा कर घर ले आया और अपने पहले बच्चे की तरह से उसको भी अपने बच्चे की तरह से पालने लगा।

बहिनों ने दरवाजे के ऊपर फिर से मूसल लटका दिया।

राजा जब शिकार से लौटा और उसने दरवाजे पर मूसल लटका देखा तो वह गुस्से से जल उठा और उसकी ऑखों से चिनगारियॉ निकलने लगीं।

उसने अपनी पत्नी को बाहर निकाला बैल की खाल में लपेटा और महल के सामने एक खम्भे से बॉध दिया। फिर जो भी वहॉ से गुजरता उसको उसके चेहरे पर थूकने का और उसको मारने का हुक्म दिया जाता। इस तरह वह उसको अन्यायपूर्वक परेशान करता रहा।

उधर वह मिल वाला उन दोनों सुनहरी बालों वाले लड़कों को बहुत प्यार करता था जैसे कि वे उसकी ऑखों के तारे हों। बच्चे जल्दी जल्दी बड़े हो रहे थे। वे अक्लमन्द बहादुर और सुन्दर होते जा रहे थे।

एक बार राजा फिर शिकार खेलने गया तो वहॉ उसने कुछ बच्चे खेलते हुए देखे। उनमें से दो बच्चे दूसरे बच्चों से बहुत अच्छा खेल रहे थे। राजा को वे दोनों बच्चे बहुत अच्छे लगे।

वह उन पर से अपनी ऑखें ही नहीं हटा सका। वह उनको देखता का देखता रह गया। वह उनको देखते थक ही नहीं रहा था। वह उनकी तरफ देखते ही रहना चाह रहा था।

उसने यह भी देखा कि उनकी शक्ल उससे कितनी मिलती जुलती है। वह यह देख कर बहुत आश्चर्यचकित था उसने अपने

मन में सोचा "ये बच्चे किसके हो सकते हैं जिनकी शक्ल मुझसे इतनी ज़्यादा मिलती है।" पर वह सच्चाई नहीं जान सका।

उसी समय खेलते समय उनमें से एक भाई की टोपी नीचे गिर गयी जिससे उसके सुनहरे बाल दिखायी दे गये। यह देख कर राजा तो भौंचक रह गया। उसको याद आया कि उसकी पत्नी ने शादी से पहले कहा था कि वह उसको सुनहरे बालों वाले बच्चे देगी।

उसने पूछा — "ये बच्चे किसके है?" तो उसको पता चला कि वे बच्चे तो एक मिल वाले के बच्चे हैं।

अगले दिन राजा ने एक दावत का इन्तजाम किया जिसमें उसने उस मिल वाले को और उसके दोनों बेटों को बुलाया। जब बच्चे राजा के ऑगन में आये तो उन्होंने एक स्त्री को एक खम्भे से बॅधा देखा। उसको देख कर उनको लगा कि वह उनकी मॉ होनी चाहिये।

रसोइया एक चिड़िया पका रहा था। तो बड़ा भाई अन्दर चला गया। उसने रसोइये से एक लोहे की सलाख ली और आग के पास बैठ गया और चिड़िया को आग में भूनने के लिये उससे उसको अलटने पलटने लगा।

जब वह भुन कर लाल हो गयी और पक गयी तो उसने एक कहानी कहनी शुरू की। सबके कान खड़े हो गये और लोग उसके चेहरे की तरफ देखने लगे।

लड़के ने फिर अपनी माँ की कहानी कहनी शुरू की। उसने बताया कि कैसे उसकी माँ ने सुनहरे बालों वाले लड़कों को जन्म दिया। कैसे उसकी माँ की बहिनें बहुत ही नीच थीं। अन्त में उसने कहा — "अगर यह सब सच है तो इस बैल की खाल फट जाये और हमारी माँ आजाद हो जाये।"

लड़के के यह कहते ही बैल की खाल फट गयी और उसकी माँ आजाद हो कर अन्दर आयी।

जब उसकी कहानी खत्म हो गयी तो उसका छोटा भाई अन्दर आया और लोहे की सलाख हाथ में उठायी और बोला — "अगर मेरे भाई की सारी कहानी ठीक है तो सचमुच यह हमारी माँ है। इस भुनी हुई चिड़िया के पंख आ जायेंगे और यह उड़ जायेगी।"

तुरन्त ही उस भुनी हुई चिड़िया के पंख प्रगट हो गये और वह उड़ गयी। लोग तो यह देख कर उसको मुँह फाड़े देखते रह गये।

राजा ने अपनी पत्नी की दोनों बहिनों को वहाँ बुलवाया और उनके घोड़े की पूँछ से बँधवा कर चारों तरफ घिसटवाया।

राजा ने अपनी पत्नी और बच्चों को महल में बुलवा लिया। महल में खूब खुशियाँ मनायी गयीं। राजा को अब सच का पता चल गया था और उसने अपने सुनहरे बालों वाले दोनों बेटों को भी पा लिया था। सब लोग खुशी खुशी रहने लगे।

3 बिल्कुल बेकार[15]

यह एक ऐसे आदमी की कहानी है जो अपने रहने सहने के लिये कुछ नहीं करता था। उसकी पत्नी उससे बहुत परेशान थी। उनकी ज़िन्दगी फिर कैसे आगे चली... आओ देखते हैं।

एक बार एक आदमी था जो "बिल्कुल बेकार" का था। वह किसी काम का नहीं था। दूसरी तरफ उसकी पत्नी बहुत ही बुरे स्वभाव की थी। वह उसको बिल्कुल चैन नहीं लेने देती थी।

वह हमेशा उसको कहती रहती थी — "तुम बाहर जाओ और इधर उधर देखो और कुछ कमा कर लाओ। तुम देखते तो हो कि हम लोग कितने गरीब हैं। हम लोग कैसे खायें पियें और कैसे रहें।"

आखिर पति से जब नहीं सहा गया तो वह उठा और बाहर चला गया। वह तो बस चलता ही चला जा रहा था पर उसको यह पता नहीं था कि वह जा कहाँ रहा था।

सो वह चलता गया चलता गया और जब वह जहाँ से उसने चलना शुरू किया था वहाँ से नवें पहाड़ पर चढ़ा तो उसने एक बहुत बड़ा सा घर देखा। इस घर में देवियाँ[16] रहती थीं।

---

[15] Good For Nothing (Tale No 3)

[16] Written here for the word "Devis" – Devi word seems to be used here for some demon type of beings.

वह इस घर के पास आया तो उसने देखा कि एक कमरे के बीच में आग जल रही है। उस आग के चारों ओर देवियाँ बैठी हैं और उस आग से अपने हाथ गर्म कर रही हैं।

वह उस कमरे में चला गया और दोस्ताना अन्दाज में उनको नमस्ते की और वहीं आग के पास बैठ गया। क्योंकि वह उनसे ठीक से बोला था तो देवियों ने भी उसके साथ ठीक से ही बर्ताव किया।

वह उनके साथ दिन रात रहा। उसने उन्हीं के साथ खाना खाया उसने उन्हीं के साथ पिया और वह उन्हीं के साथ सोया। वह उनके साथ उनके छोटे भाई की तरह ही रहा।

इन देवियों के पास एक इच्छा पूरी करने वाला पत्थर था। जब वे एक साथ बैठती थीं तब वह अपना पत्थर बाहर निकालती थीं तो अगर वह दोपहर का खाना चाहती थीं तो उससे उनको दोपहर का खाना मिल जाता था। अगर वे उससे शाम का खाना चाहती थीं तो उससे उनको शाम का खाना मिल जाता था।

इस तरह वे बिना कोई चिन्ता किये रहती थीं। उनको कोई दुख नहीं था और यही तो हमारे “बिल्कुल बेकार” आदमी को बहुत अच्छा लगा। उसने ऐसी ज़िन्दगी को अच्छा समझा सो उसने वह “इच्छा पूरी करने वाला पत्थर” चुराने की सोचा।

एक बार जब देवियाँ गहरी नींद में सोयी हुई थीं तो वह चुपके से सोने वाले कमरे से बाहर निकला "इच्छा पूरी करने वाला पत्थर" उठाया और बाहर जाने के लिये दरवाजे के पास आया।

उसने दरवाजा खुलने की इच्छा प्रगट की तो वह दरवाजा चरचराने लगा। वह चरचराया और बोला — "मेहमान ने इच्छा पूरी करने वाला पत्थर चुरा लिया है।"

बिल्कुल बेकार तुरन्त पीछे घूमा और उस पत्थर को उसकी जगह पर रख दिया। फिर वह सोने के कमरे में चला गया और सोने का बहाना करने लगा।

दरवाजे के चरचराने ने देवियों को जगा दिया। उन्होंने उठ कर तुरन्त ही इधर उधर देखा तो अपने इच्छा पूरी करने वाले पत्थर को वहीं रखा पाया जहाँ उन्होंने रखा था। और बिल्कुल बेकार को मीठी नींद सोते पाया। यह देख कर वे खुश हो गयीं कि सब कुछ ठीक ठाक था। उन्होंने दरवाजा बन्द किया और फिर से सोने चली गयीं।

जब वे फिर से गहरी नींद सो गयीं तो बिल्कुल बेकार फिर से उठा उसने फिर से वह पत्थर उठाया दरवाजे पर गया और जब उसने फिर दरवाजा खोलना चाहा तो दरवाजा फिर से चरचराया और बोला — "मेहमान ने इच्छा पूरी करने वाला पत्थर चुरा लिया है।"

बिल्कुल बेकार फिर से लौट पड़ा उसने इच्छा पूरी करने वाला पत्थर फिर से उसकी जगह पर रखा और फिर से अपने सोने के कमरे में जा कर खर्राटे मारने शुरू कर दिये जैसे कि वह सो रहा हो।

अबकी बार देवियाँ बहुत गुस्सा हुईं। वे बहुत ज़ोर से कूदीं और अपना पत्थर देखने के लिये गयीं तो उनको अपना पत्थर वहीं का वहीं रखा मिल गया फिर वह बिल्कुल बेकार को देखने गयी तो वह भी उनको वहीं सोता हुआ मिला। वे सन्तुष्ट हो गयीं। उन्होंने दरवाजा बन्द किया और फिर सोने चली गयीं।

बिल्कुल बेकार ने यह चाल उस रात कई बार खेली। इस बात से देवियों को बहुत गुस्सा आया। उन्होंने दरवाजा तोड़ा और आग में डाल दिया। दरवाजा जला कर देवियाँ फिर से सोने चली गयीं।

उनके सोने के बाद बिल्कुल बेकार फिर से उठा उसने फिर से वह पत्थर उठाया और उसको जेब में रख कर बाहर चला गया।

अगली सुबह जब देवियाँ उठीं तो उन्होंने देखा कि न तो वहाँ उनका इच्छा पूरी करने वाला पत्थर है और न ही वहाँ उनका मेहमान है। उन्होंने उन दोनों को इधर उधर ढूँढा पर वे उनको कहीं दिखायी नहीं दिये। उनको या तो जमीन खा गयी या फिर आसमान निगल गया। इसलिये उनको कुछ पता ही नहीं चला कि वे दोनों कहाँ थे।

बिल्कुल बेकार अपने रास्ते खुशी खुशी चला जा रहा था। उसे किसी बात की चिन्ता नहीं थी क्योंकि वह इच्छा पूरी करने वाला पत्थर चुराने में कामयाब हो गया था। उसे तो बस अब इस बात की खुशी थी कि वह अब किस तरह बिना किसी परेशानी के खुशी खुशी रह सकेगा।

वह चलता जा रहा था चलता जा रहा था कि सड़क पर उसको एक आदमी डंडे के साथ चलता हुआ मिला। वह आदमी उससे बोला — "भाई मुझे बहुत भूख लगी है मुझे कुछ खाना दो।"

बिल्कुल बेकार ने अपनी जेब में हाथ डाला और अपना इच्छा पूरी करने वाला पत्थर निकाला। उसने उससे अपनी इच्छा प्रगट की कि उसको खाना चाहिये तो बस वहाँ खाने लायक बहुत सारी चीज़ें आ गयीं।

दोनों ने मिल कर पेट भर खाना खाया। जब उन्होंने अपना खाना खत्म कर लिया तो डंडे वाला आदमी बोला — "आओ मैं अपना डंडा तुम्हारे इस पत्थर से बदल लेता हूँ।"

बिल्कुल बेकार बोला — "तुम्हारे इस डंडे की क्या खासियत है।"

डंडे वाला आदमी बोला — अगर कोई भी आदमी अपने हाथ अपने सामने फैलाता है और बोलता है "डंडे बाहर आ।" तो यह डंडा अपने मालिक के सामने खड़े आदमी को मारने लगेगा।"

बिल्कुल बेकार ने उससे वह डंडा ले लिया और अपना पत्थर उसको दे दिया। उसके बाद वह फिर अपने घर की ओर चल दिया। वह थोड़ी दूर ही गया था कि उसने कहा "डंडे बाहर आ।" और यह कह कर उसने अपना हाथ डंडे के पुराने मालिक की तरफ बढ़ाया।

बस उस डंडे ने अपने पुराने मालिक को मारना शुरू कर दिया और तब तक मारता रहा जब तक उसकी सारी हड्डियाँ मुलायम नहीं हो गयीं। तब बिल्कुल बेकार वहाँ आया उसने अपना पत्थर उससे लिया अपना डंडा लिया और फिर से अपने घर की ओर चल दिया।

वह चलता रहा चलता रहा। चलते चलते उसको एक आदमी मिला जिसके पास एक तलवार थी। वह बोला — "भाई मुझे भूख लगी है कुछ खाना दो।" बिल्कुल बेकार ने अपना इच्छा पूरी करने वाला पत्थर निकाला और उससे खाना माँगा। खाना हाजिर हो गया। तलवार वाले आदमी ने खूब पेट भर कर खाना खाया।

खाने के बाद तलवार वाले आदमी ने बिल्कुल बेकार से कहा — "तुम मुझे अपना यह पत्थर दे दो मैं तुम्हें अपनी तलवार दे दूँगा।"

बिल्कुल बेकार ने पूछा — "तुम्हारी इस तलवार की क्या खासियत है।"

तलवार वाला आदमी बोला — “जिसके पास भी यह तलवार होती है वह आदमी हजारों आदमियों के सिर काट सकता है।”

बिल्कुल बेकार राजी हो गया। उसने उसकी तलवार ले ली और अपना पत्थर उसको दे दिया और फिर से अपने घर की ओर चल दिया।

कुछ देर चलने के बाद ही उसने फिर अपने डंडे को हुक्म दिया “डंडे बाहर आ।” डंडा उसके पास से निकला और जा कर तलवार वाले आदमी को बेरहमी से मारना शुरू कर दिया। और इतना मारा इतना मारा कि उसको तो उसने मार ही दिया। बिल्कुल बेकार ने उससे अपना पत्थर और तलवार ली और फिर अपने घर की ओर चल दिया।

आगे जाने पर वह एक ऐसे आदमी से मिला जिसके पास फ़ैल्ट[17] का एक टुकड़ा था। उसने भी बिल्कुल बेकार से खाना माँगा। बिल्कुल बेकार ने अपना पत्थर निकाला और उससे खाना माँगा। खाना वहाँ आ गया।

जब फ़ैल्ट वाले आदमी ने पेट भर खाना खा लिया तो वह बोला — “आओ मैं तुमको तुम्हारे पत्थर के बदले में अपना फ़ैल्ट का यह टुकड़ा देता हूँ।”

“तुम्हारी फ़ैल्ट का क्या फायदा है।”

[17] Felt is kind of thick cloth.

"अगर किसी आदमी का सिर कट जाये तो बस तुमको इस फ़ैल्ट का एक टुकड़ा लेना है और उसकी गर्दन पर लगा देना है उसका सिर उसकी गर्दन पर लग जायेगा और वह आदमी ज़िन्दा हो जायेगा।"

बिल्कुल बेकार ने अपना पत्थर उसको दिया उसकी फ़ैल्ट उससे ली और अपने घर की ओर चल दिया। कुछ देर चलने के बाद ही उसने अपने डंडे को हुक्म दिया कि वह उस फ़ैल्ट वाले आदमी को मारे। बस उस डंडे ने उसको खूब मारा। बिल्कुल बेकार ने उससे अपना पत्थर वापस लिया और फिर अपने घर की ओर चल दिया।

आखिर वह अपने घर आया। डंडा उसने अपने घर के दरवाजे के पीछे रख दिया और अपनी पत्नी से मिला और बोला — "प्रिये देखो मैं क्या ले कर आया हूँ।" कह कर उसने उसको तलवार फ़ैल्ट और अपना इच्छा पूरी करने वाला पत्थर दिखाया।

पर उसकी पत्नी फिर से गुस्से से देखा और उसको जी भर कर बुरा भला कहना शुरू कर दिया। जब बिल्कुल बेकार से बिल्कुल ही नहीं सहा गया तो वह बोला "डंडे बाहर आ।"

बस उसका यह कहना था कि डंडा दरवाजे के पीछे से उठा और उसकी पत्नी को बड़ी बेरहमी से मारना शुरू कर दिया।

फिर उसने अपने छोटे छोटे बच्चों को बुलाया और अपने पत्थर से स्वादिष्ट खाना लगाने के लिये कहा। वहाँ बहुत सारा खाना प्रगट हो गया। सब लोगों ने बहुत स्वाद ले ले कर खाना खाया

जबकि पत्नी बहुत गुस्से से उन सबको खाना खाते केवल देखती ही रही।

कुछ समय तक तो वह देखती रही पर जब वह और न सह सकी तो वह आ कर अपने पति के घुटनों से लिपट गयी और उससे माफी माँगने लगी। पति ने उसको माफ कर दिया और दोनों ने एक दूसरे के ऊपर प्यार से हाथ फेरा।

कुछ समय बाद इस इच्छा पूरी करने वाले पत्थर ने उनको बहुत अमीर बना दिया। अब उनके घर में सोने की बर्तन हो गये थे।

यह सब देख कर एक बार पत्नी ने पति से कहा — "अब आपको राजा को खाने पर बुलाना चाहिये और उनके लिये एक अच्छी दावत का इन्तजाम करना चाहिये।"

उसके पति ने कहा — "क्या तुमको मालूम नहीं है कि यह राजा सबसे बहुत जलता है। जब वह यह सब चीज़ें हमारे पास देखेगा तो वह हमसे ये सब ले लेगा और हमें जेल में डाल देगा।"

पर पत्नी उससे बराबर जिद करती रही जब तक वह राजा को खाने पर बुलाने के लिये राजी नहीं हो गया। सो उन्होंने राजा को खाने पर बुलाया और उसके लिये बहुत अच्छी दावत का इन्तजाम किया।

जब दावत खत्म हो गयी तो राजा ने बिल्कुल बेकार से उसका इच्छा पूरी करने वाला पत्थर माँगा। बिल्कुल बेकार ने कहा कि वह यह पत्थर उसको नहीं दे सकता। यह सुन कर राजा बहुत गुस्सा हो

गया उसने अपनी सारी सेना को हुक्म दिया कि वह उस आदमी का घर चारों तरफ से घेर ले।

बिल्कुल बेकार ने अपने मन में कहा "यह सब नहीं चलेगा। अगर ये लोग मुझे जबरदस्ती अपने काबू में करना चाहते हैं तो मैं भी अपनी ताकत इनको दिखा दूँगा।"

जब वह यह सब सोच हा था तो उसने अपनी तलवार तो सेना की ओर की और अपना डंडा राजा की ओर किया। बस तलवार ने राजा की सारी सेना को मार दिया और डंडे ने राजा को बेरहमी से मारना शुरू कर दिया।

जब राजा डंडे से काफी पिट लिया और वह डंडे की मार और न सह सका तो वह बोला — "मेहरबानी कर के मुझे छोड़ दो और मेरी सेना को ज़िन्दा कर दो। मैं वायदा करता हूँ कि मैं यहाँ से शान्तिपूर्वक चला जाऊँगा।"

बिल्कुल बेकार उठा और फ़ैल्ट का एक टुकड़ा लाया और उसको हर सिपाही की गर्दन पर रखा जिससे राजा की सारी सेना ज़िन्दा हो गयी।

राजा ने उससे अपनी दुश्मनी दिखाने की फिर कभी हिम्मत नहीं की। बिल्कुल बेकार की पत्नी भी उसके बाद से अपने पति का कहना मानती रही। इस तरह से वे सब फिर खुशी खुशी रहे।

4 मेंढक की खाल[18]

एक बार की बात है कि एक जगह तीन भाई रहते थे। वे शादी करना चाहते थे तो उन्होंने आपस में कहा — "चलो हम लोग अपना अपना तीर चलाते हैं और जहॉ जिसका तीर जा कर पड़ेगा उसको उसी की बेटी से शादी करनी होगी।"

तीनों को शादी करने का यह जुआ बहुत पसन्द आया सो तीनों ने अपने अपने तीर चलाये। दोनों बड़े भाइयों के तीर कुलीन लोगों के घरों जा कर पड़े पर सबसे छोटे भाई का तीर एक झील में जा कर पड़ा।

सो दोनों बड़े भाइयों की शादी तो उन कुलीन लोगों की बेटियों से हो गयी पर सबसे छोटे भाई को झील के किनारे जाना पड़ा। जैसे ही वह झील के किनारे पहुँचा कि एक मेंढकी झील में से बाहर निकल कर आयी और बाहर आ कर एक पत्थर पर बैठ गयी। उसके मुँह में उसका तीर था।

छोटे भाई ने मेंढकी को उठाया और उसे घर ले आया। इस तरह तीनों भाई अपनी अपनी किस्मत को ले कर घर आये – दोनों बड़े भाई कुलीन परिवार की बेटियों के साथ और सबसे छोटा भाई एक मेंढकी के साथ।

---

[18] Frog's Skin (Tale No 4)

भाई लोग बाहर काम पर चले जाते और उनकी पत्नियाँ उनके पीछे उनका घर सँभालतीं। उनके लिये खाना बनातीं और घर के दूसरे कामों की देखभाल करतीं। पर मेंढकी एक तरफ को बैठी बैठी टर्र टर्र करती रहती और उसकी आँखें चमकती रहतीं।

इस तरह वे प्रेम से एक साथ मिल कर बहुत दिनों तक रहे। पर दोनों बड़ी बहुऐं उस मेंढकी को देखते देखते थक गयीं। एक दिन जब उन्होंने घर की सफाई की तो उन्होंने कूड़े के साथ साथ उस मेंढकी को भी बाहर फेंक दिया।

अगर सबसे छोटे भाई ने उसे देख लिया होता तो वह उसको हाथ में उठा लेता और अगर नहीं देखता तो वह मेंढकी अपनी पुरानी जगह आग के पास जा कर बैठ जाती और फिर से टर्र टर्र करती रहती।

कुलीन बहुओं को यह बिल्कुल अच्छा नहीं लगा तो उन्होंने अपने अपने पतियों से इसकी शिकायत की — "इस मेंढकी को बाहर निकालो और अपने भाई के लिये कोई असली पत्नी ले कर आओ। यह कोई तरीका नहीं है।"

सो रोज दोनों बड़े भाई अपने छोटे भाई से कहते कि वह कोई असली पत्नी ले कर आये। और वह हमेशा यही जवाब देता — "शायद यह मेंढकी ही मेरी किस्मत है भैया। इससे अच्छी चीज़ मेरी किस्मत में है ही नहीं। मुझे इसी का वफादार रहना चाहिये।"

इस जवाब को सुन कर दोनों बड़ी बहुओं ने कहा कि अगर यह कोई असली पत्नी नहीं लाता तो इन दोनों को घर से कहीं और भेज देना चाहिये। हम इस तरह से एक मेंढकी के साथ नहीं रह सकते। आखिर दोनों बड़े भाई ऐसा करने पर राजी हो गये।

अब छोटा भाई बिल्कुल अकेला रह गया था। उसका खाना बनाने वाला कोई नहीं था। जब वह काम से लौट कर आता तो कोई उसका दरवाजे पर खड़ा इन्तजार करता नहीं होता।

कुछ समय के लिये एक पड़ोसन घर में उसका इन्तजार करती पर फिर उसके पास भी समय नहीं रहा सो वह फिर अकेला पड़ गया। अब वह बहुत दुखी रहने लगा।

एक बार जब वह बड़े दुखी मन से अपने अकेलेपन के बारे में सोच रहा था तब वह काम पर गया। जब उसका काम खत्म हो गया तो वह अपने घर चला आया।

घर जा कर उसने अपना घर देखा तो वह तो उसे देख कर आश्चर्य में पड़ गया। उसके खाने के कमरे की आलमारी भरी हुई थी। मेज पर बहुत सुन्दर मेजपोश बिछा हुआ था जिस पर बहुत सारे स्वादिष्ट खाने लगे हुए थे।

उसने इधर उधर देखा तो एक कोने में मेंढकी को बैठे टर्र टर्र करते पाया। यह देख कर उसने सोचा कि शायद यह सब उसकी भाभियाँ उसके लिये कर गयी होंगी। वह खाना खा कर फिर से अपने काम पर चला गया।

सारा दिन बाहर काम करने के बाद जब वह शाम को घर आता तो वह रोज ही अपने लिये ऐसी सब चीज़ें तैयार पाता।

एक बार उसने सोचा "मैं एक बार देखना चाहता हूँ कि यह कौन भला आदमी है जो मेरे लिये इतना अच्छा कर रहा है और मेरा इतना ख्याल रख रहा है। सो उस दिन वह घर पर ही रहा। वह घर की छत पर जा कर बैठ गया और देखता रहा कि घर में क्या होता है।

कुछ देर बाद उसने देखा कि मेंढकी आग जलाने की जगह से उठी और दरवाजे की तरफ कूदी और कमरे में चारों तरफ घूमी। फिर यह देखने के बाद कि वहाँ कोई नहीं है वह वापस चली गयी और उसने अपनी मेंढकी की खाल उतार कर आग के पास रख दी।

अब क्या था उसके अन्दर से तो एक बहुत सुन्दर लड़की निकल आयी – सूरज की तरह से चमकती हुई। इतनी सुन्दर कि वह लड़का उससे ज़्यादा सुन्दर लड़की के बारे में सोच ही नहीं सका।

पलक झपकने में ही उसने सारी सफाई कर दी और खाना बना कर तैयार कर दिया। जब उसका काम खत्म हो गया तो वह फिर से आग के पास गयी अपनी खाल ओढ़ी और फिर से टर्र टर्र करने लगी।

जब उस लड़के ने यह देखा तो वह तो बड़े आश्चर्य में पड़ गया। वह तो बहुत खुश हो गया और भगवान को धन्यवाद दिया कि उसने उसको इतनी खुशी दी। वह छत से नीचे उतर आया घर के अन्दर गया मेंढकी को बड़े प्यार से सहलाया और फिर अपना खाना खाने बैठ गया।

अगले दिन वह फिर से उसी जगह छिप कर बैठ गया जहॉ वह पिछले दिन छिप कर बैठा था। मेंढकी ने फिर इधर देखा उधर देखा और जब उसने देखा कि वहॉ कोई नहीं है तो उसने अपनी खाल उतारी और अपना काम करना शुरू कर दिया।

इस बार वह लड़का उसी समय चुपचाप घर में घुसा और अपनी मेंढकी पत्नी की खाल उठायी और उसको आग में फेंक दी। जब उस लड़की ने यह देखा तो उसने उसको बहुत बुरा भला कहा और फिर रो पड़ी और कहा — "तुम इस खाल को मत जलाओ नहीं तो तुम यकीनन ही बहुत परेशान हो जाओगे।"

पर वह खाल तो उस लड़के के आग में डालते ही जल गयी। लड़की ने दुखी हो कर कहा — "अब तुम्हारी खुशी दुख में बदल जाये तो इसके लिये मुझे जिम्मेदार मत ठहराना।।"

बहुत जल्दी ही सारे गॉव वालों को पता चल गया कि वह लड़का जिसके पास मेंढकी थी उसके पास अब उसकी जगह एक बहुत सुन्दर लड़की आ गयी है जो उसके पास स्वर्ग से आयी है।

उस देश के राजा ने जब यह सुना तो उसने चाहा कि उस लड़की को उससे वह ले ले। उसने उस लड़के को अपने पास बुलाया और कहा — "या तो तुम मेरे लिये एक भंडार भर कर गेंहू का खेत एक ही दिन में खोदो और उसमें बीज बोओ या फिर अपनी पत्नी मुझे दे दो।"

जब राजा ने उससे यह कहा तो उसको उसकी बात पर राजी होना पड़ा। वह दुखी हो कर घर चला गया।

घर जा कर उसने यह सब अपनी पत्नी से कहा। उसने उसको फिर बुरा भला कहा और बोली — "मैंने तुमसे पहले ही कहा था कि अगर तुमने मेरी खाल जला दी तो क्या होने वाला है पर तुमने मेरी बात पर ध्यान ही नहीं दिया।

पर इस बात के लिये मैं तुमको गलत नहीं ठहराऊँगी। तुम दुखी मत हो। तुम सुबह उसी झील के किनारे जाना जहाँ से तुमने मुझे उठाया था और वहाँ जा कर कहना — "ओ माता और पिता, मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि मुझे आप अपने सबसे ज़्यादा तेज़ काम करने वाले बैल दे दें।"

तो वे तुमको बैल दे देंगे। तुम उन बैलों को ले कर आ जाना वे बैल तुम्हें एक दिन में ही एक भंडार भर कर गेंहू का खेत खोद कर और उसमें बीज बो कर दे देंगे।"

उसके पति ने ऐसा ही किया। वह उसी झील के किनारे गया और वहाँ जा कर पुकारा — "ओ माता और पिता, मैं आपसे

प्रार्थना करता हूँ कि मुझे आप अपने सबसे तेज़ काम करने वाले बैल दे दें।"

अब उस झील में से तो बैलों का एक इतना बड़ा झुंड निकल कर आया कि जैसा कि समुद्र या धरती कहीं पर कभी देखा नहीं गया था। वह लड़का उन बैलों को हाँक कर राजा के खेतों मे ले गया। उन्होंने राजा के खेतों में एक ही दिन में हल चला दिया और उनमें बीज बो दिया।

राजा तो यह देख कर बहुत आश्चर्यचकित हुआ। वह नहीं जानता था कि जिस आदमी की पत्नी वह लेना चाहता था उस आदमी के लिये कोई भी काम नामुमकिन नहीं था।

फिर भी उसने उसको दोबारा बुलाया और कहा — "जाओ उस खेत से सारा गेंहू इकट्ठा कर लाओ जो तुमने बोया था। गेंहू का एक दाना भी खेत में नहीं रहना चाहिये और मेरा भंडारघर पूरा भर जाना चाहिये। अगर तुमने ऐसा नहीं किया तो तुम्हारी पत्नी मेरी हो जायेगी।"

लड़के ने सोचा "यह काम तो बिल्कुल नामुमकिन सा लगता है।" पर फिर भी वह अपने घर की तरफ चल दिया। और जब आ कर उसने अपनी पत्नी को सब बताया तो उसकी पत्नी ने उसको फिर डाँटा।

पर फिर बोली — "जाओ अब तुम उसी झील के किनारे फिर जाओ और वहॉ जा कर उनसे जैकडौ चिड़िया[19] मॉगना।"

वह लड़का फिर उसी झील के किनारे गया और बोला — "ओ माता और पिता मैं आपसे प्रार्थना करता हूॅ कि मुझे अबकी बार आप जैकडौ चिड़िया दीजिये।"

तुरन्त ही झील में से बहुत सारी जैकडौ चिड़ियें आ गयीं। वे तुरन्त ही जोते हुए खेत की तरफ उड़ गयीं और उन्होंने वहॉ से गेहूॅ के सब दाने बीन कर राजा के भंडारघर में भर दिये।

राजा आया और चिल्लाया — "इसमें एक दाना कम है। मुझे हर दाने का पता है। इसमें एक दाना कम है।"

उसी समय एक जैकडौ की कॉव कॉव सुनायी दी और वह अपनी चोंच में गेंहूॅ का एक दाना दबाये वहॉ आ गया। असल में वह लंगड़ा था सो उसको आने में कुछ देर हो गयी।

यह देख कर तो राजा बहुत गुस्सा हो गया कि इतना नामुमकिन काम भी इसके लिये मुमकिन हो गया। इसके बाद उसकी समझ में ही नहीं आया कि अब वह उसको क्या काम दे जो वह न कर सके और उसकी पत्नी उसकी हो जाये।

उसने अपने दिमाग पर काफी ज़ोर डाला और फिर यह प्लान सोचा। उसने उस लड़के को बुलाया ओर उससे कहा — "मेरी मॉ यहीं इसी गॉव में मरी थी। वह अपने साथ एक ॲगूठी ले गयी

[19] Jackdow is a crow-like bird – native of Europe and Northern Africa.

थी। तुम दूसरी दुनियाँ में जा कर उससे वह अँगूठी ले आओ। अगर ले आते हो तो ठीक है नहीं तो तुम्हारी पत्नी मेरी हो जायेगी।"

लड़के ने अपने मन में सोचा "यह तो बिल्कुल ही नाममुमकिन काम है। भला दूसरी दुनियाँ मे कोई कैसे जा सकता है।"

ऐसा सोचते सोचते वह घर गया और जा कर अपनी पत्नी को बताया तो उसने लड़के को फिर डाँटा और बोली — "अबकी बार तुम झील जाओ तो उनसे एक बकरा माँगना।"

सो वह लड़का फिर झील के पास गया और बोला — "ओ माता और पिता मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि मुझे आप अबकी बार बकरा दे दें।"

तुरन्त ही झील में से टेढ़े सींगों वाला एक बकरा निकल आया जिसके मुँह से आग की लपटें निकल रही थीं। वह लड़के से बोला — "आओ तुम मेरी पीठ पर बैठ जाओ।"

बह लड़का उसकी पीठ पर बैठ गया। उसके बैठते ही बकरा बिजली की सी तेज़ी से नरक की तरफ चल दिया। वह चला और तीर की तरह धरती में घुस गया।

वे चलते रहे चलते रहे। चलते चलते उनको एक आदमी और एक स्त्री एक बैल की खाल पर बैठे हुए मिले। वह बैल की खाल उन दोनों के बैठने के लिये काफी नहीं थी। वे उस पर से गिरे जा रहे थे।

लड़के ने उनसे पूछा — "इसका क्या मतलब कि एक बैल की खाल भी दो लोगों के बैठने के लिये काफी नहीं है।"

उन्होंने कहा — हमने तुम्हारे जैसे कई लोग यहाँ से जाते देखे हैं पर कोई वापस लौटता नहीं देखा। जब तुम इधर से लौटोगे तब हम तुम्हारे सवाल का जवाब देंगे।"

लड़का फिर आगे की तरफ बढ़ता चला गया। आगे चल कर उसने एक स्त्री और एक आदमी को एक कुल्हाड़ी के हत्थे पर बैठे देखा। इतने छोटे से हत्थे पर वे दो आदमी बैठे थे फिर भी वे गिरने से नहीं डर रहे थे।

लड़के ने उनसे पूछा — "आप लोग एक कुल्हाड़ी के इतने छोटे से हत्थे पर बैठे हैं और फिर भी आप गिरने से डर नहीं रहे।"

उन्होंने कहा — "हमने तुम्हारे जैसे कई लोग यहाँ से जाते देखे हैं पर कोई वापस लौटता नहीं देखा। जब तुम इधर से लौटोगे तब हम तुम्हारे सवाल का जवाब देंगे।"

सो वे फिर आगे चल दिये। आगे चल कर वे एक ऐसी जगह आये जहाँ एक पादरी जानवरों को घास खिला रहा था। इस पादरी की इतनी लम्बी दाढ़ी थी कि वह जमीन पर फैली पड़ी थी। और वे जानवर बजाय घास खाने के उसकी दाढ़ी खा रहे थे। वह पादरी भी उनको अपनी दाढ़ी खाने से रोक नहीं पा रहा था।

लड़के ने चिल्ला कर पूछा — "पादरी जी इसका क्या मतलब है कि आपकी दाढ़ी इन जानवरों का घास का मैदान है।"

पादरी जी ने कहा — "मैंने तुम्हारे जैसे कई लोग यहाँ से जाते देखे हैं पर कोई वापस लौटता नहीं देखा। जब तुम इधर से लौटोगे तब मैं तुम्हारे सवाल का जवाब दूँगा।"

सो वे और आगे चले तो उन्होंने वहाँ कुछ नहीं देखा सिवाय एक बहुत गरम गड्ढे के जिसमें से आग की लपटें निकल रही थीं। यह नरक था।

बकरा बोला — "अब आप मेरे ऊपर मजबूती से बैठ जाइये क्योंकि अब हमें इस आग को पार करना है।"

लड़के ने उसको कस कर पकड़ लिया और बकरे ने एक बहुत ज़ोर की कूद लगायी और वे आग के ऊपर से बिना किसी परेशानी के कूद गये।

उसके बाद उन्होंने एक बहुत ही दुखी स्त्री को एक सोने के सिंहासन पर बैठे देखा। उसने कहा — "क्या बात है मेरे बच्चे। तुम्हें क्या दुख है? तुम यहाँ क्यों आये हो?"

लड़के ने उसको सब कुछ बता दिया तो वह बोली — "मुझे अपने इस नीच बच्चे को सजा जरूर देनी चाहिये। मैं तुमको उसके लिये एक बक्सा दूँगी। वह तुम यहाँ से उसके लिये जरूर ले जाना।"

कह कर उसने लड़के को एक बक्सा दिया और कहा — "तुम चाहे जो कुछ भी करो पर तुम इस बक्से को अपने आप मत

खोलना। तुम इसको अपने राजा को देना और इसको उसे दे कर उसके पास से तुरन्त ही दूर हट जाना।"

लड़के ने उस स्त्री से बह बक्सा लिया और वापस लौट पड़ा। वह उस जगह आया जहाँ पादरी जानवरों को घास खिला रहा था। उसको देखते ही पादरी बोला — "मैंने तुमसे वायदा किया था कि जब तुम लौटोगे मैं तुम्हें तब तुम्हारे सवाल का जवाब दूँगा। सो अब मैं तुम्हारे सवाल का जवाब देता हूँ।

अपनी सारी ज़िन्दगी में मैं केवल अपने आपको ही प्यार करता रहा और मैंने किसी की कोई परवाह नहीं की। मैंने अपने जानवरों को बजाय अपने मैदानों के दूसरे के मैदानों में चराया। इससे मेरे पड़ोसियों के जानवर भूख से मर गये। अब मैं उसी की सजा भोग रहा हूँ।"

चलते चलते वे उस जगह आये जहाँ एक आदमी और एक स्त्री एक कुल्हाड़ी के हत्थे पर बैठे हुए थे। वे भी बोले — "हमने तुमको तुम्हारे लौटने पर जवाब देने का वायदा किया था। सो अब तुम हमारी बात सुनो। जब हम धरती पर थे तब हम एक दूसरे को बहुत प्यार करते थे और वही बात यहाँ भी है। इसी लिये हमें गिरने का कोई डर नहीं है।"

वह लड़का यह जवाब पा कर फिर अपने रास्ते चल दिया। चलते चलते फिर वह वहाँ आया जहाँ एक स्त्री और एक आदमी एक बैल की खाल पर बैठे हुए थे।

वे भी बोले — "हमने तुमको तुम्हारे लौटने पर जवाब देने का वायदा किया था सो सुनो। हम एक दूसरे को ज़िन्दगी भर बुरा भला कहते रहे और हम यहाँ भी एक दूसरे को बुरा भला कह रहे हैं इसलिये इस बैल की खाल के इतने बड़े होते हुए भी हम गिरे गिरे से लगते हैं।"

इसके बाद लड़का धरती पर आ गया। वह बकरे पर से उतरा और राजा के पास गया। उसने उसको बक्सा दिया और तुरन्त ही उससे दूर चला गया। राजा ने वह बक्सा खोला तो उसमें से तो एक बहुत बड़ी सी आग निकली जो उसे खा गयी।

इस तरह से हमारे सबसे छोटे भाई ने राजा को भी जीत लिया और फिर किसी ने उसकी पत्नी को उससे नहीं माँगा। वे दोनों प्यार से और खुशी खुशी बहुत दिनों तक रहे।

5 किस्मत[20]

एक बार की बात है कि एक बहुत ही ताकतवर राजा था जिसके केवल एक ही बेटा था। जब यह लड़का बड़ा हो गया तो सारी लड़कियाँ इससे प्यार करने लगीं।

राजा की भी यह बड़ी इच्छा थी कि उसका बेटा जल्दी ही अपनी ज़िन्दगी में जम जाये। सो उसने उसके लिये एक राजकुमारी ढूँढ ली और उससे कहा कि वह उससे शादी कर ले।

पर बेटा नहीं माना और बोला — "यह मेरी किस्मत में नहीं है कि मैं इस लड़की से शादी करूँ। मैं इससे शादी नहीं करूँगा।"

कुछ समय बाद वह नौजवान अपने पिता के पास गया और बोला — "मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे बाहर जाने दें और मुझे अपनी किस्मत आजमाने दें। इसके लिये आप मुझे तीन थैले भर कर पैसे दे दें।"

राजा ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और उसे बाहर जाने की इजाज़त दे दी। राजकुमार ने भी अपना सामान तैयार किया और अपने सफर पर जाने के लिये तैयार हो गया।

वह चलता रहा कि चलते चलते वह एक अजनबी से मिला। यह अजनबी एक देवदूत[21] था जो एक आदमी के रूप में था।

---

[20] Fate (Tale No 5)

[21] Translated for the word "Angel"

उसने राजकुमार से पूछा — “तुम कहाँ जा रहे हो तुम्हें किसकी तलाश है।”

राजकुमार ने उसे सब बताया और कहा कि वह वह सब जानना चाहता था जो उसकी किस्मत की किताब में उसके लिये लिखा था।

इस पर उस अजनबी ने उसको एक बहुत सुन्दर महल दिखाया और कहा तुम वहाँ चले जाओ वहाँ जा कर तुम अपनी किस्मत के बारे में जान पाओगे। राजकुमार ने उसको धन्यवाद दिया और उस महल की तरफ चल पड़ा।

जब वह उस महल के कम्पाउन्ड में घुसा तो उसने चारों तरफ देखा। उसने देखा कि वहाँ तो चारों तरफ कागज के टुकड़े ही टुकड़े बिखरे पड़े हैं।

उसने उनको देखना शुरू किया कि शायद कहीं उसको अपनी किस्मत का कोई कागज मिल जाये पर वह बहुत देर तक वहाँ बेकार ही उसे इधर उधर ढूँढता रहा। उसको वहाँ अपनी किस्मत का कोई कागज मिला ही नहीं।

तभी महल में से एक दूसरा आदमी बाहर निकल कर आया और राजकुमार से पूछा — “भाई तुम क्या चाहते हो। तुम क्या ढूँढ रहे हो।”

राजकुमार बोला — “मैं इन कागजों में एक कागज ढूँढ रहा हूँ जिसमें मेरी किस्मत लिखी हुई हो।”

वह अजनबी बोला — "तुम उसे वहाँ क्यों ढूँढ रहे हो। वहाँ तो गरीब लोगों की किस्मत के कागज पड़े हुए हैं। राजाओं की किस्मत के कागज तो अन्दर हैं। आओ तुम मेरे साथ आओ मैं तुम्हें तुम्हारी किस्मत दिखाता हूँ।"

कह कर वह आदमी राजकुमार को महल के अन्दर ले गया। राजकुमार महल के अन्दर घुसा और उस आदमी ने राजकुमार की किस्मत का कागज ढूँढ कर उसको बुलाया।

उसमें लिखा था "फलाँ फलाँ राजकुमार एक जुलाहे की बेटी से शादी करेगा जो नौ साल से बीमार पड़ी है।"

जब उसने यह राजकुमार के सामने यह ज़ोर से पढ़ा तो राजकुमार तो यह सुन कर डर के मारे काँप गया। उसकी तो सिट्टी पिट्टी गुम हो गयी। अब वह क्या करे।

राजकुमार ने मन ही मन सोचा कि वह अपनी किस्मत को बदलेगा। वह एक ऐसी लड़की से शादी कैसे कर सकता है जो एक जुलाहे की लड़की हो और नौ साल से बीमार पड़ी हो।

उसने अपनी किस्मत का वह कागज लिया और वहाँ से जुलाहे की बेटी को ढूँढने चल दिया।

वह चलता गया चलता गया और एक घने जंगल में जा पहुँचा। वहाँ पहुँचते पहुँचते उसे शाम हो गयी। वह वहाँ रात को सोने की इच्छा से इधर उधर घूम कर कोई घर तलाश करता रहा।

आखिर उसे एक चमकती हुई रोशनी दिखायी दे ही गयी। वह उधर ही की तरफ चल दिया। वहाँ जा कर उसे एक मकान दिखायी दिया। उसने मकान मालिक से रात को ठहरने की जगह माँगी।

मकान मालिक ने कहा — "आप तो कोई बड़े आदमी लगते हैं। हमारे पास आपके लायक तो कुछ भी नहीं है पर हम आपको हमारे पास जो कुछ सबसे अच्छा है वह दे सकते हैं क्योंकि मेहमान तो भगवान की दी हुई भेंट होता है।"

सो राजकुमार वहाँ रात को ठहर गया। उसके मेजबान को किसी तरह की शिकायत नहीं थी।

जब उन्होंने रात का खाना खा लिया तो राजकुमार को लगा कि कोई दूसरा आदमी एक दूसरे कमरे में खाना खा रहा था। उसने अपने मेजबान से कहा — "मुझे उम्मीद है कि आप बुरा नहीं मानेंगे अगर मैं आपसे उत्सुकतावश यह पूछूँ कि दूसरे कमरे में कौन है और इसका क्या मतलब है।"

तब उसके मेजबान ने उसको यह कहानी सुनायी —

"मैं एक जुलाहा हूँ और मेरी रोज की रोटी बड़ी मुश्किल से चलती है। भगवान ने मुझे कोई ऐसा आदमी भी नहीं दिया जो मेरे काम में मेरी सहायता कर सके।

मेरे केवल एक बेटी है जो नौ साल से बिस्तर से नहीं उठी है। मैं आपसे यह यकीन के साथ कह सकता हूँ कि वह मेरी कोई सहायता नहीं करती है।"

जब राजकुमार ने यह सुना तो उसने दुख से दॉतों तले अपनी जीभ काट ली और बहुत उदास हो गया। वह उस रात सो नहीं पाया। वह सारी रात बस यही सोचता रहा कि वह अपनी किस्मत से कैसे बच सकता है।

बीच रात में जब हर एक खर्राटे मार कर गहरी नींद सो रहा था तो राजकुमार चुपके से उठा अपने सोने के कमरे से बाहर निकला और चुपचाप जुलाहे की बेटी के सोने के कमरे में चला गया।

जब उसने उसको देखा तो वह अन्दर से बहुत ही परेशान हो गया। उसने अपना खंजर निकाला और उसके शरीर में घुसेड़ दिया। उसके बाद बिना कोई आवाज किये वह वहॉ से बाहर निकल आया। उसने अपना पैसा वहीं छोड़ दिया और रात में ही वहॉ से भाग लिया।

वहॉ से वह अपने घर अपने पिता के पास आया और उनसे अपनी बुरी किस्मत की शिकायत की। उसका पिता इस बात पर बहुत दुखी हुआ पर उसने अपना दुख उससे छिपा लिया और अपने बेटे को तसल्ली दी।

कुछ समय बीत गया। एक दिन राजकुमार शिकार के लिये जंगल गया तो उसने वहॉ एक अकेली जगह में एक बहुत सुन्दर

महल देखा और उस महल में सूरज जैसी चमकीली एक लड़की देखी।

राजकुमार तो उस लड़की की सुन्दरता को देखता का देखता ही रहा गया। वह तो उसको हमेशा के लिये देखता रह सकता था। वह उसकी तरफ बहुत देर तक देखता रहा पर वह उसको दूर से देखते सन्तुष्ट नहीं हो रहा था।

सो उसने अपना घोड़ा उधर की तरफ दौड़ा दिया। जब वह उस महल के पास आया तो वह उसकी सुन्दरता से और ज़्यादा प्रभावित हो गया। वह अपने घोड़े से उतरा और उससे पूछा कि क्या वह उससे शादी करेगी।

जब उसने खुशी से यह कह दिया कि हॉ वह उससे शादी करने के लिये तैयार है तो वह बहुत खुश हुआ और घर चला गया।

रास्ते में वह यह सोचता हुआ बहुत खुशी खुशी जा रहा था कि उसने अपनी किस्मत बदल ली थी। बजाय इसके कि वह जुलाहे की एक नौ साल से बीमार लड़की से शादी करता उसको तो अब कितनी सुन्दर पत्नी मिल रही थी।

घर जा कर उसने अपने पिता को बताया कि उस दिन जंगल में क्या हुआ था और शादी की तैयारियॉ करने के लिये कहा। राजा को भी अपने बेटे को खुश देख कर बहुत खुशी हुई और उसने एक शानदार शादी के लिये तैयारियॉ शुरू कर दीं।

बड़ी धूमधाम से दोनों की शादी हो गयी। शादी के कुछ दिन बाद राजकुमार ने अपनी पत्नी के दिल पर हाथ रखा तो वहाँ उसको कुछ सख्त सख्त सा लगा।

उसने पूछा — "यह क्या है।"

उसकी पत्नी ने जवाब दिया — "मैं एक गरीब जुलाहे की बेटी हूँ। नौ साल तक मैं बिस्तर में पड़ी रही – लाचार और अपंग, खीरे की तरह से पीली।

एक बार एक नौजवान मेरे पिता के पास रात को शरण माँगने आया। उसने खंजर मेरे शरीर में भौंक दिया और जल्दी से भाग गया और अपने रास्ते चला गया।

मैं बहुत बीमार थी पर मेरी माँ ने मेरी बगल में प्लास्टर लगाया और मैं बिल्कुल ठीक हो गयी। हमारा मेहमान तीन थैले पैसे छोड़ गया था। उससे हमने एक महल खरीद लिया। उसके बाद मेरे पिता ने जुलाहे का काम छोड़ दिया। और हम लोग बिना किसी चिन्ता के रहने लगे।"

जब राजकुमार ने यह सुना तो वह बोला — "हे भगवान तेरे हुक्म बेकार नहीं हो सकते।"

तब उसने अपनी प्रिय पत्नी को वह सब कुछ बता दिया जो उसके साथ घटा था। पत्नी यह सुन कर खूब हँसी।

6 घ्वथियासावरी[22]

एक बार की बात है कि एक राजा था जिसके एक इतनी सुन्दर बेटी थी कि उसको हमेशा ही यह लगता रहता था कि कोई उसको जबरदस्ती उठा कर ले जायेगा और फिर उससे शादी कर लेगा। इसलिये उसने समुद्र में एक बहुत ऊँची मीनार बनवायी और उसमें उसे सबसे ऊपर बन्द कर दिया।

वहाँ रहते रहते कुछ समय बीत गया तो वहाँ रखी हुई एक दासी ने पानी के ऊपर कुछ तैरते देखा। उसको बड़ा आश्चर्य हुआ जब उसने देखा कि वह तो एक बहुत बड़ा सेब था।

उसने अपने पोशाक फैलायी और समुद्र की लहरें उसके पोशाक में आने लगीं। उनके साथ साथ आ गया उसकी स्कर्ट में सेब भी। उसने उसको हाथ में पकड़ा और उसको ले कर अपनी मालकिन की तरफ भागी। उस सुन्दर लड़की ने कभी भी अपनी ज़िन्दगी में इतना बड़ा सेब नहीं देखा था।

खाना खाने के बाद उसने उस सेब को छीला। सेब तो उसने खुद खा लिया और छिलका अपनी दासी को दे दिया। दासी ने भी उन छिलकों को जल्दी ही खा लिया। कुछ समय बाद ही उन दोनों को बच्चे की आशा हो गयी।

---

[22] Ghvthiasavari (Tale No 6)

राजा को भी यह खबर सुनायी गयी तो उसने तो यह खबर सुन कर दोनों हाथों से अपना सिर पीट लिया। वह अपना गुस्सा दबा न सका। उसने अपने एक शिकारी को बुला कर कहा — "तुम समुद्र में जो मीनार खड़ी है वहाँ जाओ वहाँ से मेरी बेटी और उसकी दासी को लो उनको मेरे राज्य की सबसे ज़्यादा अकेली जगह पर ले जाओ और दोनों को वहाँ ले जा कर मार दो।

यह बताने के लिये कि तुमने उन दोनों को मार दिया है तुम उन दोनों का दिल और जिगर मुझे दिखाने के लिये ले कर आओगे। यह कहानी मेरे और तुम्हारे सिवाय किसी को पता नहीं चलनी चाहिये। अगर पड़ी तो तुमको अपनी जान से हाथ धोना पड़ेगा।"

हुक्म सुन कर शिकारी उस मीनार की तरफ चल दिया। वहाँ पहुँच कर उसने राजा का हुक्म जा कर दोनों को सुनाया तो उनमें से सुन्दर राजकुमारी बोली — "हमको मार कर तुमको क्या मिलेगा। ऐसा करो कि तुम हमें किसी अकेली जगह को ले चलो और वहाँ छोड़ दो किसी को यह भी पता नहीं चलेगा कि हम कहाँ गये। हम ज़िन्दा हैं या मर गये।"

पर उस शिकारी पर उनकी इस प्रार्थना का कोई असर नहीं पड़ा। वह उनके एक अकेली जगह ले गया अपना खंजर निकाल कर उनको मारने ही वाला था कि बस आखिरी पल पर उसको उन दोनों पर दया आ गयी। उसने उनको मारने का इरादा छोड़ दिया।

उसने दो बड़े खरगोश पकड़े उन दोनों के दिल और जिगर निकाले और उनको राजा के पास ले कर चला गया।

राजा ने उसका विश्वास कर लिया कि वे दिल और जिगर उसकी बेटी और उसकी दासी के ही हैं। इसके लिये उसने शिकारी को बहुत सारा इनाम दिया और उसको वापस भेज दिया।

अब राजकुमारी और उसकी दासी उस जंगल में अकेली खड़ी रह गयीं। वहॉ उनके पास न कुछ खाने के लिये था और न पीने के लिये।

कुछ समय बाद राजकुमारी ने एक सुन्दर बेटे घ्वथियासावरी को जन्म दिया और उसकी दासी ने आठ छोटे छोटे कुत्तों को। राजकुमारी का बेटा एक दिन में इतना बढ़ता था जितना कि दूसरे बच्चे एक साल में बढ़ते हैं।

धीरे धीरे वह इतना सुन्दर बहादुर और मजबूत हो गया कि सब उसे बहुत प्यार करते थे। जब घ्वथियासावरी शिकार के लिये जाता था तब वह अपने कुत्तों को साथ ले कर जाता था और अपनी मॉ और उसकी दासी दोनों के लिये शिकार ले कर आता था।

एक बार वह एक शहर की तरफ गया तो वहॉ एक लोहार के पास गया और उससे अपने लिये तीर कमान बनाने के लिय कहा। लोहार ने उसके नौ लित्रा[23] वजन के लोहे की कमान और तीर बना कर दिये।

[23] Litra – a measurement for weighing. 1 Litra = 9 pounds. 9 Litra = 81 pounds

घ्वथियासावरी ने तो उसको हाथ में लेते ही मोड़ दिया सो उसने उसमें कुछ और लोहा जोड़ा और उसके लिये फिर एक दूसरा कमान बनाया। घ्वथियासावरी ने तीर और कमान अपने कन्धे पर लटकाये, कुत्ते अपने साथ लिये और अपने घर चल दिया।

रास्ते में उसने कुछ शिकार किया और अपनी माँ के लिये खाना ले कर घर चला गया।

अगले दिन वह फिर से शिकार करने निकला। उसने एक तीर मारा तो एक बकरा मारा। उसने दूसरा तीर मारा तो एक हिरन मारा। जब उसने अपना तीसरा तीर मारा तो वह एक देवी[24] के घर में जा कर अटक गया।

इस घर में पाँच भाई रहते थे जो सब देवी थे – एक दो सिर वाला, एक तीन सिर वाला, एक पाँच सिर वाला, एक नौ सिर वाला और एक दस सिर वाला। साथ में उनकी माँ रहती थी उसका केवल एक ही सिर था।

उन लोगों ने देखा कि अचानक एक तीर आ कर गिर गया है। तो वे सब उठे और उस तीर को निकालने की कोशिश करने लगे पर निकाल नहीं सके। उनकी माँ ने भी उनके साथ मिल कर तीर निकालने की कोशिश की पर वह भी कोई फायदा नहीं।

[24] Devi is a species of Demon. Its plural is Devis.

तब सारे भाई उठ गये उन्होंने अपनी माँ से कहा कि वह उस पर नजर रखे वे बाहर जा कर यह देख कर आते हैं कि यह तीर किसने मारा है।

उधर घ्वथियासावरी अपना तीर चलाने के बाद उसको ढूँढने निकला कि वह कहाँ गिरा था। वह चलता गया चलता गया जब तक वह देवियों के घर तक नहीं आ पहुँचा।

उसने उस घर में अन्दर झाँक कर देखा तो देखा कि मकान में बीच में आग जल रही है और उस आग में उसका तीर अटका पड़ा है। वह अन्दर चला गया और अपने तीर को वहाँ से निकालने ही वाला था कि तभी देवियों की माँ चिल्ला पड़ी।

"तू कौन है जिसने यहाँ आने की हिम्मत की है। क्या तुझे इस बात का डर नहीं है कि मैं तुझे खा जाऊँगी।"

घ्वथियासावरी ने आग में से अपना तीर निकालते हुए और उसे देवियों की माँ की तरफ चलाते हुए बोला — "नहीं तू मुझे नहीं खायेगी।"

उसने उस तीर से उसके हजारों टुकड़े कर दिये और उनको अपने कुत्तों को दे कर कहा कि वे उन सबको समुद्र में डाल दें। फिर वह वहीं लेट गया और आराम करने लगा।

देवी उसकी खोज में पास और दूर घूमते रहे पर जो वे ढूँढ रहे थे उसका नामोनिशान तक उनको कहीं नहीं मिला।

तब उन्होंने कहा — "जब हम अपने घर से बाहर हों और तब कोई हमारे घर में घुस गया हो। कम से कम हम में से एक को घर जाना चाहिये और बाकी बचे हुए यहाँ उसे और ढूँढते हैं।"

अब हर एक घर जाना चाहता था और वायदा कर रहा था कि वह घर को देख कर तुरन्त ही वहाँ वापस आ जायेगा। पर देवियों ने अपने दो सिर वाले भाई को इस काम के लिये भेजा।

दो सिर वाला भाई वहाँ आया तो देखा कि उसकी माँ तो वहाँ नहीं थी बल्कि उसकी जगह एक अजनबी नौजवान वहाँ था। उसने नौजवान को उसके कन्धे पर थपथपाया और बोला — "तू कौन है जिसने यहाँ आने की हिम्मत की।

क्या तुझे मालूम नहीं कि मेरे डर से यहाँ चिड़ियें आसमान में भी नहीं उड़तीं और चींटियाँ भी जमीन पर नहीं रेंगतीं। क्या तुझे इस बात का भी डर नहीं कि मैं तुझे खा जाऊँगा।"

घ्वथियासावरी ने अपना तीर निकाल कर उसकी तरफ छोड़ते हुए कहा — "तू मुझे नहीं खायेगा।" यह कह कर उसने अपना तीर उसको मार दिया जिससे उसके सैंकड़ों टुकड़े हो गये जिनको उसने अपने कुत्तों को दे दिया कि वे उनको समुद्र में फेंक दें।

वहाँ चार बचे हुए देवी अपने दो सिर वाले भाई का इन्तजार कर रहे थे पर वह तो अभी तक आया नहीं था। उन्होंने सोचा कि शायद घर जा कर उसने उस तीर चलाने वाले को पकड़ लिया हो

और वह उसको खाने में लगा हुआ हो। इसलिये उन्होंने अपने तीन सिर वाले भाई का घर भेजा।

अब तीन सिर वाला भाई अपने घर आया तो उसको न तो अपनी माँ वहाँ दिखायी दी और न ही अपना दो सिर वाला भाई ही दिखायी दिया। उसको भी वहाँ पर बस एक नौजवान दिखायी दिया।

वह बोला — "मेरे डर से यहाँ चिड़ियाँ भी पर नहीं मारतीं और न ही चींटियाँ जमीन पर रेंगती हैं तो तू कौन है जो यहाँ आने की हिम्मत कर पाया। क्या तुझे इस बात डर नहीं कि मैं तुझे खा जाऊँगा।"

घ्वथियासावरी फिर बोला — "नहीं तू मुझे नहीं खायेगा।" कह कर उसने एक तीर चलाया जिससे उसके सैकड़ों टुकड़े हो गये। वे टुकड़े उसने अपने कुत्तों को दे दिये कि वे उनको समुद्र में फेंक दें।

अब तीन भाई जा बाहर अपने तीन सिर वाले भाई का इन्तजार कर रहे थे तो उसके न आने पर उन्होंने अपने पाँच सिर वाले भाई को घर भेजा।

उसने भी वहाँ जा कर अपनी डींग हाँकी पर घ्वथियासावरी ने उसको भी उसी तरह से मार दिया जैसे उसने पहले दो भाइयों को मारा था। उसके बाद वहाँ नौ सिर वाला देवी आया तो घ्वथियासावरी ने उसका भी वही हाल किया।

अब केवल दस सिर वाला देवी ही बच गया था। उसने सोचा "मेरे सारे भाई उस आदमी का माँस खा रहे होंगे और मेरे लिये वे कुछ भी नहीं छोड़ेंगे। मुझे भी वहीं चलना चाहिये।" सो वह भी वहाँ से उठा और अपने घर की तरफ चल दिया।

घर पहुँच कर उसने देखा कि घर में न तो उसकी माँ है और न उसके चारों भाई बल्कि एक अजनबी नौजवान वहाँ लेट कर आराम कर रहा है।

वह देवी भी चिल्लाया — "मेरे डर से यहाँ चिड़ियाँ भी पर नहीं मारतीं और न ही चींटियाँ जमीन पर रेंगती हैं तो तू कौन है जो यहाँ आने की हिम्मत कर पाया। क्या तुझे इस बात डर नहीं कि मैं तुझे खा जाऊँगा।"

घ्वथियासावरी फिर बोला — "नहीं तू मुझे नहीं खायेगा।" कह कर उसने एक तीर चलाया जिससे उसके भी सैकड़ों टुकड़े हो गये। फिर उसने अपनी तलवार से उसके सब सिर काट लिये। वे टुकड़े उसने अपने कुत्तों को दे दिये कि वे उनको समुद्र में फेंक दें।

अब घ्वथियासावरी वहाँ का अकेला मालिक था। उसने सोचा कि अब मैं घर जाऊँगा और अपनी माँ और उसकी साथिन को यहाँ ले कर आऊँगा और फिर मैं जैसे चाहूँगा वैसे रहूँगा। सो वह घर गया और अपनी माँ और उसकी दासी को वहाँ ले आया। उनको वहाँ ठीक से ठहरा कर वह फिर से शिकार में लग गया।

उधर समुद्र में से दस सिर वाला देवी निकला और एक पेड़ के नीचे छिप गया। असल में घ्वथियासावरी ने जल्दी में उसका एक सिर छोड़ दिया था और उसी सिर में देवी की ज़िन्दगी थी सो उसकी वजह से दस सिर वाला देवी अभी तक मरा नहीं था। वह समुद्र में से बहुत गुस्से में भर कर बाहर निकला।

अगले दिन घ्वथियासावरी फिर से शिकार के लिये निकला। बेटे के जाने के बाद उसकी माँ चारों तरफ देखने के लिये बाहर बागीचे में निकली। जब वह बागीचे में इधर उधर घूम रही थी तो देवी एक पेड़ के नीचे प्रगट हुआ और बोला —

"मेहरबानी कर के मुझे छोड़िये नहीं। आप अपने बेटे से मत कहना कि मैं यहाँ छिपा हुआ हूँ।"

घ्वथियासावरी की माँ ने उससे वायदा किया कि वह उसके वहाँ छिपे रहने की बात अपने बेटे से नहीं कहेगी। बल्कि जब उसका बेटा शिकार पर चला जाता था तो वह उसके पीछे देवी के लिये खाना पानी ले कर जाती थी। आखिर वह उसको चाहने लगी।

एक बार देवी ने उससे कहा — "हम इस तरह से क्यों रहें? हम रोज रोज आपस में छिप कर मिलते हैं। मुझे तेरे बेटे से बहुत डर लगता है। तू घर जा और जा कर बिस्तर में लेट जा और बीमार होने का बहाना बना।

जब वह घर आयेगा तो वह तुझसे पूछेगा कि क्या बात है तो तू उससे कहना कि फलाँ फलाँ जगह से मुझे अपनी बीमारी के

इलाज के लिये हिरन के सींग चाहिये। जब तेरा बेटा हिरन के सींग लेने जायेगा तो हिरन उसको अपने सींग मार कर मार देगा। उसके बाद हम दोनों फिर सुख से यहाँ रहेंगे।"

घ्वथियासावरी की माँ इस प्लान पर राजी हो गयी। वह जा कर अपने बिस्तर पर बीमार सी लेट गयी। घ्वथियासावरी शाम को जब घर वापस आया और अपनी माँ को इस तरह से बिस्तर पर बीमार पड़े देखा तो उसने पूछा —

"माँ कैसी हो? क्या बात है? मुझे बताओ कि मैं तुम्हारे इलाज के लिये क्या करूँ। अगर वह किसी चिड़िया का दूध भी होगा तो भी मैं उसे ढूँढ कर लाऊँगा।"

माँ बोली — "बेटा अगर तु मुझे फलाँ फलाँ हिरन के सींग के टुकड़े ला सकता है तभी मैं बच सकती हूँ नहीं तो मैं मर जाऊँगी।"

"माँ मैं उन्हें अभी ले कर आया।" कह कर उसने अपने तीर कमान अपने कन्धे पर डाले अपने कुत्तों को साथ लिया और वह हिरन ढूँढने चल दिया।

जब वह कुछ दूर चला गया तब उसको वह हिरन घास खाता मिल गया। उसको देख कर उसके दिमाग में एक प्लान आया। उसके सींग तो इतने लम्बे थे कि वे आसमान तक पहुँच रहे थे।

उसने अपना तीर निकाला और एक बहुत चौड़े मैदान में आ गया। जैसे ही वह उस तीर को छोड़ने वाला था कि हिरन ने एक इशारा किया और बोला — "घ्वथियासावरी घ्वथियासावरी। तुम

मुझे क्यों मारते हो। मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो तुम मुझे इस तरह मार रहे हो।

क्या तुम्हें पता नहीं कि तुम्हारी माँ खुद तुम्हें मारना चाहती है इसी लिये उसने तुम्हें यहाँ भेजा है। लो यह मेरे सींग का एक टुकड़ा है और यह मेरा एक बाल है इन्हें ले जाओ। जब भी तुम किसी मुसीबत में फँस जाओ तब तुम मेरे बारे में सोचना मैं तुरन्त ही तुम्हारे सामने हाजिर हो जाऊँगा।"

घ्वथीसावरी ने उसको बहुत बहुत धन्यवाद दिया और वहाँ से चला गया। वह हिरन के सींग का टुकड़ा ले कर अपनी माँ के पास पहुँचा। माँ ने उससे सींग का टुकड़ा ले लिया और उसे धन्यवाद दिया।

अगले दिन घ्वथियासावरी फिर अपने शिकार के लिये निकला। जैसे ही वह घर से बाहर गया तो उसकी माँ देवी के पास गयी और उससे बोली — "घ्वथियासावरी तो ज़िन्दा वापस लौट आया है और उस हिरन के सींग का टुकड़ा भी ले आया है। अब मैं क्या करूँ।"

देवी बोला — "कोई बात नहीं। तू फिर से बीमार होने का बहाना कर। अबकी बार उससे कहना कि वह तुझे एक जंगली सूअर का बाल ला कर देगा। उसके अलावा तेरा कोई और दूसरा इलाज नहीं है।"

यह सुन कर वह स्त्री फिर अन्दर गयी और जा कर अपने बिस्तर पर बीमार सी लेट गयी और कराहने लगी। शाम को जब

घ्वथियासावरी शिकार से घर वापस आया तो माँ को फिर से बीमार देखा तो पूछा —

“अरे माँ यह क्या। तुम अभी तक ठीक नहीं हुईं। मैं तुम्हारे लिये क्या करूँ कि तुम जल्दी से ठीक हो जाओ। मुझे बताओ कि वह क्या चीज़ है जिससे तुमको आराम मिले। अगर वह किसी चिड़िया का दूध भी हुआ तो भी मैं उसे तुम्हें ला कर दूँगा। मैं उसको ढूँढने में अपनी कोई कोशिश नहीं छोड़ूँगा।”

माँ बोली — “अगर तुझे फलाँ फलाँ जगह एक जंगली सूअर मिल जाये तो तू मेरे लिये उसका एक बाल ला दे तब सब ठीक हो जायेगा पर अगर नहीं मिला तो मैं मर जाऊँगी।”

बेटा बोला — “भगवान करे तेरा बेटा घ्वथियासावरी मर जाये अगर वह यह ले कर न आये।”

घ्वथियासावरी ने एक बार फिर से अपना तीर कमान अपने कन्धे पर लटकाया और जंगली सूअर की जगह की तरफ चल दिया। वह काफी दूर चला और एक जंगल में आ निकला। वहाँ उसको सूअर के रहने की जगह तो मिल गयी पर वहाँ उसे कोई सूअर दिखायी नहीं दिया।

वह कुछ दूर और चला तो उसको सूअर के रहने की एक और जगह भी दिखायी दे गयी। पर वहाँ भी कोई सूअर नहीं था। वह कुछ दूर और आगे चला तो उसको एक सूअर दिखायी दे गया।

उसने अपने ठहरने की जगह दो बार बदल ली थीं और अब वह तीसरी जगह था।

घ्वथीसावरी उसकी तरफ बढ़ा अपने तीर का निशाना साधा पर जैसे ही वह उसको छोड़ने वाला था कि वह सूअर चिल्ला पड़ा — "घ्वथियासावरी घ्वथियासावरी। मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है। तुम मुझे क्यों मारना चाहते हो। क्या तुम्हें मालूम नहीं कि तुम्हारी माँ ने तुम्हें धोखा दिया है। वह तुम्हारी मौत चाहती है इसी लिये उसने तुम्हें यहाँ भेजा हुआ है।

क्येंकि तुम केवल मेरे शरीर का एक बाल ही तो लेना चाहते हो तो ये लो तुम चाहे जितने बाल निकाल लो।"

घ्वथीसावरी आगे बढ़ा और उसने उसका एक बाल निकाल लिया और उसको धन्यवाद कह कर जाने लगा तो देवी ने कहा — "लो जाते जाते यह एक बाल और लेते जाओ। जब भी तुम किसी मुसीबत में फँस जाओ तो मुझे याद कर लेना तो मैं तुम्हारी सहायता के लिये तुरन्त ही पहुँच जाऊँगा।"

घ्वथीसावरी ने उसे फिर से धन्यवाद दिया और उसका बाल ले कर वहाँ से चल दिया। वह घर आया और माँ को उसका बाल ला कर दिया और फिर से शिकार करने चल दिया।

उसके तुरन्त ही शिकार पर जाने के बाद उसकी माँ सीधी देवी के पास गयी और उससे शिकायत के ढंग में बोली —

"घ्वथियासावरी तो फिर से ज़िन्दा वापस आ गया है और मेरे लिये जंगली सूअर का एक बाल भी ले आया है। अब मैं क्या करूँ।"

देवी बोला — "तू एक बार फिर से बीमार पड़ और घ्वथियासावरी को एक बार फिर से तू जंगल भेज और कह कि वह फलाँ फलाँ जगह जा और वहाँ से फलाँ फलाँ चिड़िया के बच्चे का माँस ले कर आये।

अगर वह ले आयेगा तो तू ठीक हो जायेगी वरना तू नहीं बचेगी। और तुझे मालूम है कि वह यह काम नहीं कर सकता फिर बस हम दोनों एक साथ आराम से रहेंगे।"

घ्वथीसावरी की माँ यह सुन कर बहुत खुश हुई वह वापस घर गयी जा कर बिस्तर पर बीमार बन कर लेट कर कराहने लगी। शाम को जब घ्वथीसावरी अपने शिकार से वापस आया तो उसने माँ को फिर से बिस्तर पर पड़े देखा तो फिर पूछा — "माँ क्या बात है। अब क्या हुआ।"

माँ ने उससे वही कह दिया जो देवी ने उससे कहने के लिये कहा था। घ्वथियासावरी बोला — "अगर तुम्हारी बतायी चीज़ यह घ्वथियासावरी न ला पाये तो मर जाये।" कह कर वह चला गया।

चलता गया चलता गया। आखिर वह एक मैदान में निकल आया जहाँ एक बहुत बड़ा पेड़ खड़ा हुआ था। उसकी ऊपर की शाखें आसमान तक पहुँच रही थीं।

उसकी एक शाख पर उसने एक घोंसला देखा जिसमें से उस चिड़िया के बच्चे झॉक रहे थे। तभी उसने देखा कि एक बहुत बड़ी गरुड़ जैसी चिड़िया उस घोंसले की तरफ उड़ी चली आ रही है।

उसने नीचे की तरफ कूद लगायी और वह उन बच्चों को उठाने ही वाली थी कि घ्वथियासावरी ने अपनी कमान खींची और उस पर तीर चला दिया जिससे वह गरुड़ जैसी चिड़िया मर गयी।

उसी समय उन बच्चों की मॉ आ गयी। मॉ ने सोचा कि घ्वथियासावरी उसके बच्चों को मारने आया है और उसका दुश्मन है और वह उसको पकड़ने ही वाली थी कि उसके बच्चे चिल्लाये — "मॉ उसने तो उस चिड़िया को मारा है जो शायद हमें मार देती। उस चिड़िया को मार कर तो उसने हमारी रक्षा की है। उसको मत मारो।"

हालॉकि वह चिड़िया एक साल में केवल तीन बच्चे ही पालती थी पर उसको हमेशा डर रहता था कि कम से कम वह उनकी तब तक तो देखभाल करती रहे जब तक वे उड़ना नहीं सीख लेते यह वही चिड़िया थी गरुड़ जिसके बच्चों को पकड़ कर खा जाता था।

जब उस चिड़िया को यह पता चला कि घ्वथियासावरी ने तो उसके दुश्मन को मारा है तब तो वह खुश हो कर उसके पास आयी और उससे पूछा — "बता तेरी क्या इच्छा है। तू इधर क्यों आया है। मैं तुरन्त तेरी इच्छा पूरी कर दूँगी।"

घ्वथियासावरी बोला — "मेरी एक माँ है जो बहुत बीमार है अगर मैं तुम्हारे एक बच्चे का माँस उसके लिये ले कर नहीं गया तो वह मर जायेगी।"

चिड़िया बोली — "तेरी माँ तुझे धोखा दे रही है। वह बीमार बिल्कुल भी नहीं है। वह बस तेरी मौत चाहती है। ये मेरे बच्चे हैं अगर तुझे ये चाहिये तो तू इन्हें ले तो जा मगर देखना इनको मारना नहीं। इनको तू ज़िन्दा ही ले जा।"

फिर उसने अपना एक पंख निकाला और उसको देते हुए कहा — "ले यह पंख भी ले जा जब भी तू किसी मुश्किल में पड़े तो मुझे याद करना मैं तुरन्त ही हाजिर हो जाऊँगी।"

घ्वथियासावरी ने उससे उसका एक बच्चा लिया उसका एक पंख लिया दिल से उसका बहुत बहुत धन्यवाद किया और वहाँ से चला आया।

घर आ कर उसने उस चिड़िया के बच्चे को अपनी माँ को दे दिया। वह बोली — "घ्वथियासावरी मेरे बच्चे। अब मैं बिल्कुल ठीक हूँ। अब मुझे किसी चीज़ की जरूरत नहीं है।" यह कह कर उसने उसे वापस भेज दिया।

घ्वथियासावरी फिर अपने शिकार पर चल दिया। उसकी माँ फिर जल्दी से देवी के पास गयी और उससे शिकायत करती बोली — "घ्वथियासावरी तो ज़िन्दा लौट आया है और बच्चा भी ले आया है।"

यह सुन कर देवी को गुस्सा तो बहुत आया पर उसने शान्त दिखायी देने की कोशिश करते हुए कहा — “अबकी बार तुम उससे कहना कि उसको नहाना है। जब वह टब में बैठ जाये तो तुम उसको किसी ढक्कन से ढक देना और मुझे बुला लेना। मैं आ कर उस ढक्कन को पीट पीट कर फिर उसे समुद्र में फेंक दूँगा।”

घ्वथियासावरी की माँ देवी के इस प्लान से बहुत खुश हुई। वह अन्दर गयी और इस प्लान पर काम करने लगी।

उसने अन्दर जा कर बेटे के नहाने के लिये गर्म पानी किया। जब घ्वथियासावरी शिकार से वापस आया तो उसने उससे प्यार से कहा — “आ बेटे मैं तुझे नहलाती हूँ। बहुत दिन हो गये मुझे तुझे नहलाये हुए।”

घ्वथियासावरी को यह अच्छा नहीं लगा पर आखिर वह राजी हो गया। जब वह टब में बैठ गया तो उसकी माँ ने उसका ढक्कन लगा दिया और देवी को बुलाया। देवी तुरन्त ही आ गया और उसने टब के ढक्कन को हथौड़े से बहुत पीटा और फिर टब को उठा कर समुद्र में फेंक दिया।

घ्वथीसावरी के कुत्ते यह सब देख रहे थे। वे पानी के किनारे तक जा कर भौंकने लगे। वे वहाँ तब तक भौंकते रहे जब तक शायद वहाँ के हर पत्थर के आँसू न बहने लगे।

तब वे बोले — "अब हम चलते हैं और चल कर उसके दोस्तों को ढूँढते हैं। हो सकता है कि वे शायद हमारी कुछ सहायता कर सकें।"

सो उन आठ कुत्तों में से चार तो वहीं रह गये और चार उसके दोस्तों को ढूँढने चले गये। पहले वे हिरन के पास गये फिर वे जंगली सूअर के पास गये और फिर उस चिड़िया के पास गये जिसका बच्चा वह अपनी माँ के लिये ले कर आया था।

वे सब तुरन्त ही उठे और समुद्र के किनारे की तरफ चल दिये। वहाँ पहुँच कर उन्होंने सोचा और फिर प्लान बनाया और आखिर में निश्चय किया कि उनको क्या करना है।

उन्होंने चिड़िया से कहा — "तुम खूब ऊपर तक उड़ो और अपने पंखों से पानी को बहुत ज़ोर से मारो। इससे टब ऊपर आ जायेगा और यह हिरन अपने सींगों से उसको पानी में से निकाल कर बाहर फेंक देगा। उसके बाद जंगली सूअर उसको अपने दाँतों से उसको तोड़ देगा और इस तरह से घ्वथियासावरी बाहर निकल आयेगा।"

जैसा उन सबसे कहा गया था उन सबने वैसा ही किया।

चिड़िया बहुत ऊपर उड़ी और उसने पानी को अपने पंखों से जितनी ज़ोर से पीट सकती थी पीटा और समुद्र को तीन हिस्सों में बाँट दिया जिससे टब दिखायी देने लगा।

हिरन ने तुरन्त ही उसको फिर से नीचे नहीं जाने दिया बल्कि बीच में ही अपने सींगों पर पकड़ लिया और किनारे की तरफ फेंक दिया। तुरन्त ही जंगली सूअर वहॉ आया और उसने दॉतों से उसको तोड़ना शुरू कर दिया। साथ में वह चिल्लाता जाता था "घ्वथियासावरी तुम बिल्कुल नीचे लेटे रहना।"

उसने अपने दॉतों से टब तोड़ दिया और घ्वथियासावरी उसमें से सुरक्षित बाहर निकल आया।

घ्वथियासावरी को बाहर निकाल कर उसके दोस्त उसके कुत्तों को वहीं छोड़ कर वहॉ से चले गये। जब सब अपने अपने घर चले गये तो घ्वथियासावरी वहॉ सोचता सा खड़ा रह गया।

जब वह बैठा बैठा सोच रहा था तो कहीं से एक सूअर चराने वाला वहॉ आ गया। घ्वथियासावरी ने उससे कहा — "तू मुझे अपने कपड़े दे दे। मैं उनको पहनूॅगा।"

यह सुन कर सूअर चराने वाला डर गया। उसने सोचा "यह आदमी शायद मेरा कोट तो ले ले पर अपने कपड़े मुझे न दे।" सो वह वहॉ से भाग लिया।

घ्वथियासावरी ने उसका पीछा किया और उसके कपड़े उतार कर खुद पहन लिये। अपना कोट उसको दे दिया और अपने कुत्ते उसके पास छोड़ कर वहॉ से चला गया।

वह एक भिखारी के रूप में घर पहुँचा और घर पहुँच कर माँ से भीख माँगी। जब देवी ने उसे देखा तो वह तो बहुत गुस्सा हो गया।

बहुत गुस्से में आ कर वह उससे बोला — "जा तू वहीं चला जा जहाँ से तू आया है। नहीं तो मैं तेरे साथ वैसा ही करूँगा जैसा कि मुझे तेरे साथ करना चाहिये।"

उसी समय घ्वथियासावरी ने एक कोने में रखा हुआ उसका तीर कमान देखा तो चिल्ला कर बोला — "देखते हैं कि कौन किसको क्या देता है। में घ्वथियासावरी हूँ।"

ऐसा कह कर उसने अपना तीर कमान उठाया और पहले तो उसने देवी को मारा और फिर अपनी माँ को मारा। दोनों को मार कर वह अपनी माँ की नौकरानी के पास गया और उसको डाँटा कि उसने उसको पहले से चेतावनी क्यों नहीं दी और उसे भी मार दिया। उसके बाद वह वहाँ से चला गया अपने कुत्तों को घर ले आया और आराम करने के लिये लेट गया।

उसके बाद वहाँ पता नहीं कहाँ से उसके पास एक नौजवान आया। वह नौजवान घ्वथियासावरी की माँ और देवी का बेटा था। उसने देखा कि उसके माता पिता और उनके नौकर को मार दिया गया है। उसने घ्वथियासावरी को लड़ने के लिये ललकारा।

घ्वथियासावरी को इस बात का बिल्कुल भी पता नहीं था कि उसका कोई भाई भी था।

वह उससे लड़ने के लिये तैयार हो गया। वे आपस में बहुत देर तक लड़ते रहे पर दोनों में से कोई एक दूसरे को नहीं मार सका।

सो घ्वथियासावरी बोला — "आओ दोस्त हम एक दूसरे को पहले अपनी अपनी कहानी सुनाते हैं उसके बाद फिर लड़ेंगे।"

वह नौजवान भी बोला "ठीक है।" और दोनों बैठ गये। दोनों ने अपनी अपनी कहानियॉ सुनायीं।

जब घ्वथियासावरी को यह पता चला कि वह तो उसी का भाई था तो वह बोला — "यह बड़ी खुशकिस्मती की बात है कि हमने पहले ही अपनी अपनी कहानी एक दूसरे को सुना दी वरना अगर हम में से किसी एक ने दूसरे को मार दिया होता तो फिर कुछ नहीं हो सकता था।"

उसके बाद वे दोनों भाई घर के अन्दर चले गये और कुछ समय तक आनन्द से रहे।

X X X X X X X

एक बार घ्वथियासावरी ने अपने छोटे भाई से कहा — "चलो दुनियॉ में चल कर अपनी किस्मत आजमाते हैं। अगर हम यहॉ इसी तरीके से रहते रहे तो हम लोग बुढ़ियों की तरह से आलसी हो जायेंगे।"

छोटा भाई बोला — "हॉ हॉ चलो मैं तैयार हूॅ।"

सो वे चल दिये।

चलते चलते वे एक ऐसी जगह आ गये जहाँ से सड़क दो तरफ चली जाती थी। एक बॉये हाथ को जाती थी और दूसरी दॉये हाथ को। उनके बीच में एक खम्भा खड़ा था उस पर लिखा था जो बॉये रास्ते से जायेगा वह वापस लौट कर आयेगा और जो दॉये रास्ते से जायेगा वह कभी वापस लौट कर नहीं आयेगा।

सो घ्वथियासावरी ने तो दॉये हाथ वाली सड़क चुनी और उसका छोटा भाई बॉये हाथ वाली सड़क पर चल दिया। घ्वथियासावरी बोला — "देखना अगर छत के ऊपर का पानी खून में बदल जाता है तो समझो कि मैं बहुत मुश्किल में हूँ और तू मेरी सहायता के लिये आ जाना। और अगर मेरी छत के ऊपर का पानी खून में बदल जाता है तो मैं तेरी मुश्किल में सहायता करने आ जाऊँगा।"

इसके बाद उन दोनों ने आठों कुत्ते आपस में बॉटे और अपने अपने रास्ते चल दिये।

घ्वथियासावरी चलता रहा जब तक कि वह एक समुद्र के किनारे तक नहीं आ गया। वह समुद्र इतना बड़ा था कि उसका ओर छोर दिखायी नहीं देता था। 12 आदमी उसके इस पार खड़े थे और 12 आदमी उस पार। जिसको भी इस पार आना हो या उस पार जाना हो तो उसको तो उस समुद्र को लॉघ कर ही जाना पड़ता।

जो कोई भी उस समुद्र को अपने पैरों को बिना गीला किये हुए लॉघ जायेगा राजा अपनी बेटी की शादी उसी आदमी से कर देगा। उसकी बेटी बहुत सुन्दर थी।

और अगर वह ऐसा नहीं कर पाया तो साफ जाहिर है कि वह डूब जायेगा और जो कोई उसको लॉघने से डर की वजह से नहीं लॉघेगा उसको राजा के सन्तरी पकड़ लेंगे और राजा के पास ले जायेंगे।

जब घ्वथियासावरी वहॉ पहुँचा तो राजा के सन्तरियों ने उसे वहॉ की शर्तों के बारे में बताया। घ्वथियासावरी बहुत ज़ोर से ऊपर की तरफ उछला और एक ही बार में बिना अपने पैर गीले किये हुए वह समुद्र पार कर गया।

वहॉ उसने दूसरे सन्तरी देखे तो उन्होंने उससे कहा कि वे उसको राजा के सामने ले जायेंगे। जब राजा ने उसे देखा तो वह बहुत खुश हुआ और उसने अपनी सुन्दर बेटी की शादी उससे कर दी। उसी रात को घ्वथियासावरी ने अपनी पत्नी से पूछा कि वहॉ सबसे अच्छी शिकार की जगह कहॉ थी।

उसने जवाब दिया "अगर तुम बॉये को जाओगे तो लौट आओगे और दॉये को जाओगे तो कभी नहीं लौटोगे।

अगली सुबह घ्वथियासावरी दिन निकलते ही उठ गया और अपना तीर कमान ले कर दॉये हाथ की तरफ चल दिया। उसको एक बड़ा खरगोश दिखायी दे गया तो उसने अपना तीर कमान

निकाला और उसे मार दिया। उसने उसके पैर आपस में बाँध दिये और उसे वहीं छोड़ दिया।

उसके बाद एक हिरन मारा। उसके भी उसने पैर बाँधे और उसको भी वहीं छोड़ दिया। इसके बाद उसने तीसरा तीर चलाया तो वह तीर एक जलती हुई आग में जा कर फँस गया।

वह चलता गया चलता गया जब तक कि वह उस आग के पास पहुँचा। वहाँ पहुँच कर उसने एक हिरन और मारा और उसको आग पर भुनने के लिये रख दिया। खुद वह उसके बराबर में बैठ गया। वहाँ उसने माँस भूना उसमें से कुछ खाया और कुछ अपने कुत्तों को दे दिया।

लो पता नही कहाँ से एक बिना दाँत वाली बुढ़िया वहाँ आ गयी। उसने घ्वथीसावरी से कुछ खाने के लिये माँगा। उसने उसको भी कुछ माँस दे दिया। उसने खुद भी खाया और उस बुढ़िया ने भी खाया पर उस बुढ़िया ने उससे दस गुना खाया। घ्वथियासावरी एक ही कौर खाता था जबकि बुढ़िया एक टोकरी भर कर खा जाती थी।

यह देख कर घ्वथियासावरी को बड़ा आश्चर्य हुआ। बुढ़िया ने सारा खाना बहुत जल्दी ही खत्म कर दिया। फिर बुढ़िया ने एक छोटा सा पत्थर उठाया और उसे घ्वथियासावरी के तीर कमान की तरफ फेंका तो वे तुरन्त ही पत्थर के हो गये और नीचे गिर पड़े।

उसने फिर एक छोटा सा पत्थर उठाया और कुत्तों की तरफ फेंका तो वे भी पत्थर के हो गये। उसने एक एक कर के उनको अपने हाथ में उठाया और निगल गयी।

घ्वथियासावरी तो यह देख कर दंग रह गया। उसने उसको मारने के लिये अपना तीर कमान उठाया पर वह उसे उठा न सका क्योंकि वह तो पत्थर का हो कर धरती पर गिर पड़ा था।

तब उस बुढ़िया ने एक पत्थर घ्वथियासावरी की तरफ फेंकने के लिये उठाया। घ्वथीसावरी अब तक बहुत कमजोर सा हो गया था जैसे उसमें जान ही नहीं थी। बुढ़िया ने उसे अपने हाथों में उठा लिया और निगल गयी।

उसी समय पानी खून में बदल गया और उसके छोटे भाई को पता चल गया कि उसके बड़े भाई के ऊपर कोई मुसीबत आ पड़ी है। बस वह उसकी सहायता के लिये चल दिया।

कुछ दूर चलने के बाद वह एक पानी के किनारे आ पहुँचा जिसके दोनों किनारों पर **12-12** सन्तरी खड़े थे। वह कूद कर पानी के दूसरी तरफ चला गया। सन्तरियों को लगा कि वह घ्वथियासावरी था। उन्होंने उससे पूछा कि वह कहाँ से आया था और कहाँ जा रहा था। नौजवान उनसे कुछ नहीं बोला और न उसने उनको यही बताया कि वह कौन था।

वह राजा के पास गया। पहली ही रात वह अपने भाई की पत्नी के पास गया तो वह अपने और उसके बीच में तलवार रख

कर लेट गया। उसने उससे पूछा कि वहॉ पर सबसे अच्छा शिकार कहॉ मिल सकता था।

लड़की बोली — "अगर तुम बॉयी तरफ को जाओगे तब तो तुम वहॉ से वापस आ जाओगे और अगर दॉयी तरफ जाओगे तो फिर वहॉ से कभी वापस नहीं आओगे। मेहरबानी कर के मत जाओ। क्या यही बात मैंने तुमसे कल नहीं कही थी?"

नौजवान बोला — "हॉ मैंने तुमसे पूछा था। फिर मैं एक तरफ गया था पर उधर मुझे कुछ अच्छा नहीं लगा इसी लिये मैंने तुमसे आज दोबारा पूछा।"

सुबह उठ कर वह दॉयी तरफ चला गया। थोड़ी दूर चलने के बाद उसे एक मरा हुआ बड़ा खरगोश मिला जिसके पैर बॅधे हुए थे। वह कुछ दूर आगे और चला तो उसे एक मरा हुआ हिरन मिला। उसके भी पैर बॅधे हुए थे।

उसने सोचा कि शायद मेरा भाई इधर से गया है। ये कुछ जानवर हैं जो उसने मारे।" वह फिर और आगे बढ़ता चला गया तो वहॉ उसको आग जलती मिली। उसके बराबर में घ्वथियासावरी का तीर कमान पड़ा था।

उसको देख कर उसको लगा कि यहीं उसके भाई को कुछ परेशानी हुई होगी। उसने भी कुछ जानवर मारे और उनको आग पर भूनने लगा। तभी वहॉ पर एक बुढ़िया प्रगट हो गयी और

खाना माँगने लगी। उस समय भी वह उसी तरह से खाना खा रही थी जैसे कि वह घ्वथियासावरी के सामने खा रही थी।

अपना खाना खत्म कर लेने के बाद भी वह अभी तक भूखी थी। उसने एक छोटा सा पत्थर उठाया और उसे कुत्तों को मारने के लिये अपने हाथ में उठाया।

यह देख कर नौजवान ने सोचा कि शायद इसी तरीके से इस बुढ़िया ने मेरे भाई घ्वथियासावरी को निगल लिया होगा। उसने तुरन्त ही बुढ़िया को उसके गले से पकड़ लिया और उसकी छाती फाड़ कर उसमें से घ्वथियासावरी और उसके कुत्तों को उसमें से बाहर निकाल लिया।

उसके बाद उसने उसको मार दिया। फिर उसका खून ले कर घ्वथियासावरी पर उसके कुत्तों पर और उसके तीर कमान पर छिड़क दिया। घ्वथीसावरी और उसके कुत्ते ज़िन्दा हो गये और उसका तीर कमान भी धरती से उठ गया।

जब घ्वथियासावरी होश में आया तो बोला — "अरे यह मैंने आज कैसा सपना देखा।"

उसके भाई ने कहा — "यह सपना नहीं था।" और फिर उसे सब कुछ बताया।

घ्वथियासावरी यह सुन कर बहुत खुश हुआ और फिर वे दोनों अपने नये सम्बन्धी यानी राजा से मिलने चले गये।

रास्ते में घ्वथियासावरी यह सोच कर बहुत दुखी था कि शायद उसके छोटे भाई ने उसकी पत्नी से शादी कर ली है पर उसके भाई ने उसकी तरफ देख कर कहा — "भगवान करे मेरे उस हिस्से में यह तीर लग जाये और मुझे मार दे जिसने तुम्हारी पत्नी को छुआ हो।"

यह कह कर घ्वथियासावरी के भाई ने एक तीर ऊपर की तरफ छोड़ा। जब वह नीचे गिरा तो वह उसकी सबसे छोटी उंगली को छू कर गिरा और वह मर गया।

घ्वथियासावरी ने अपने भाई को वहीं छोड़ा और खुद अन्दर गया। जब उसको सब बातों का पता चला तो वह बहुत दुखी हुआ। वह वहॉ से बाहर चला गया। कोई नहीं जानता कहॉ।

वह ज़िन्दगी का पानी ले कर लौटा अपने भाई को ज़िन्दा किया। बाद में उसके लिये एक सुन्दर लड़की देख कर उसने उसकी शादी कर दी। फिर वे सब आनन्दपूर्वक रहे।

7 सॉप और किसान[25]

एक बार की बात है कि एक बहुत ही खुश खुश राजा था। उसके राज्य में छोटे बड़े स्त्री पुरुष नौकर मालिक बड़े लोग छोटे लोग सब खूब खुश रहते थे।

एक बार इस राजा को सपना आया कि उसकी छत से एक लोमड़ा अपनी पूँछ से लटका हुआ है। राजा की ऑख खुल गयी पर उसको यह समझ में नहीं आया कि उसके इस सपने का मतलब क्या था।

अगले दिन उसने अपने वजीरों को बुलाया और उनको अपना सपना बता कर उनसे उसका मतलब पूछा पर वे भी उसका कोई मतलब नहीं निकाल सके। तब राजा ने कहा कि मेरे राज्य के सारे लोगों को बुलाओ शायद उनमें से कोई इसका मतलब बता सके।

सो तीसरे दिन राज्य के सारे लोग राजा के महल में जमा हुए। उन सब लोगों में एक गरीब किसान भी था।

जब यह गरीब किसान राजा के महल आ रहा था तो एक जगह उसको एक पतले से रास्ते से गुजरना पड़ा। उस रास्ते के दोनों ओर पहाड़ खड़े थे।

[25] The Serpent and the Peasant (Tale No 7)

जब वह वहाँ तक आया तो रास्ते में उसको एक साँप पड़ा हुआ दिखायी दिया। उसने अपनी गर्दन उठा रखी थी और उसकी जीभ बाहर निकली हुई थी।

जब किसान उस साँप के पास पहुँचा तो वह साँप किसान से बोला — "गुड डे किसान भाई कहाँ चल दिये।"

किसान ने उसको बताया कि वह कहाँ जा रहा था। उसने उसको राजा की परेशानी भी बतायी। साँप बोला — "तुम उससे डरो नहीं। मुझसे वायदा करो कि जो कुछ भी राजा तुमको देगा तुम उसको मुझसे बाँटोगे तो मैं तुम्हें बताऊँगा कि उस सपने का क्या मतलब है।"

किसान को यह सुन कर बड़ी खुशी हुई। उसने साँप से वायदा किया कि राजा उसे जो कुछ भी देगा वह उसे उसके साथ बाँटेगा। उसने कहा —"अगर तुम इस मामले में मेरी सहायता करोगे तो राजा जो कुछ भी मुझे देगा वह सब मैं तुम्हारे लिये ले कर आऊँगा और फिर हम उसे बराबर बराबर बाँट लेंगे।"

साँप बोला — "मैं उसको आधा आधा बाँटूँगा – आधा तुम्हारा और आधा मेरा। जब तुम राजा से मिलो तो उससे कहना "लोमड़े के इस तरह से सपने में आने का मतलब यह है कि तुम्हारे राज्य में चालाकी और बदमाशी है और धोखाधड़ी फैली हुई है।"

यह सुन कर किसान चला गया। किसान राजा के पास पहुँचा और उससे जा कर वही कह दिया जो साँप ने उससे कहने के लिये

कहा था। राजा उससे बहुत खुश हुआ और उसने उसको इनाम में बहुत सारी चीज़ें दीं।

किसान को लालच आ गया सो लौटते समय वह उस रास्ते से नहीं लौटा जिस रास्ते से वह गया था बल्कि उसने दूसरा रास्ता लिया ताकि राजा का दिया हुआ सामान उसे सॉप से न बॉटना पड़े।

कुछ समय गुजर गया। कुछ समय बाद राजा ने एक और सपना देखा। इस सपने में उसने देखा कि एक नंगी तलवार छत से लटकी हुई है। राजा की ऑख फिर से खुल गयी पर वह इस सपने का भी कोई मतलब न निकाल सका।उसको किसान की याद आयी सो उसने किसान को बुलवा भेजा।

यह सुन कर किसान बहुत परेशान हुआ क्योंकि वह तो उस सपने के बारे में कुछ जानता ही नहीं था। वह अपने पुराने रास्ते से राजा के महल चल दिया।

वह उस जगह आया जहॉ उसको पहले सॉप मिला था पर अब तो वहॉ कोई सॉप नहीं था। वह ज़ोर से चिल्लाया — "ओ सॉप मेहरबानी कर के एक पल के लिये यहॉ आओ मुझे तुम्हारी बहुत सख्त जरूरत है।" जब तक सॉप वहॉ आ नहीं गया तब तक वह उसको चिल्ला चिल्ला कर बुलाता ही रहा।

जब सॉप वहॉ आ गया तब सॉप ने उससे पूछा — "अब तुम्हें क्या चाहिये। अब तुम्हें क्या परेशानी है।"

किसान बोला — "मुझे यह परेशानी है और मुझे तुम्हारी सहायता चाहिये।"

सॉप ने कहा — "जाओ और जा कर राजा से कहना "नंगी तलवार का मतलब होता है लड़ाई। उसके दुश्मन उसके राज्य की तरफ बढ़ रहे हैं। उसको लड़ाई और हमले के लिये तैयार रहना चाहिये।"

किसान ने सॉप को बहुत बहुत धन्यवाद दिया और वहॉ से चला गया। वह राजा के पास आया और राजा से वही कह दिया जो सॉप ने उससे कहने के लिये कहा था।

राजा उससे यह सुन कर बहुत खुश हुआ। उसने किसान को फिर से बहुत सारी चीज़ें इनाम में दीं और लड़ाई और हमले की तैयारी करनी शुरू कर दी।

किसान अबकी बार उसी रास्ते से लौटा जहॉ सॉप उसका इन्तजार कर रहा था। जब किसान सॉप के पास आया तो सॉप बोला — "लाओ मेरा आधा हिस्सा जो तुमने मुझको देने का वायदा किया था।"

किसान बोला — "आधा हिस्सा कैसा आधा हिस्सा? नहीं नहीं कभी नहीं। मैं तुमको एक काला पत्थर और एक जलता हुआ अंगारा दूॅगा।" कह कर किसान ने अपनी तलवार निकाल ली और सॉप के पीछे भागा पर सॉप तो जल्दी से एक बिल में चला गया

था। पर फिर भी किसान उसकी पूँछ काटने में कामयाब हो ही गया।

फिर कुछ समय बीत गया। कुछ समय बाद राजा को फिर एक सपना आया। उसके इस सपने में एक कटी हुई भेड़ छत से लटक रही थी। राजा की आँख फिर से खुल गयी और वह इस सपने को कोई मतलब नहीं निकाल सका तो उसने फिर से उसी किसान को बुलवा भेजा।

अबकी बार किसान बहुत डरा हुआ था। उसने सोचा "अबकी बार मैं राजा के पास कैसे जाऊँ।" पहले तो साँप ने उसको बता दिया था कि उसको राजा से क्या कहना था पर अब वह उसकी सहायता कैसे ले सकता था। क्योंकि उसकी अच्छाई के बदले में तो उसने उसकी पूँछ ही काट डाली थी। अब वह क्या करे।

फिर भी वह उसी रास्ते से गया जिस पर वह साँप से मिला था। जब वह उस जगह पर पहुँचा जहाँ वह साँप से मिला था तो वह फिर चिल्लाया — "ओ साँप एक पल के लिये यहाँ आओ। मैं तुमसे कुछ पूछना चाहता हूँ।"

साँप बाहर आया तो किसान ने उससे अपनी परेशानी कही। साँप ने कहा अगर तुम मुझे उसका आधा दो जो राजा तुम्हें देगा तो मैं तुमको बता सकता हूँ।

अबकी बार किसान ने वायदा भी किया और कसम भी खायी कि वह राजा की दी हुई चीज़ों में से आधी चीज़ें उसको जरूर दे देगा।

तब सॉप ने कहा — “यह एक ऐसा इशारा है जिससे यह पता चलता है कि राजा के राज्य में हर जगह शान्ति ही शान्ति होगी। और लोग भेड़ की तरह से बिल्कुल शान्त रहेंगे।”

किसान ने उसको धन्यवाद दिया और राजा के पास चल दिया। जब वह राजा के पास पहुँचा तो उसने राजा को वही बता दिया जो सॉप ने उसको बताया था।

राजा उससे बहुत खुश हुआ और इस बार उसने उसको और बहुत सारी चीज़ें इनाम में दीं। राजा का दिया हुआ सब सामान ले कर वह उसी रास्ते से लौटा जिस पर सॉप उसका इन्तजार कर रहा था।

वह सॉप के पास आया और उसने राजा के दिये हुए सामान को आधा आधा बॉटा और सॉप से बोला — “सॉप भाई तुमने मेरे साथ बहुत धीरज रखा। अब मैं तुम्हें उस सब में से भी हिस्सा दूँगा जो राजा ने मुझे पहले दिया था।”

फिर उसने अपने किये हुए अपराधों की उससे माफी मॉगी। सॉप बोला — “किसान भाई तुम न तो दुखी हो और न परेशान ही हो क्योंकि इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं थी।

पहली बार राजा के देश में जब सब लोग धोखा देने वाले और दूसरों को परेशान करने वाले हो गये थे तो तुम भी धोखा देने वाले और परेशान करने वाले हो गये थे। सो अपने वायदे के बावजूद तुम दूसरे रास्ते से अपने घर चले गये।

दूसरी बार जब सब जगह लड़ाई ही लड़ाई फैली हुई थी झगड़े हो रहे थे लोग एक दूसरे को मार रहे थे तब तुम भी मुझसे लड़े और तुमने अपनी तलवार से मेरी पूँछ काट डाली।

तीसरी बार अब जब सब जगह शान्ति और प्यार फैला पड़ा है तो तुमने भी राजा का दिया हुआ इनाम मुझसे बॉट लिया और यह इनाम केवल इसी समय का ही नहीं बॉटा बल्कि और पिछला इनाम भी बॉट लिया।

जाओ भाई जाओ और सुख शान्ति से रहो। भगवान तुमको हमेशा सुखी रखे। मुझे तुम्हारी कोई चीज़ नहीं चहिये।"

कह कर सॉप अपने बिल में चला गया।

8 गुलाम्बरा और सुलाम्बरा[26]

एक बार की बात है कि या तो था और या फिर नहीं था एक अन्धा राजा राज्य करता था। राज्य के सारे डाक्टरों ने अपनी पूरी कोशिश कर ली थी पर वे राजा की ऑखों की रोशनी नहीं ला सके थे।

आखिर एक डाक्टर बोला — "फलॉ फलॉ सागर में एक खून के रंग जैसी लाल मछली है। अगर उसको पकड़ लिया जाये और उसको मार कर उसका खून आपकी ऑखों पर छिड़का जाये तो वह शायद आपका कुछ भला कर सके।

हो सकता है कि वह आपकी ऑखों की रोशनी वापस ला सके। अगर उससे ऐसा नहीं होता तो फिर और कोई इलाज नजर नहीं आता।"

यह सुन कर राजा ने अपने राज्य के सारे मछियारों को बुलाया और उनको हुक्म दिया कि वे वहॉ भी जायें जहॉ उनको जाना है और वहॉ भी जायें जहॉ उनको नहीं जाना है और ऐसी मछली ढूॅढें और उसे पकड़ कर यहॉ लायें। मैं उनको बहुत सारा इनाम दूॅगा।

यह सुन कर सब मछियारे वैसी मछली ढूॅढने चले गये।

कुछ समय गुजर गया। एक बूढ़े मछियारे ने वैसी ही लाल मछली पकड़ी और उसको राजा के पास ले कर आया। राजा उस

[26] Gulambara and Sulambara (Tale No 8)

समय सो रहा था। कोई उसको जगाने की हिम्मत नहीं कर सका। सो वह मछली पानी से भरे एक बर्तन में रख दी गयी।

उसी समय राजा का बेटा अपनी पढ़ाई से वापस लौटा तो उसने पानी से भरे बर्तन में एक लाल मछली तैरती देखी। उसको वह बहुत अच्छी लगी।

उसने उसको अपने हाथ में उठा लिया और प्यार से उसको सहलाया और अपने नौकरों से पूछा — "तुम्हें पानी के बर्तन में रखी हुई इस सुन्दर सी मछली से क्या चाहिये।"

उन्होंने जवाब दिया — "यह मछली आपके पिता के लिये बहुत अच्छी है। इसको मारा जायेगा और इसका खून आपके पिता की ऑखों पर छिड़का जायेगा। और इससे उनकी ऑखों की रोशनी वापस आ जायेगी।"

राजकुमार ने पूछा — "पर इसको मारना क्या पाप नहीं है।" और यह कह कर राजकुमार ने वह मछली पानी में से निकाली और मैदान में बहती एक नदी की तरफ ले गया और उसमें डाल दी। इस तरह से उसने उसको आजाद कर दिया।

कुछ देर बाद राजा जागा तो उसके वजीर ने कहा — "योर मैजेस्टी, एक बूढ़ा मछियारा आपको लिये खून जैसी लाल मछली ले कर आया था पर आपके बेटे ने जो अभी अभी पढ़ कर आया था उसको वहॉ से आजाद कर दिया। उन्होंने उसको नदी में फेंक दिया।"

राजा यह सुन कर बहुत गुस्सा हुआ और उसने अपने बेटे को उसके घर से बुला भेजा और कहा — "तू जा। मैं अपने आप ठीक हो जाऊँगा। तू तो राज्य में याद भी नहीं किया जायेगा। मैं अपनी ऑखों से तुझे देख भी नहीं सकूँगा। मुझे तो अब तेरी यह बुरी आवाज भी नहीं सुननी। तू जा।"

राजकुमार यह सब सुन कर बहुत दुखी हुआ। वह उठा और उठ कर वहॉ से चला गया। वह चलता गया चलता गया। उसको यही नहीं पता था कि वह कहॉ जा रहा है।

रास्ते में एक नदी पड़ी। वह बहुत थक गया था सो वह उस नदी के किनारे सुस्ताने के लिये बैठ गया। लो कुछ देर में उसी की उम्र का एक लड़का नदी में से बाहर आया।

वह राजकुमार के पास आया उसने उसको नमस्ते की और पूछा — "तुम कहॉ से आ रहे हो और तुम परेशान क्यों हो।"

राजकुमार ने उसको अपनी सारी कहानी बता दी। उसके नये साथी ने कहा — "मैं भी अपने घर से बहुत परेशान हूँ सो चलो हम दोनों भाई बन जाते हैं और दोनों एक साथ रहते हैं।" राजकुमार राजी हो गया और वे दोनों एक तरफ चल दिये।

वे लोग कुछ दूर ही चले थे कि एक शहर आ गया। वे वहॉ रहने लगे। अगले दिन राजकुमार के नये भाई ने राजकुमार से कहा — "तुम घर पर ही रहो। घर के बाहर मत जाना कहीं ऐसा न हो कि वे तुम्हें खा जायें क्योंकि यहॉ का यही रिवाज है।"

राजकुमार ने उससे वायदा किया कि वह घर से बाहर बहीं निकलेगा। और वह सारे दिन घर में ही बैठा रहा। दूसरा लड़का सारे दिन शहर में रहा। शाम को वह घर लौटा तो उसके हाथ में एक चादर भर कर खाने का सामान था।

इस तरह से रहते रहते कुछ दिन बीत गये। राजकुमार सारे दिन घर में रहता और उसका मुँहबोला भाई बाहर से खाने पीने का सामान लाता।

आखिर राजकुमार ने एक दिन सोचा "यह तो मेरे लिये बड़े शर्म की बात है कि मेरा भाई तो रोज बाहर खाना पीना लेने जाता है और मैं कुछ नहीं करता। मैं कुछ क्यों नहीं करता। मैं इतना आलसी क्यों हूँ। मैं भी बाहर जाऊँगा और कुछ करूँगा।"

और फिर ऐसा ही हुआ। एक दिन राजकुमार शहर में चला गया। वह इधर से उधर घूमता रहा। घूमते घूमते एक जगह उसने देखा कि उसका भाई जमीन पर पालथी लगाये बैठा था।

उसके पैरों के पास एक रूमाल बिछा हुआ था। उसके हाथों में एक तार वाला बाजा था जो वह बजा रहा था और उसके साथ साथ अपनी मीठी आवाज में कुछ गा भी रहा था। जो कोई उधर से गुजरता वह उसके रूमाल में कुछ पैसे डालता जाता।

राजकुमार सुनता रहा सुनता रहा फिर बोला — "नहीं यह नहीं होना चाहिये। इस बात का मुझसे कोई मतलब नहीं है।" कह कर वह वहाँ से पलटा और चल दिया।

पास में ही उसको एक मीनार दिखायी दी। उसके बाहर की तरफ एक दीवार थी और उसकी चोटी पर आदमियों के सिर कतारों में लगे हुए थे। उनमें से कुछ चेहरों पर झुर्रियाँ पड़ी हुई थीं और कुछ पुराने थे जिनमें से सड़ने की बू आ रही थी और कुछ वहाँ अभी टाँगे गये थे।

वह उनको देखता रहा देखता रहा। जब उसकी कुछ समझ में नहीं आया तो उसने एक आदमी से पूछा — "यह किसकी मीनार है। और ये आदमियों के सिर इस तरह से कतार में क्यों लटके हुए हैं।"

आदमी ने जवाब दिया — "इस मीनार में एक लड़की रहती है। वह इतनी सुन्दर है जैसे सूरज। किसी भी राजा का बेटा उसका हाथ माँग सकता है।

पर वह उससे एक सवाल पूछती है और अगर वह उसका जवाब नहीं दे पाता तो वह उसका सिर कटवा देती है। और अगर वह उसके सवाल का जवाब दे दे तो वह उससे शादी कर सकता है। अभी तक कोई उसके सवाल का जवाब नहीं दे पाया है सो ये सब उन्हीं आदमियों के सिर हैं।"

राजकुमार ने बहुत सोचा बहुत सोचा और फिर यह तय किया "मैं उसके पास जरूर जाऊँगा और मैं उस लड़की का हाथ शादी के लिये माँगूँगा। इससे मैं यह जान जाऊँगा कि मेरी किस्मत में क्या है। हालाँकि जो होना है वह तो हो कर ही रहेगा। पर वह मुझसे

क्या पूछ सकती है यह तो मैं नहीं जानता।" सो वह उठा और उधर ही चल दिया।

वह मीनार में गया उस सूरज जैसी राजकुमारी से मिला और उससे उसका हाथ माँगा।

वह बोली — "यह तो ठीक है कि तुम मुझसे शादी करना चाहते हो पर पहले मुझे तुमसे एक सवाल पूछना है। अगर तुम मेरे सवाल का जवाब दे दोगे तो मैं तुम्हारी हूँ और अगर नहीं दे पाये तो मै तुम्हारा सिर कटवा दूँगी।"

राजकुमार बोला — "ऐसा ही सही।"

राजकुमारी बोली — "अच्छा तो यह बताओ कि गुलाम्बरा और सुलाम्बरा कौन हैं।"

राजा के बेटे ने अपने मन में सोचा "यह तो में जानता हूँ कि गुलाम्बरा और सुलाम्बरा फूलों के नाम हैं पर मैंने अपनी ज़िन्दगी में यह कभी नहीं सुना कि ये नाम किसी आदमी के भी हैं। अब मैं क्या बताऊँ कि ये कौन हैं।"

उसने राजकुमारी से तीन दिनों की मोहलत माँगी और घर चला गया। घर जा कर उसने अपने भाई को बताया कि उस दिन क्या हुआ था।

फिर वह बोला — "अगर अब तुम मेरी सहायता नहीं कर सकते तो तीन दिन बाद मेरा यह सिर कट जायेगा।"

उसके भाई ने उसको डॉटा — “क्या मैंने तुमसे यह नहीं कहा था कि तुम घर में अन्दर ही रहो। यह बहुत ही बुरा शहर है। और तुम माने नहीं।”

लेकिन फिर उसने उसको तसल्ली देते हुए कहा — “ठीक है जाओ एक पैनी का खुशबूदार गोंद और एक मोमबत्ती खरीद लाओ। मेरी एक दादी हैं। मै तुमको उनके पास ले जाऊँगा और इस मामले में वही तुम्हारी सहायता करेंगी।

पर जब मेरी दादी हमको देख रहीं हो तो उस समय तुम वह गोंद और मोमबत्ती उनको दे देना नहीं तो वह तुमको खा जायेंगी।”

सो राजकुमार ने एक पैनी का खुशबूदार गोंद और एक मोमबत्ती खरीदी और दोनों उस लड़के की दादी के पास चल दिये। दादी दरवाजे पर ही खड़ी हुई थी। राजकुमार ने तुरन्त ही वह गोंद और मोमबत्ती दादी को दे दी।

राजकुमार के भाई की दादी ने पूछा — “यह क्या है और तुम्हारे साथ क्या मामला है।”

राजकुमार का भाई आगे बढ़ा और उसने उसको सब कुछ विस्तार से बताया और कहा — “यह मेरा बहुत अच्छा भाई है और आपको इसकी सहायता जरूर करनी चाहिये।”

बुढ़िया ने राजकुमार से कहा — “ठीक है। मै तुम्हारी सहायता जरूर करूँगी। तुम मेरी पीठ पर बैठ जाओ।”

राजकुमार उसकी पीठ पर बैठ गया और वह बुढ़िया ऊँची और बहुत ऊँची उड़ चली। पर पलक झपकते ही वह नीचे गहराइयों में उतर गयी।

वहाँ वह उसको एक शहर में ले गयी। वहाँ वे लोग बाजार में घुसने ही वाले थे कि वहाँ जा कर बुढ़िया ने एक दूकानदार की तरफ इशारा करते हुए उससे कहा — "तुम इस दूकानदार को देख रहे हो न। जाओ और इस दूकानदार के यहाँ जा कर काम करो।

पर जब शाम को जब यह दूकानदार अपना काम खत्म कर के अपने घर जाये तो उससे कहना कि वह तुमको भी अपने साथ ले जाये। वह तुमको अपनी दूकान में किसी भी हालत में न छोड़े।

जब तुम उसके साथ जाओगे तब तुम गुलाम्बरा और सुलाम्बरा की कहानी जान पाओगे। फिर जब भी तुमको मेरी जरूरत हो बस एक सीटी बजा देना और मैं हाजिर हो जाऊँगी।"

राजकुमार ने ठीक वैसा ही किया जैसा कि उस बुढ़िया ने उससे करने के लिये कहा था। वह उस कसाई की दूकान पर गया और उसके साथ काम करने लगा।

शाम को जब कसाई घर जाने लगा तो वह बोला — "मैं इस जगह मैं एक अजनबी हूँ मेहरबानी कर के मुझे यहाँ अकेला दूकान में मत छोड़ें मुझे डर लगता है। मुझे आप अपने साथ अपने घर ले चलिये।"

कसाई ने बहुत मना किया कि वह उसको अपने साथ अपने घर नहीं ले जा सकता पर राजकुमार तब तक उससे जिद करता रहा जब तक वह उसको अपने घर ले जानो के लिये राजी नहीं हो गया। सो मजबूरन कसाई को उसको अपने साथ ले कर जाना पड़ा।

वे एक दीवार के पास आये, वहॉ उसने एक दरवाजा खोला, वे दोनों उसके अन्दर गये और दरवाजा बन्द हो गया। उसके बाद एक और दीवार थी। वे उसमें से भी हो कर गये और वह भी उनके अन्दर पहॅुचते ही बन्द हो गयी। इस तरह से वे नौ दीवारों से हो कर गुजरे। उसके बाद ही वे उस कसाई के घर में पहॅुचे।

घर में पहॅुच कर कसाई ने एक आलमारी खोली उसमें से एक स्त्री का सिर निकाला और लोहे का एक कोड़ा निकाला। उसने उस सड़े हुए सिर को नीचे रखा और एक कोड़ा मारा। फिर वह उसको तब तक कोड़े मारता रहा जब तक कि वह सिर बिल्कुल ही खत्म नहीं हो गया।

राजकुमार ने जब यह देखा तो वह तो बहुत ही आश्चर्यचकित रह गया। वह उस कसाई से बिना पूछे न रह सका — “अगर आप बुरा न माने तो क्या में आपसे पूछ सकता हॅू कि आप यह क्या कर रहे थे। यह सिर तो वैसे ही सड़ा हुआ था फिर आप इसे क्यों मार रहे थे। और यह सिर किसका है।”

कसाई बोला — "मैं इस बात को किसी को नहीं बताता यह मेरा अपना भेद है। पर जब भी मैं यह बात जिस किसी को भी बताऊँगा उसका सिर धड़ से अलग हो जायेगा।"

राजकुमार बोला — "फिर भी मैं यह बात जानना चाहूँगा।"

कसाई उठा उसने एक तलवार उठायी अपने आपको तैयार किया और राजकुमार से बोला — "मेरी एक पत्नी थी जो इतनी सुन्दर थी कि सूरज भी उसके मुकाबले में कुछ नहीं था। उसका नाम गुलाम्बरा था। मैं इसी लिये उसको इन नौ तालों के अन्दर रखता था।

मैं उसको इतनी सँभाल कर रखता था कि स्वर्ग की हवा भी उसको नहीं छू सकती थी। वह जो कुछ भी चाहती थी मैं उसको वह तुरन्त ही दे दिया करता था। मैं उसे अपने प्यार की हद तक प्यार करता था और उस पर विश्वास भी करता था। एक दिन उसने मुझसे कहा भी कि वह भी दुनियाँ में केवल मुझे ही प्यार करती थी।

उन दिनों मेरा एक नौकर था जिसका नाम सुलाम्बरा था। मेरी पत्नी ने मुझे धोखा दिया वह मेरे उस नौकर से प्यार करने लगी। एक बार मैंने उन दोनों को एक साथ देख लिया तो उनको पकड़ लिया। मैंने उन दोनों को दो आलमारियों में अलग अलग बन्द कर दिया।

जब मैं अपना काम खत्म कर के घर आता तो उनको एक एक कर के उन आलमारियों में से बाहर निकालता और खूब मारता। मैंने कल उन दोनों को इतना मारा इतना मारा कि सुलाम्बरा तो कल ही मर गया पर गुलाम्बरा का सिर अभी भी बच गया। और गुलाम्बरा का सिर मैंने आज तुम्हारे सामने ही खत्म कर दिया।"

कहानी खत्म हो गयी थी सो कसाई ने अपनी तलवार सॅभाली और बोला — "अब मैं अपनी धमकी पूरी करने जा रहा हूॅ। सो अब तुम यहॉ आओ और मैं अब तुम्हारा सिर धड़ से अलग करता हूॅ।"

राजकुमार उससे दया की भीख मॉगता हुआ बोला — "मुझे थोड़ा सा समय दो। मैं दरवाजे की तरफ जा कर ज़रा भगवान की प्रार्थना कर लूॅ।"

कसाई ने सोचा "इसमें तो मेरा कोई नुकसान नहीं है कि यह मरने से पहले दरवाजे के पास जा कर भगवान की प्रार्थना कर ले क्योंकि यह तो पक्की बात है कि यह नौ दरवाजे तो किसी हालत में खोल ही नहीं सकता।"

राजकुमार दरवाजे के पास गया और जा कर सीटी बजायी। तुरन्त ही वह बुढ़िया वहॉ आ गयी। राजकुमार उसकी पीठ पर बैठा और वह बुढ़िया उसको ले कर उड़ चली।

राजकुमार सीधे राजकुमारी के महल पहुॅचा और उस सूरज जैसी राजकुमारी को गुलाम्बरा और सुलाम्बरा की कहानी सुनायी।

राजकुमारी तो यह सुन कर आश्चर्यचकित रह गयी। अब वह अपनी शर्त के मुताबिक उससे शादी करने को तैयार थी। सो उनकी शादी हो गयी। राजकुमारी ने अपना सारा सामान उठाया और राजकुमार के साथ उसके पिता के राज्य जाने के लिये तैयार हो गयी।

जब वे नदी के किनारे आये तब उसका वह मुँहबोला भाई आया और उससे बोला — "तुम्हारी मुसीबत में मैंने तुमसे अपनी दोस्ती निभायी। और अब जबकि तुम खुश हो तो क्या हमारी दोस्ती टूट जायेगी। जो कुछ तुम्हें मिला वह तुम्हें मेरी दोस्ती की वजह से मिला अब तुम्हें उसे मुझसे बॉटना चाहिये।"

राजकुमार ने सब कुछ आधा आधा बॉट दिया फिर भी उसका मुँहबोला भाई सन्तुष्ट नहीं था। वह बोला — "मेरे साथ यह सब बॉटना तो ठीक है पर तुम्हारे पास तो राजकुमारी भी है। उसका क्या होगा।"

राजकुमार उठा और उसने अपने हिस्से का सामान भी उसको दे दिया। पर उसका मुँहबोला भाई उसको लेने के लिये तैयार नहीं था। वह उससे बोला — "अगर तुम्हें मुझसे अपनी दोस्ती कायम रखनी है तो तुम्हें मुझसे यह राजकुमारी भी बॉटनी पड़ेगी जो तुम्हारी सबसे ज़्यादा प्यारी चीज़ है।"

कहते हुए उसने राजकुमारी का हाथ पकड़ा और उसको एक पेड़ से बॉध दिया। फिर उसने अपनी तलवार निकाली और उसको

मारने ही वाला था कि डरी हुई राजकुमारी के मुँह से एक हरे रंग की धारा निकल पड़ी। भाई ने फिर से अपनी तलवार उठायी पर फिर से वही हुआ। उसने तीसरी बार तलवार उठायी पर फिर भी वही हुआ।

यह देख कर वह मुँहबोला भाई राजकुमारी के पास आया उसे खोला और उसे राजकुमार को सौंप दिया और राजकुमार से बोला — "हालाँकि राजकुमारी बहुत सुन्दर थी फिर भी वह जहरीली थी और जल्दी या देर से तुम्हें मार डालती। अब उसका सारा जहर निकल गया है सो अब तुमको उससे डरने की बिल्कुल जरूरत नहीं है।

अब तुम जा सकते हो भगवान तुम्हारी रक्षा करे। जहाँ तक इन सब चीज़ों का सवाल है ये सब तुम्हारी हैं। मुझे ये सब नहीं चाहिये। भगवान तुम्हें शान्तिपूर्वक रखे।"

फिर उसने अपनी जेब से एक रूमाल निकाला और उसे राजकुमार को देते हुए कहा — "जब तुम घर पहुँच जाओ तो इस रूमाल से अपने पिता की आँखें पोंछ देना वह देखने लग जायेंगे।

मैं वही मछली हूँ जो तुम्हारे महल में पानी के बर्तन में पड़ी हुई थी और जिसे तुमने आजाद किया था। इससे तुम यह जान लो कि किसी के ऊपर की गयी दया कभी खाली नहीं जाती।"

इतना कहने के बाद राजकुमार का मुँहबोला भाई वहीं गायब हो गया। राजकुमार एक बार फिर आश्चर्य में पड़ गया। इससे पहले

कि वह अपने उस भाई का धन्यवाद करता वह तो गायब ही हो चुका था।

आखिर जब वह अपने आपे में आया तो वह अपनी पत्नी के साथ अपने पिता के पास चला गया। उसने अपने भाई का दिया हुआ रूमाल अपने पिता की ऑखों पर रखा तो तुरन्त ही राजा की ऑखों की रोशनी वापस आ गयी।

जब उसने अपने बेटे और बहू को देखा तो वह तो इतना खुश हो गया कि उसकी ऑखों में तो ऑसू ही आ गये। फिर उसके बेटे ने उसको अपनी वह सारी कहानी सुनायी जो उसके साथ घटा था।

9 दो भाई[27]

एक बार की बात है कि एक जगह दो भाई रहा करते थे। दोनों के पास दस दस डबल रोटियाँ थीं। उन्होंने सोचा कि चलो बाहर चल कर अपनी अपनी किस्मत आजमाते हैं। बस वे उठे और उठ कर चल दिये।

कुछ दूर चलने के बाद उनको भूख लग आयी सो एक भाई ने दूसरे भाई से कहा — "पहले हम तुम्हारी रोटी खाते हैं। उसके बाद हम मेरी रोटी खायेंगे।"

दूसरा भाई इस बात पर राजी हो गया सो दोनों भाइयों ने मिल कर पहले दूसरे भाई की डबल रोटी खायी और खा पी कर वे फिर अपने रास्ते चल दिये। इसी तरह से वे चलते रहे और दूसरे भाई की दसों रोटियाँ खत्म हो गयीं।

रोटी खत्म होने के बाद पहला भाई बोला — "भाई अब तुम अपने रास्ते जाओ और मैं अपने रास्ते जाता हूँ। तुम्हारे पास अब कोई रोटी नहीं बची है और मैं तुम्हें अपनी रोटी खाने नहीं दूँगा।"

ऐसा कहते हुए वह अपने भाई को अकेले सफर करने के लिये छोड़ वहाँ से चल दिया। वह चलता गया चलता गया और एक घने जंगल में एक मिल के पास आ निकला।

---

[27] The Two Brothers (Tale No 9)

वह मिल वाले से मिला और बोला — "भगवान के लिये मुझे आज रात के लिये यहाँ ठहरने दो।"

मिल वाले ने कहा — "ठहरने को तो तुम यहाँ ठहर सकते हो पर यहाँ पर रात को बहुत मुश्किल होती है। जैसा कि तुम देख रहे हो मैं भी यहाँ पर रात को नहीं रहता। मैं भी सोने के लिये दूसरी जगह जाता हूँ। क्योंकि अभी यहाँ जंगल में जंगली जानवर निकल आयेंगे और शायद वे फिर यहाँ भी आ जायेंगे।"

पहला भाई बोला — "तुम मेरे लिये बिल्कुल मत डरो। मैं यहीं ठहरूँगा। जानवर मुझे नहीं मार सकते।"

मिल वाले ने उसको बहुत समझाने की कोशिश की कि वह वहाँ ठहर कर अपनी ज़िन्दगी खतरे में न डाले पर जब उसने देखा कि उसकी बात का उसके ऊपर कोई असर ही नहीं हो रहा तो वह उठा और अपने घर चला गया। और पहला भाई वहीं मिल में चला गया और सो गया।

अब न जाने कहाँ से एक बड़ा भालू वहाँ आ गया। उसके पीछे एक भेड़िया और एक गीदड़ भी आये। उस मिल में आ कर वे तीनों बहुत शोर मचाने लगे। फिर वे कूदने लगे जैसे कि वे सब नाच रहे हों।

यह सब देख कर पहला भाई बहुत डर गया और डर के मारे काँपने लगा। वह एक तरफ को लेट गया और डर के मारे कुछ कुछ बोलने लगा।

आखिर भालू बोला — "चलो हम सब एक दूसरे को वह सुनाते हैं जिसने जो देखा हो या जो सुना हो।"

पर भेड़िया और गीदड़ बोले — "हॉ हॉ हम सब सुनायेंगे पर पहले तुम शुरू करो।"

सो भालू ने सुनाना शुरू किया — "एक पहाड़ी पर जिसको मैं बहुत अच्छी तरह जानता हूँ एक चूहा रहता है। इस चूहे के पास बहुत सारा पैसा है। जब धूप निकलती है तब वह उसे वह धूप में फैला देता है।

अगर कोई इस चूहे का बिल जानता हो और वहॉ किसी धूप वाले दिन जाये जब उसने अपना पैसा फैला रखा हो और उस चूहे को डंडे से मार दे तो वह बहुत अमीर हो जाये।"

भेड़िया बोला — "हॉ यह तो है। पर यह तो कोई बहुत बड़ी बात नहीं हुई। मैं एक ऐसे शहर को जानता हूँ जहॉ कोई पानी नहीं है। वहॉ बहुत थोड़ा सा पानी भी लोग बहुत दूर दूर तक ले जाते हैं। और उसकी उनको बहुत कीमत देनी पड़ती है।

पर वहॉ के लोग यह नहीं जानते कि शहर के बीचोबीच एक पत्थर के नीचे बहुत सुन्दर साफ पानी है। अगर कोई भी इस बात को जाने और उस पत्थर को वहॉ से हटा दे तो वह तो बहुत अमीर हो जायेगा और शहर के सब लोगों को पानी भी मिल जायेगा।"

गीदड़ बोला — "यह तो कुछ भी नहीं। मैं एक ऐसे राजा को जानता हूँ जिसके एक अकेली बेटी है। वह तीन साल से अपंग पड़ी

है पर कोई यह नहीं जानता कि उसकी दवा क्या है। जबकि उसकी बीमारी का एक बड़ा सादा सा इलाज है।

अगर कोई उसको बीच पेड़ की पत्तियों के पानी से नहला दे तो वह बिल्कुल ठीक हो जायेगी। अब सोचो अगर कोई उसको ठीक कर देगा तो वह कितना मालामाल हो जायेगा। पर कोई इस बात को जाने तब न।"

जब उन्होंने सबने अपनी अपनी कहानियाँ सुना कर खत्म कीं बस तभी दिन की पहली रोशनी फूटने लगी। यह देख कर भालू भेड़िया और गीदड़ तीनों वहाँ से जंगल में चले गये।

पहला भाई मिल में से बाहर निकला भगवान को धन्यवाद दिया और उस पहाड़ी की तरफ चल दिया जिस पर वह अमीर चूहा रहता था जिसके बारे में भालू बोला था।

वह उस पहाड़ी पर आया तो उसे पता चला कि उसकी कहानी तो सच्ची थी। वहाँ वह चूहा भी था और उसने अपना पैसा भी धूप में फैला रखा था।

बस वह एक डंडा ले कर उधर बिना आवाज किये चला गया और मौका मिलते ही चूहे को मार दिया। फिर उसने वहाँ से सारा पैसा इकट्ठा किया और पहाड़ी से नीचे चला आया।

वहाँ से वह फिर बिना पानी वाले शहर में गया। वहाँ आ कर उसने शहर के बीच में रखा वह पत्थर हटाया जिसके नीचे पानी था। पत्थर हटाते ही वहाँ से तो पानी की धारा बह निकली। पानी

देखते ही शहर वाले बहुत खुश हो गये और उसको इनाम में बहुत कुछ दिया।

अब वह सब ले कर वह उस शहर पहुँचा जिस देश के राजा की बेटी तीन साल से बीमार थी। उसने राजा से कहा — "अगर मैं आपकी बेटी को ठीक कर दूँ तो आप मुझे क्या देंगे।"

राजा बोला — अगर तुम मेरी बेटी को ठीक कर दोगे तो मैं अपनी बेटी की शादी तुमसे कर दूँगा।"

यह सुन कर पहले भाई ने दवा तैयार की राजकुमारी को उस पानी से नहलाया और वह ठीक हो गयी। राजा बहुत खुश हुआ उसने अपनी बेटी की शादी उससे कर दी।

अब यह कहानी दूसरे भाई के पास पहुँची कि उसका भाई अमीर हो गया तो वह अपने भाई से मिलने चल दिया। चलते चलते वह अपने भाई के पास आ पहुँचा। उसने अपने भाई से पूछा — "यह सब कैसे हुआ भाई ज़रा मुझे भी तो बताओ।"

पहले भाई ने उसको सब कुछ विस्तार में बता दिया तो दूसरे भाई ने कहा — "मैं भी वहाँ जाता हूँ और उस मिल में एक दो रात रुकूँगा।"

उसके भाई ने उसको बहुत समझाया कि वह ऐसा न करे पर वह नहीं माना सो पहला भाई बोला — "अगर तुम नहीं मानते तो जाओ पर मैं तुम्हें फिर चेतावनी दे रहा हूँ कि तुम वहाँ मत जाओ। क्योंकि तुम्हारा वहाँ जाना खतरे से खाली नहीं है।"

पर वह नहीं माना और वहॉ चला गया। वह मिल में जा कर छिप गया और वहॉ सारी रात रहा।

रात को न जाने कहॉ से फिर से वे ही पुराने जानवर वहॉ आ पहॅुचे - भालू भेड़िया और गीदड़। भालू बोला — "उस दिन मैंने तुमको जो चूहे की कहानी सुनायी थी उस चूहे को किसी ने मार दिया और उसका सारा पैसा ले गया। क्योंकि अब न तो वहॉ पर चूहा है और न ही उसका पैसा।"

भेड़िया बोला — "और मैंने जिस शहर के बारे में तुम लोगों को बताया था कि वहॉ पानी नहीं है वहॉ किसी ने जा कर वह पत्थर उठा दिया है और अब तो वहॉ पानी धड़ाके से बह रहा है।"

गीदड़ बोला — "और मैंने तुम लोगों को जिस बीमार राजकुमारी के बारे में बताया था वह अब ठीक भी हो गयी है और उसकी शादी भी हो गयी है।"

भालू बोला — "इससे ऐसा लगता है जैसे उस दिन कोई हमारी बात सुन रहा था। हो सकता है वह अभी भी यहीं हो।

सब बोले — "तब हमको उसे चल कर देखना चाहिये। फिर उसके बाद हमारी बातें कोई नहीं सुनेगा।"

वे सब इधर उधर देखने चले गये। उन्होंने चारों तरफ देखा तो उनको यह दूसरा भाई दिखायी दे गया। बस उन्होंने उसको पकड़ लिया और उसको फाड़ कर उसके टुकड़े टुकड़े कर दिये।
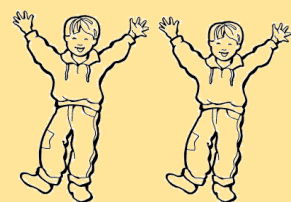
10 राजकुमार[28]

एक बार की बात है कि एक जगह एक राजा था जिसके पास बहुत कुछ था। पर उसकी पत्नी के कोई बच्चा नहीं था इसलिये वह बहुत दुखी रहता था।

एक दिन वह बहुत उदास बैठा था कि एक दरबारी उसके पास आया और बोला — "ओ ताकतवर योर मैजेस्टी, आपके कोई बेटा नहीं है और आपने किसी को कुछ दिया भी नहीं है। तो आपकी प्रजा आपके बारे में क्या सोचेगी। आपने जो इतनी धन दौलत इकट्ठी कर रखी है आप इसका क्या करेंगे।"

अपने दरबारी के यह शब्द राजा के दिल को लग गये। उसने सोचा यह दरबारी कहता तो ठीक ही है मेरी इतनी सारी धन दौलत का क्या होगा। सो उसने अगले दिन ही अपनी प्रजा के लिये एक बहुत बड़ी दावत का इन्तजाम किया और उसमें उसने खूब दान दिया।

उसी समय न जाने कहॉ से एक बुढ़िया वहॉ आयी। वह राजा के पास आयी और बोली — "अगर मैं तुम्हें एक बेटा दूॅ तो तुम मुझे क्या दोगे।"

राजा बोला — "जो तुम मॉगोगी मैं तुम्हें वही दूॅगा।"

[28] The Prince (Tale No 10)

इस पर बुढ़िया ने अपनी जेब से एक सेब निकाला उसे तीन हिस्सों में काटा और राजा को देते हुए बोली — "इसको अपनी पत्नी को खाने के लिये दे देना। इससे उसको तीन बच्चे होंगे। पर याद रखना कि मैं सात साल बाद आऊँगी तब तुम मुझे अपने उन तीनों बेटों में से सबसे छोटा बेटा मुझे दे देना।"

राजा ने हामी भर दी। वह सेब उसने अपनी रानी को खाने के लिये दे दिया और रानी ने उसे खा लिया। समय आने पर रानी ने तीन बेटों को जन्म दिया। उनका सबसे छोटा बेटा सबसे ज़्यादा सुन्दर था।

राजा जब अपने तीनों बेटों के देखता तो वह तो यह सोच भी नहीं सकता कि वह अपने सबसे छोटे बेटे को किसी को दे देगा।

उसने अपने मन में सोचा "मैं अपने इस बेटे को नौ तालों में बन्द कर के रखूँगा। और जब वह बुढ़िया आयेगी तब मैं उससे कह दूँगा कि मेरा सबसे छोटा बेटा मर गया। पर वह मेरे दोनों बड़े बेटे ले जाना चाहे तो ले जा सकती है।"

सात साल जाते कितनी देर लगती है। सात साल हवा की तरह से उड़ गये। और सात साल बाद वह बुढ़िया राजा के दरवाजे पर खड़ी थी। उसने राजा का सबसे छोटा बेटा माँगा।

राजा ने वैसा ही किया जैसा उसने सोचा था। उसने अपने सबसे छोटे बेटे को नौ तालों में बन्द कर दिया और बुढ़िया से कहा

— "मेरा सबसे छोटा बेटा तो मर गया है पर मेरे ये दोनों बड़े बेटे यहाँ है तुम इन्हें ले जाओ।"

अब वह बुढ़िया तो उसका विश्वास ही न करे। उसने उसके छोटे बेटे को ढूँढने के लिये महल का हर कोना छाना नौ ताले भी खोले और राजा के सबसे छोटे बेटे को ले गयी। वह उसको अपने साथ ले कर अपने घर चली गयी।

कुछ दूर जाने पर वे एक नदी के पास आये जहाँ एक बुढ़िया मैली चादरें आदि धो रही थी। जब उसने सुन्दर राजकुमार को देखा तो उसको पुकारा और दुखी हो कर कहा — "क्या तुझे मालूम है कि तू अपनी बदकिस्मती की तरफ ले जाया जा रहा है। तू उस जादूगरनी के पीछे जा ही क्यों रहा है। तू यकीनन उसके हाथों से ज़िन्दा नहीं बच सकता। वह तुझे मार देगी।"

जब राजकुमार ने यह सुना तो वह उस जादूगरनी के पास गया और उससे कहा — "ज़रा मैं इस बुढ़िया से बात कर लूँ मैं अभी तुम्हारे साथ चलता हूँ।" जादूगरनी ने उसको जाने की इजाज़त दे दी।

राजकुमार अपने घर चला गया एक प्याले में पानी भरा और आग के पास रख दिया। यह कर के वह बोला — "जब यह पानी खून में बदल जायेगा तो मैं मर जाऊँगा और अगर यह ऐसे ही साफ रहा तो मैं ज़िन्दा रहूँगा।"

इसके बाद वह वहाँ से चला गया और जा कर उस जादूगरनी से मिल गया फिर दोनों साथ साथ आगे चलने लगे।

चलते चलते वे एक ॲधेरी घाटी में पहुँच गये। उसके दोनों तरफ पहाड़ थे। उस जादूगरनी का घर वहीं एक चट्टान की गुफा में था।

उसके घर में तीन बेटियाँ थीं दो घोड़े थे एक उसके अपने लिये और एक उसकी बेटियों के लिये। बुढ़िया अन्दर गयी और राजकुमार को अपनी बेटियों को सौंपा और जा कर सो गयी।

अब इस जादूगरनी को सात दिन सात रात तक सोने की आदत थी और उस समय उसको कोई उठा भी नहीं सकता था।

जब उसकी बेटियों ने राजकुमार को देखा तो वह उनको बहुत अच्छा लगा तो उन्होंने आपस में बात की कि यह कितना सुन्दर राजकुमार है इसको मारना ठीक नहीं है। हम इसको अपनी माँ को खाने नहीं देंगे। हमें इसकी इसके भाग जाने में सहायता करनी चाहिये।

सब बहिनें एक साथ बोलीं "हाँ हम इसके भाग जाने में इसकी सहायता करेंगे।" और उन्होंने उसको भगा देने का प्लान बनाया।

उनमें से एक ने कहा — "अगर हमारी माँ तुमको पकड़ ले तो तुम यह कंघा अपने पीछे फेंक देना। इससे तुम्हारे और उनके बीच में एक बहुत ही घना जंगल पैदा हो जायेगा और हमारी माँ को उसे पार करने में बहुत मुश्किल होगी।"

दूसरी बहिन ने उसको एक कैंची दी और कहा — "जब हमारी मॉ तुमको पकड़ लें तो तुम यह कैंची अपने पीछे फेंक देना तो तुम्हारे और उनके बीच में ऊँची नीची बहुत सख्त चट्टानें खड़ी हो जायेंगी जिनको पार करने में उनको बहुत मुश्किल होगी और तुम इतनी देर में जल्दी से भाग जाना।"

सबसे छोटी बहिन ने उसको नमक का एक डला दिया और कहा — "जब हमारी मॉ तुमको पकड़ लें तो तुम यह नमक का डला अपने पीछे फेंक देना तो तुम दोनों के बीच में एक समुद्र पैदा हो जायेगा जिसे हमारी मॉ पार नहीं कर पायेगी।"

यह सब कह कर उन्होंने उसको जीन कस कर अपना वाला घोड़ा दिया और वह सब भी उसको दिया जो वह चाहता था और वहॉ से उसको भेज दिया। राजकुमार ने भी उनसे वे तीनों चीज़ें लीं घोड़े पर सवार हुआ उन्हें धन्यवाद दिया और अपने घर की तरफ चल दिया।

सात दिन बीत जाने के बाद जादूगरनी जागी तो उसने अपना खाना ढूँढा पर वह तो वहॉ था ही नहीं। वह अपने घोड़े के पास गयी और उससे पूछा — "पहले हम रोटी खा लें या फिर तुरन्त ही चल दें?"

घोड़े ने जादूगरनी से कहा — "चाहे हम रोटी खायें या न खायें पर हम उसको पकड़ नहीं सकते।"

पर जादूगरनी ने अपना इरादा नहीं छोड़ा। उसने अपनी रोटी खायी घोड़े पर चढ़ी और राजकुमार को ढूँढने चल दी। कुछ दूर जाने के बाद ही उसने राजकुमार को पकड़ लिया।

राजकुमार ने पीछे मुड़ कर देखा और बुढ़िया को अपने पास आते देख कर उसने अपनी जेब से कंघा निकाला और अपने पीछे फेंक दिया। कंघा पीछे फेंकते ही उन दोनों के बीच में इतना घना जंगल पैदा हो गया कि उसमें से एक मक्खी भी नहीं गुजर सकती थी।

बुढ़िया का रास्ता रुक गया था जिससे वह कुछ नाराज सी हो गयी। पर किसी तरह से वह उसको पार कर गयी। जंगल पार कर के जब वह खुली जगह में पहुँची तो उसने अपने घोड़े को एड़ लगायी और फिर से राजकुमार को पकड़ लिया।

राजकुमार ने फिर बुढ़िया जादूगरनी को आते देखा तो इस बार उसने अपनी कैंची निकाली और अपने पीछे फेंक दी। कैंची पीछे फेंकते ही उन दोनों के बीच में लोहे की तरह सख्त पहाड़ी खड़ी हो गयी। उसे कोई लोहा नहीं काट सकता था।

उसको पार करने में जादूगरनी के घोड़े के खुर कट गये इससे वह और आगे नहीं जा सका और वहीं गिर पड़ा पर वह जादूगरनी भी छोड़ने वाली नहीं थी। वह घोड़े से कूदी और पैदल ही चलने लगी। उसने वह पहाड़ी पार की और मैदान में पहुँच कर फिर जल्दी जल्दी चलने लगी।

वह धरती के ऊपर उड़ी जैसे उसके पंख लगे हों। उड़ कर उसने फिर से राजकुमार को पकड़ लिया। राजकुमार ने देखा कि जादूगरनी तो फिर चली आ रही है तो अबकी बार उसने अपनी जेब से नमक का डला निकाला और अपने पीछे फेंक दिया।

नमक का डला फेंकते ही उन दोनों के बीच एक समुद्र पैदा हो गया इतना बड़ा कि उसको कोई चिड़िया पार नहीं कर सकती थी। बुढ़िया बहुत निडर थी। वह इससे भी नहीं डरी और समुद्र में चल दी। उसका इरादा था कि वह उसको पार कर लेगी पर वह उसमें डूब गयी।

राजकुमार आगे बढ़ता जा रहा था। पर वह अक्सर पीछे भी देख लेता था। उसने देखा कि अब वह बुढ़िया कहीं नहीं थी। यह देख कर वह बहुत खुश हो गया और खुशी खुशी आगे बढ़ता गया। पर उसको यह पता नहीं था कि वह कहाँ जा रहा है।

चलते चलते उसे भूख लग आयी। आखिर उसको एक जगह आग जलती दिखायी दी। वह वहाँ गया तो उसने देखा कि वहाँ तो एक बहुत बड़ी आग जल रही है और उसके ऊपर शराब की एक केटली थी और खाना बन रहा था। उसके चारों तरफ नौ देव[29] लेटे हुए थे। ये सब आपस में भाई थे।

वे सब बहुत ज़ोर से सो रहे थे। पर उनमें एक लंगड़ा देव भी था जो इन सबको देख रहा था। राजकुमार ने देवों से इजाज़त लेने

[29] Devi seems like some demon type of beings like Indian Dev Daanav.

का इन्तजार नहीं किया वह तो बस आया आग के ऊपर से बर्तन उठाया उसमें से खाना खा कर उसको फिर से आग पर रख दिया और फिर वह भी वहीं लेट गया और खर्राटे मारने लगा।

लॅगड़ा देव आश्चर्य से दूर से यह आश्चर्य से देख रहा था।

कुछ देर बाद एक देव उठा। उसने इधर उधर देखा तो देखा कि वहॉ तो एक आदमी सो रहा है। उसको देख कर उसने खुशी से कहा — "आहा आज तो यह हमारे लिये बहुत अच्छा खाना है।" कह कर वह उस लड़के की तरफ चल दिया।

पर लंगड़ा देव बोला — "तुम उसको छोड़ दो। उसको तुम छूना भी नहीं। हमें उसको डराना है। उसने आग पर से हमारा बर्तन उठा कर उसमें से खाना खाया है और खाना खा कर फिर से उसे आग पर रख दिया है। उसने वह किया है जो हम दस लोगों के लिये भी करना मुश्किल है।"

देव ने सोचा यह तो यह ठीक कह रहा है और वहॉ से चला गया। एक और देवी उठा और उसने भी यही करना चाहा जो पहले वाला करना चाह रहा था पर लंगड़े देव ने उसको भी रोक दिया। इसी तरह से सारे देव उठे और उन सबने वही करना चाहा जो पहले वाले देव ने करना चाहा था पर लंगड़े देव ने सबको रोक दिया।

जब सारे देव उठ गये तब सबने खाना शुरू कर दिया। उसी समय राजकुमार भी उठा। वह देवों के पास आया और उनसे उससे भाईचारे के लिये प्रार्थना की।

देवों ने पूछा — "तुम कौन हो जो इतनी हिम्मत वाले हो। और तुम यहाँ क्यों आये हो।"

राजकुमार बोला — "मैं तो भूखा था। मैंने आग देखी सो मैं इधर चला आया।"

देव बोले — "अगर तुम यह चाहते हो कि हम तुम्हारे साथ भाईचारे की कसम खायें तो पहले तुम वहाँ तक जाओ जहाँ तुम्हें एक चौराहा मिलेगा। वहाँ तुमको एक लड़की रूमाल बिछाये मिलेगी। अगर तुम उसका रूमाल हमें ला कर दे दो तब हम तुम्हारे साथ भाईचारे की कसम खा सकते हैं।

और अगर तुम उसका वह रूमाल नहीं ला सके तो फिर हमारा तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं। बहुत सारे लोगों ने उस लड़की का वह रूमाल लेने की कोशिश की है पर वे ले नहीं पाये। वह लड़की उनको हमेशा ही मार देती है।"

देवों ने सोचा कि इस तरह से यह राजकुमार भी मारा जायेगा और इस तरह से वे उससे छुटकारा पा जायेंगे।

राजकुमार चल दिया और एक चौराहे पर आया और लो वहाँ तो एक बहुत सुन्दर लड़की उड़ कर नीचे आयी। एक रूमाल उसके आगे आगे फैला हुआ आ रहा था इससे वह लड़की को देख नहीं पा रहा था।

राजकुमार उसके सामने आया और उसने वह रूमाल पकड़ लिया। पर जैसे ही वह रूमाल ले कर जाने वाला था कि उस लड़की

ने उसके ऊपर हमला किया। राजकुमार उस लड़ाई में जीत गया। लड़ाई में राजकुमार के हाथ में उस लड़की का एक सुनहरा जूता रह गया।

लड़की का रूमाल ले कर वह देवों के पास आया और उनको उसका सुनहरा जूता दे कर कहा — "आप लोग शहर जायें वहाँ इसको बेच कर मुझे इसके पैसे ला कर दें।"

देवों ने लंगड़े देव को वह सुनहरा जूता दे कर शहर भेज दिया। शहर जा कर वह एक सौदागर से मिला और उसे वह जूता दिखाया।

उस जूते को देख कर वह सौदागर बोला — "मेरी पत्नी के पास ऐसे ही सुनहरी जूते हैं। ऐसा लगता है कि तुमने उसका जूता चुरा लिया है।"

लंगड़ा देव कसम खा कर बोला — "नहीं हमने यह जूता चुराया नहीं है हमने तो यह जूता पाया है।"

पर उस सौदागर को उसकी बात पर पर विश्वास ही नहीं हुआ। उसने देवी से वह जूता तो ले लिया और उसे ताले में बन्द कर दिया।

दूसरे देवों ने उसका बहुत देर तक इन्तजार किया पर जब वह नहीं आया तो उन्होंने अपने नवें भाई को उसे ढूँढने भेजा। जब वह शहर में पहुँचा जहाँ लंगड़ा देव जूता बेचने गया था तो वहाँ जा कर उसने अपने लंगड़े भाई के बारे में पूछताछ की।

उसको लंगड़े देव के बारे पूछताछ करते देख कर उन्होंने सोचा यह आदमी यकीनन उस चोर का साथी होगा। यह सोच कर उन्होंने उसको भी ताले में बन्द कर दिया।

बचे हुए देवों ने अपने नवें भाई का इन्तजार किया और जब उन्होंने देखा कि वह भी लौट कर नहीं आया तो उन्होंने अपने आठवें भाई को भेजा। उन लोगों ने उसको भी ताले में बन्द कर दिया। फिर सातवॉ गया फिर छठा गया इस तरह सभी भाई वहॉ गये पर सबको ताले में बन्द कर दिया गया।

जब सब देव ताले में बन्द हो गये और कोई वापस लौट कर नहीं आया तो राजकुमार ने सोचा "ऐसा सबके साथ क्या हो सकता है कि कोई भी वापस लौट कर नहीं आया। मैं जाता हू और मैं ढूॅढता हॅू उनको। हो सकता है कि मुझे पता चल जाये कि वे किस मुसीबत में फॅस गये हैं।"

ऐसा सोच कर वह उठा और शहर की तरफ चल दिया। वहॉ जा कर उसने भी लंगड़े देव के बारे में पूछताछ की। जब सौदागर को पता चला कि फिर कोई लंगड़े देव को पूछता चला आ रहा है तो उसने उसको भी पकड़ना चाहा।

पर राजकुमार बोला — "अगर मैं अपने सुनहरे जूते का दूसरा जूता नहीं पाऊॅगा तो आप मुझे झूठा कह सकते हैं और फिर आप मेरे और देवियों के साथ जो कुछ करना चाहें वह कर सकते हैं।

पर अगर वह मुझे मिल गया और आप लोगों ने झूठ बोला तो फिर जो हम आपके साथ करना चाहेंगे वह करेंगे।"

सौदागर बोला "ठीक है।"

सो राजकुमार उस सुनहरी जूते का दूसरा जूता देखने के लिये चल दिया। वह बहुत दूर तक गया और एक ऐसे राज्य में आया जो समुद्र के किनारे था। इस राज्य पर एक सूरज जैसी चमकती लड़की राज करती थी।

जो भी उस राज्य में गेंहू बेचने जाता था उसको उस लड़की से मिलना पड़ता था। वह लड़की उस गेंहू को और उस गेंहू के लाने वाले दोनों को समुद्र में फिंकवा देती थी और वहाँ से कोई बच नहीं सकता था।

जब राजकुमार ने यह सुना तो उसने सोचा कि वह इस देश में गेंहू ले कर आयेगा और देखेगा कि वह लड़की उसके साथ क्या करती है। वह गेंहू लाने गया और गेंहू से एक नाव भर कर उस राज्य को लौटा।

जब वह समुद्र के किनारे के पास आया तो न जाने कहाँ से एक सुन्दर लड़की वहाँ आयी। उसने अपना हाथ फैलाया और वह गेंहू वाली नाव डुबोने को थी कि राजकुमार ने नाव में अपना पैर मारा जिससे वह नाव हिल गयी और नाव डूबने से बच गयी।

फिर उसने उस लड़की का हाथ पकड़ लिया और उसको अपनी तरफ खींचा। यह देख कर कि उसकी कोशिश बेकार कर दी गयी

है उस लड़की ने अपनी पूरी ताकत लगा कर अपने आपको उससे खींचा। वह तो उसके हाथ से निकल आयी पर उसकी अँगूठी राजकुमार के हाथ में रह गयी।

इस तरह से उसने उस लड़की को हरा दिया था। इसके बाद अब जो भी वहाँ गेंहू लाना चाहता था ला सकता था और उस राज्य में अब बहुत सारा गेंहू था।

उस देश के लोग राजकुमार के पैरों पर गिर पड़े और उसके घुटनों को चूमा। उन्होंने उससे प्रार्थना की कि वह उनका राजा बन जाये। पर वह तो उनका राजा बनने वाला नहीं था।

उसने कहा — "मैं तो यहाँ किसी दूसरे काम से आया हूँ। असल में तो मुझे केवल एक खास जूते की तलाश है और मुझे कुछ नहीं चाहिये।" और फिर उसने उनको अपनी कहानी बता दी।

वहाँ उसको वह जूता नहीं मिला तो वह उस राज्य को छोड़ कर फिर आगे चला और एक दूसरे देश में आया। यहाँ आ कर उसे पता चला कि एक सुन्दर लड़की ने राजा के बेटे को मार दिया है और उसको एक तहखाने में दफ़न कर दिया गया है।

अब हर रात वह लड़की वहाँ आती है और उसको डंडियों से मारती है। ऐसा करने से वह राजा का बेटा फिर से ज़िन्दा हो जाता है। उसके बाद वे दोनों खाना खाते हैं और सुबह तक का समय आनन्द से गुजारते हैं।

सुबह को वह उसे फिर डंडे से मारती है जिससे वह फिर से लाश बन जाता है और वह लड़की वहाँ से उड़ जाती है।

जब राजकुमार ने उस नौजवान की यह कहानी सुनी तो उसने उसकी सहायता करने का फैसला कर लिया। वह उसकी कब्र में घुसा और वहाँ उस लड़की का इन्तजार करने लगा।

कुछ ही देर में वह लड़की वहाँ उड़ती हुई आयी। उसने अपनी जेब से डंडियाँ निकालीं और उनसे राजा के बेटे को मारती रही जब तक वह ज़िन्दा नहीं हो गया।

फिर उन्होंने खाना खाया और रात भर आनन्द मनाते रहे। सुबह होने पर जैसे ही वह लड़की उसको डंडियों से मारने वाली थी कि हमारे राजकुमार ने उसके हाथ से डंडियाँ छीन लीं। इस तरह से वह राजा के बेटे को डंडिया नहीं मार पायी और वह ज़िन्दा रहा।

राजकुमार उसको फिर उसके पिता के पास ले गया। राजा अपने बेटे को ज़िन्दा पा कर बहुत खुश हुआ और राजकुमार को अपना राज्य देने के लिये कहा पर वह राजा बनना नहीं चाहता था।

उसने कहा — "मैं एक खास सुनहरे जूते की तलाश में हूँ अगर मुझे वह मिल जाये तो मैं खुश हूँ। मुझे उसे ढूँढना है इसलिये मैं चलता हूँ।" कह कर वह वहाँ से चल दिया।

कुछ दूर चलने के बाद वह एक खुले मैदान में आ गया। वहाँ उसने एक बहुत सुन्दर घर देखा। उसको देख कर उसने सोचा

“पता नहीं यहाँ कौन रहता होगा।” और वह उस घर की तरफ चल दिया।

रास्ते में उसको एक अरब कुछ खच्चरों को खाना खिलाता दिखायी दिया। उसने उससे पूछा — “भाई क्या तुम जानते हो कि यह घर किसका है। यहाँ कौन रहता है।”

अरब ने इधर उधर देखा और बोला — “मैं तुम्हारा सिर पहले खाऊँ या पैर पहले खाऊँ।”

राजकुमार बोला — “मैंने तो तुमसे इस घर के बारे में पूछा था तो तुम उसका जवाब क्यों नहीं देते।”

अरब ने फिर चारों तरफ देखा और बोला — “मैं तुम्हें सिर से खाऊँ या फिर पैर से।”

राजकुमार फिर बोला — “जहाँ तक खाने का सवाल है मैं तुम्हें अभी बताता हूँ कि मैं क्या करने वाला हूँ।” कह कर राजकुमार ने अरब को इतनी ज़ोर से मारा कि वह नौ पहाड़ के दूसरी तरफ जा कर पड़ा। फिर उसने खच्चरों को मारा और घर आया।

वह उस घर के चारों तरफ घूमता रहा और उसको देख कर बहुत खुश हुआ। फिर वह खिड़की से हो कर घर में घुसा और उसके सब कमरे देख आया। इन कमरों में से एक कमरे में एक सोने का सिंहासन रखा था और उस पर रखे थे सोने के जूते जैसे कि वह ढूँढ रहा था।

उसने अपने मन में सोचा "शायद यह उसी लड़की का घर है जिसका जूता मेरे पास है। मैं यहाँ इन्तजार करता हूँ और देखता हूँ कि क्या होता है।" वह सिहासन के नीचे छिप कर बैठ गया और इन्तजार करने लगा।

जल्दी ही वहाँ एक बहुत सुन्दर लड़की उड़ती हुई आयी। फिर दूसरी फिर तीसरी और आखीर में वह अरब। वे चारों खाना खाने बैठ गये। पलक झपकते ही अरब ने उन तीनों लड़कियों के लिये कपड़ा बिछा दिया। और जो कुछ जिसकी इच्छा हुई वह सब उसके लिये वहाँ उस कपड़े पर आ कर रखा गया।

कुछ समय बाद सबसे बड़ी बहिन ने अपना शराब का कटोरा उठाया और बोली — "भगवान उस नौजवान को लम्बी उम्र दे जो मुझसे मेरा रूमाल और मेरा सुनहरा जूता ले गया।" यह कह कर उसने वह शराब पी और शराब का कटोरा नीचे रख दिया।

उसके बाद दूसरी बहिन ने अपना शराब का कटोरा उठाया और बोली — "उस नौजवान की लम्बी उम्र के लिये जिसने मेरे हाथ से मेरी अँगूठियाँ छीन लीं और एक राज्य को गेंहूँ दिया।" उसने भी अपने शराब के कटोरे में से शराब पी और कटोरा नीचे रख दिया।

फिर सबसे छोटी बहिन ने अपना शराब का कटोरा उठाया और बोली — "यह जाम उस नौजवान की लम्बी ज़िन्दगी के नाम जिसने मेरे हाथ से डंडियाँ छीनीं और राजा के बेटे को ज़िन्दगी दी।"

उसके बाद अरब ने अपना शराब का प्याला उठाया और बोला — "यह जाम उस नौजवान की लम्बी उम्र के नाम जिसने मुझको इतनी ज़ोर से मारा कि मैं नौ पहाड़ों के उस पार जा कर पड़ा।" कह कर उसने भी उस प्याले में से शराब पी कर अपना प्याला नीचे रख दिया।

यह सुन कर राजकुमार सिंहासन के नीचे से निकला शराब का एक प्याला उठाया और बोला — "मुझे भी यह जाम किसी के नाम में पीना है। यह जाम उस लड़की की लम्बी ज़िन्दगी के नाम जिसका मैंने रूमाल लिया है।" कह कर उसने शराब पी और शराब का प्याला नीचे रख दिया। फिर उसने अपनी जेब से रूमाल निकाला और सबसे बड़ी बहिन को दे दिया।

उसने फिर शराब का प्याला उठाया और बोला — "यह जाम उस लड़की की लम्बी ज़िन्दगी के नाम जिससे मैंने ॲगूठियाॅ लीं।" कह कर उसने शराब पी और शराब का प्याला नीचे रख दिया। फिर उसने अपनी जेब से ॲगूठियाॅ निकालीं और दूसरी बहिन को दे दीं।

उसने फिर अपना शराब का प्याला उठाया और बोला — "यह जाम उस लड़की की लम्बी ज़िन्दगी के नाम जिससे मैंने डंडियाॅ लीं।" कह कर उसने शराब पी और शराब का प्याला नीचे रख दिया। फिर उसने अपनी जेब से डंडियाॅ निकालीं और तीसरी बहिन को दे दीं।

फिर वह अरब की तरफ घूमा और बोला — "यह जाम उस अरब की लम्बी ज़िन्दगी के नाम जिसको मैंने नौ पहाड़ों के उस पार फेंक दिया था।"

उसके बाद तो तीनों बहिनें कूद पड़ीं कि "यह शादी मुझसे करेगा।" "नहीं नहीं यह शादी मुझसे करेगा।" और उन तीनों ने आपस में लड़ना शुरू कर दिया।

राजकुमार बोला — "तुम लोग आपस में क्यों लड़ती हो। मैं सबसे छोटी लड़की से शादी करूँगा क्योंकि मैं अपने तीन भाइयों में सबसे छोटा हूँ। और तुम दोनों बड़ी बहिनें मेरे दोनों बड़े भाइयों से शादी करना।

लड़कियों ने पूछा — "इधर की तरफ आने का तुम्हारा क्या काम है।"

राजकुमार बोला — "मैं यहाँ दूसरा सुनहरा जूता ढूँढने के लिये आया था पर मुझे तो वह यहीं मिल गया। इस जूते की वजह से नौ देव भाई एक शहर में कैद हैं। और अगर मैं इसके बिना वहाँ गया तो मैं भी उनके साथ ही वहाँ कैद हो जाऊँगा।"

बहिनें बोली — "यह जूता तुम्हारा है। इसके अलावा और भी जितने जूते तुम्हें चाहिये तुम ले जा सकते हो। तुम अरब की पीठ पर बैठ जाओ और तुम तीन घंटे में उस शहर में पहुँच जाओगे।"

राजकुमार ने वैसा ही किया जैसा उन बहिनों ने उससे करने के लिये कहा था। उसने सुनहरे जूतों से एक थैला भरा अरब की पीठ पर बैठा और तीन घंटे में वह उस शहर में था।

उसको देख कर देवी लोग बहुत खुश हुए। उन्होंने सौदागर को बुलाया तो वह जूते ले कर आया। उसने एक एक कर के अपने सारे जूते निकाले पर उस एक सुनहरी जूते जैसा उनमें से कोई नहीं था। उसके बाद राजकुमार ने अपने थैले में से जूते निकाले तो सौदागर झूठा साबित हुआ। क्योंकि वे सब जूते लंगड़े देव के जूते जैसे थे।

राजकुमार ने सौदागर को देवियों को सौंप दिया और कहा "इसका तुम लोग जो चाहे वह करो। इसका सब कुछ बेच दो या और जो कुछ भी। पर मुझे इजाज़त दो मुझे अभी अपने रास्ते जाना है।"

जब देवियों ने यह सुना तो उन्होंने राजकुमार को अपने पास रुक जाने के लिये कहा पर वह नहीं माना। वह वहाँ से तीनों बहिनों के पास आया और सबसे छोटी वाली लड़की से शादी कर ली।

तीनों बहिनों ने अरब को एक घोड़े पर टाँगने वाला थैला दिया जिसमें उनके लिये वह सब कुछ था जो उनको सफर के लिये चाहिये था और उसके हाथ में एक पेड़ दिया और कहा — "राजकुमार के पिता के राज्य में जाओ और जब उनके महल के पास फलाँ जगह पहुँचो तो यह पेड़ वहाँ लगा देना।

यह एक बड़े मैदानी पेड़ की तरह बड़ा हो जायेगा। इसके नीचे एक नदी बहेगी। उस नदी के किनारे तुम लोग एक कपड़ा बिछा देना और फिर हमारे आने का इन्तजार करना।"

अरब ने वैसा ही किया जैसा उससे करने के लिये कहा गया था। उसके कपड़ा बिछाते ही लड़कियाँ वहाँ आ गयीं।

राज्य के हर आदमी और स्त्री ने यह सुना तो वह उनको देखने के लिये वहाँ आ गया। राजकुमार के माता पिता अभी भी अपने बेटे के गम में बहुत दुखी थे।

राजकुमार जो पानी से भरा प्याला आग के पास रख कर गया था वह वहाँ अभी तक वैसा का वैसा ही रखा था पर फिर भी वे उसको ज़िन्दा देखने की उम्मीद बिल्कुल छोड़ चुके थे। फिर भी जब उन्होंने लड़कियों के आने की खबर सुनी तो वे भी उन लड़कियों को देखने गये।

राजकुमार ने जब अपने माता पिता को वहाँ आते देखा तो वह बहुत आश्चर्य में पड़ गया उसने उनसे पूछा कि वे इतने दुखी क्यों थे। उन्होंने कहा कि उनका एक बेटा खो गया है इसलिये वे इतने दुखी थे।

राजकुमार बोला — "मैं ही तो आपका वह बहुत दिनों से खोया हुआ बेटा हूँ।"

अपने बेटे को ज़िन्दा देख कर राजा और रानी बहुत खुश हुए और उसको अपने घर ले गये। घर जा कर उन्होंने अपने तीनों बेटों की शादियाँ इतनी धूमधाम से कीं कि सारा महल गूँज उठा।

11 कोंकियाझरूना[30]

या तो वहाँ था और या फिर वहाँ नहीं था। एक बार की बात है कि एक जगह एक गरीब किसान रहता था। उसकी एक पत्नी थी और उसके एक छोटी सी बच्ची थी। उस बच्ची का नाम था कोंकियाझरूना। कोंकियाझरूना का मतलब होता है "फटे हुए कपड़ों में लिपटी एक लड़की"।

कुछ समय बाद ही किसान की पत्नी मर गयी। दुखी तो वह पहले से ही था पर अपनी पत्नी के मरने के बाद तो उस पर जैसे पहाड़ ही टूट पड़ा। वह बहुत रोया बहुत रोया फिर उसने सोचा "अब मुझे दूसरी शादी कर लेनी चाहिये। वह घर की देखभाल करेगी और मेरी लावरिस बच्ची को पालेगी।"

सो उसने एक दूसरी स्त्री से शादी कर ली। पर वह आने वाली स्त्री अपने साथ एक बेटी भी लायी थी। जब वह घर आयी और उसने अपने पति की पहली पत्नी की बेटी को देखा तो वह बहुत गुस्सा हो गयी।

वह कोंकियाझरूना के साथ बहुत बुरा व्यवहार करती थी। वह अपने बेटी को बहुत प्यार करती थी और उसको बहुत डाँटती थी। वह हमेशा इसी कोशिश में रहती कि वह उसको किसी तरह से उसे घर से बाहर निकाल दे।

---

[30] Conkiajgharuna (Tale No 11)

रोज वह उसको खराब ढंग से पकी रोटी देती और यह कह कर उसे गाय की देखभाल करने लिये बाहर भेज देती कि "यह ले रोटी। तू इसे खुद भी खाना और रास्ते में आते जाते लोगों को भी खिलाना और सारी रोटी घर वापस ले कर आना।" लड़की उसको ले कर चली जाती पर बहुत दुखी होती।

एक दिन लड़की मैदान में बैठी बहुत ज़ोर ज़ोर से रो रही थी। गाय ने उसका रोना सुना तो वह बोली — "तू क्यों रोती है? तुझे क्या परेशानी है?" लड़की ने उसको अपने दुख की कहानी सुना दी।

गाय बोली — "मेरे एक सींग में शहद रखा है और दूसरे में मक्खन। अगर तेरी इच्छा हो तो तू वे ले सकती हो। इसलिये तू दुखी क्यों होती है।"

लड़की ने उसके सींगों से शहद निकाल मक्खन निकाला और जी भर कर खाया। अब वह अक्सर ही ऐसा करती। अच्छा खाना मिलने से वह कुछ ही दिनों में मोटी हो गयी।

जब उसकी सौतेली मॉ ने यह देखा तो वह तो बहुत गुस्सा करने लगी और गुस्से में वह यह भी नहीं सोच सकी कि वह अब क्या करे।

अगले दिन से वह उसको एक टोकरी भर कर ऊन देने लगी। उसको उसे सारा दिन कातना होता था और खत्म कर के शाम को घर वापस लाना होता था। उससे यह काम करा कर सौतेली मॉ

उसको थका देना चाहती थी ताकि वह थक कर कमजोर और बदसूरत हो जाये।

एक दिन कोंकियाइझरूना गाय चरा रही थी कि उसकी गाय एक मकान की छत पर चढ़ गयी। लड़की उसके पीछे भागी तााकि वह उसको नीचे ला सके पर उसकी तकली छत पर ही गिर गयी।

उसने अन्दर झॉका तो उसको अन्दर एक बुढ़िया बैठी दिखायी दी। उसने कहा — "मेरी अच्छी मॉ। क्या आप मुझे मेरी तकली देंगी?"

बुढ़िया बोली — "मैं नहीं दे सकती मेरी बच्ची तू अपने आप ही आ कर ले ले।" यह बुढ़िया एक देवी[31] थी।

लड़की अन्दर चली गयी और अपनी तकली उठाने लगी कि तभी बुढ़िया बोली — "बेटी ज़रा एक मिनट मेरा सिर तो देखना। लगता है कि मेरा सारा सिर तो किसी ने खा लिया है।"

लड़की ने उसका सिर देखा तो वह तो डर के मारे पीली पड़ गयी। उसके सिर में तो दुनियॉ भर के कीड़े चल रहे थे। लड़की ने उसके सिर को थोड़ा थपथपाया उसमें से कुछ कीड़े निकाले और बोली — "लीजिये अब आपका सिर बिल्कुल साफ है। अब मैं उसमें और क्या देखूॅ?"

---

[31] Devi is a species of the Demon.

बुढ़िया उसके इस व्यवहार से बहुत खुश हुई और बोली — "जब तू यहाँ से जाये तो फलाँ फलाँ सड़क से हो कर जाना। कुछ दूर जा कर तुझे तीन स्रोत[32] मिलेंगे – एक सफेद एक काला और एक पीला। तू सफेद को भी छोड़ देना और काले को भी छोड़ देना और अपना सिर पीले वाले स्रोत में भिगो कर अपने हाथों से खूब मल लेना।"

लड़की उस बुढ़िया के बताये रास्ते पर चल दी। उसके बताये अनुसार उसको पहले सफेद वाला स्रोत मिला फिर काला वाला स्रोत मिला और फिर पीला वाला स्रोत मिला। उसने पहले दोनों स्रोतों को छोड़ कर तीसरे पीले वाले स्रोत में अपना सिर डाल दिया और उसे अपने हाथों से मल मल कर धोया।

जब उसने अपना सिर उठा कर देखा तो उसके तो सारे बाल सुनहरी हो चुके थे। साथ में उसके हाथ भी सुनहरी हो गये थे। शाम को जब वह घर पहुँची तो उसकी सौतेली माँ तो बस बहुत ही गुस्से में थी।

उसकी सौतेली माँ ने सोचा कि अगर वह अपनी बेटी को गाय के साथ भेजे तो शायद उसकी भी किस्मत खुल जाये। सो अगले दिन उसने कोंकियाझरूना को तो घर रख लिया और अपनी बेटी को गाय चराने के लिये भेज दिया।

---

[32] Translated for the word "Spring"

गाय एक बार फिर उसी बुढ़िया की छत पर चढ़ गयी। लड़की भी उसके पीछे पीछे चल दी और उसने अपनी तकली भी गिरा दी। उसने भी अन्दर झॉका तो बुढ़िया को देख कर बोली — "ओ बुढ़िया इधर देख। मेरी तकली दे।"

बुढ़िया ने उसको भी वही जवाब दिया — "बेटी मैं नहीं दे सकती तू खुद ही आ कर ले ले।" यह सुन कर वह लड़की खुद ही अन्दर आ गयी और अपनी तकली उठाने लगी। जैसे ही वह बुढ़िया के पास आयी तो बुढ़िया बोली — "बेटी ज़रा मेरा सिर तो देख ले ऐसा लगता है जैसे किसी ने मेरा सारा सिर ही खा लिया हो।"

लड़की उसके पास आयी और उसका सिर देख कर बोली — "उफ़। कितना भयानक है तुम्हारा सिर। तुम तो कितनी गन्दी बुढ़िया हो।"

बुढ़िया बोली — "बहुत बहुत धन्यवाद बेटी। जब तू यहॉ से जायेगी तब तेरे रास्ते में तीन स्रोत पड़ेंगे – एक पीला स्रोत एक सफेद स्रोत और एक काला स्रोत। तू पीला और सफेद स्रोत तो छोड़ देना और काले वाले स्रोत में जा कर अपना सिर डुबो देना और उसे अपने हाथों से अच्छी तरह मल मल कर धोना।"

लड़की ने वैसा ही किया। उसने पीला स्रोत छोड़ा उसने सफेद स्रोत छोड़ा। बाद में उसने काले सोते में अपना सिर डुबो दिया और उसे अपने हाथों से मल मल कर धोया। जब उसने अपना सिर

उठाया तो उसने देखा कि वह तो एक नीग्रो[33] जैसी हो गयी है। यही नहीं बल्कि उसके सिर पर तो एक सींग भी उग आया है।

उस सींग को उसने बार बार काटना चाहा पर जितनी बार वह उसे काटती थी वह उतनी ही बार उसके सिर पर निकल आता था बल्कि हर बार वह और बड़ा निकलता था।

वह घर पहुँची तो उसकी माँ तो उसको देख कर डर ही गयी। उसने अपनी माँ से शिकायत की तो माँ बोली — "यह सब उस गाय का कमाल है। उसको मरना ही होगा।"

गाय को अपना भविष्य मालूम था। जब उसे पता चला कि वह मारी जाने वाली है तो वह कोंकियाझरूना के पास गयी और उससे बोली — "जब मैं मार दी जाऊँ तब तू मेरी हड्डियाँ इकट्ठी कर के उन्हें जमीन में गाड़ देना। जब तू किसी परेशानी में फँसे तो मेरी कब्र पर जा कर ज़ोर से चिल्लाना "मेरा घोड़ा और मेरी शाही पोशाक लाओ।"

गाय के मारे डालने के बाद कोंकियाझरूना ने वैसा ही किया जैसा गाय ने उससे करने के लिये कहा था। उसने उसकी हड्डियों को जमीन में दबा दिया।

कुछ समय बाद उसकी सौतेली माँ ने अपनी बेटी को साथ लिया और चर्च चली गयी। चर्च जाने से पहले उसने एक कोदी[34] बाजरा

---

[33] Negro are called the people who normally live in Africa. It is called Negro Race and can be identified by its special look.

[34] Kodi is a measure of weighing things. 1 Kodi = 80 Pounds.

घर के ऑगन में बिखेर गयी और उससे कहती गयी — "हमारे चर्च से घर आने से पहले पहले यह बालटी अपने ऑसुओं से भर देना यह सारा बाजरा इकट्ठा कर के रख देना। इसका एक दाना भी ऑगन में बिखरा नहीं रह जाना चाहिये।" इतना कह कर वे चर्च चली गयीं।

कोंकियाझरूना बेचारी एक तरफ को बैठ कर रोने लगी। जब वह रो रही थी तो उसकी एक पड़ोसन आयी और उससे पूछा — "क्या बात है बेटी तू क्यों रोती है।"

बच्ची ने उसको अपनी सारी कहानी बता दी। तो पड़ोसन बहुत सारी मुर्गियॉ ले कर आयी। उन्होंने बाजरे का एक एक दाना उठा कर रख दिया। फिर पड़ोसन ने उस बालटी में थोड़ा सा नमक डाल कर उसे पानी से भर दिया।

उसने बच्ची से कहा — "देखो तुम्हारा बाजरा भी रखा गया और ये तुम्हारे ऑसू भी हो गये। जाओ आनन्द करो।"

तब कोंकियाझरूना ने गाय की याद आयी तो वह उसकी कब्र पर गयी और जा कर ज़ोर से बोली "मेरा घोड़ा और मेरी शाही पोशाक लाओ।" उसी समय उसके सामने एक शानदार घोड़ा और एक बहुत सुन्दर कीमती पोशाक हाजिर हो गयी।

कोंकियाझरूना ने तुरन्त ही वे शाही कीमती कपड़े पहने और अपने घोड़े पर सवार हो कर चर्च चल दी। चर्च में सारे लोग उसे घूर रहे थे।

उसकी सौतेली बहिन अपनी माँ के कानों में फुसफुसायी — “माँ यह लड़की तो बिल्कुल हमारी कोंकियाझरूना जैसी लगती है।”

उसकी माँ नफरत से मुस्कुरायी और बोली — “उस धूप से काली पड़ी को कौन अपने इतने सुन्दर कपड़े देगा।”

कोंकियाझरूना ने सबसे पहले चर्च छोड़ दिया। घर आ कर समय से ही उसने अपने कपड़े बदल लिये और सौतेली माँ के सामने तो बस वह फटे कपड़ों में ही खड़ी थी।

जब वह घर लौट रही थी तो रास्ते में एक नाला पड़ता था। जब वह उसको फलाँग कर पार कर रही थी तो उसका एक जूता उसमें गिर पड़ा।

उसके बाद काफी समय बीत गया। एक बार राजा के घोड़े उस नाले पर पानी पी रहे थे तो उन्होंने वहाँ चमकता हुआ एक जूता देखा तो वे बहुत डर गये। राजा ने अपने नौकरो को हुक्म दिया कि वे जा कर देखें कि ऐसा उन घोड़ों ने क्या देख लिया जो वे इतना डर रहे थे। तो उनको वहाँ एक सुनहरी जूता मिल गया।

जब राजा ने वह सुनहरी जूता देखा तो अपने वजीरों से कहा कि वे उसके पहनने वाले की तलाश करें क्योंकि “मैं केवल उसी से शादी करूँगा जिसके पैर में यह जूता आ जायेगा और किसी दूसरी से नहीं।”

उसके वजीरों ने उस लड़की को ढूँढने की बहुत कोशिश की जिसके पैर में वह जूता फिट बैठता पर वह उनको नहीं मिली।

कोंकियाझरूना की सौतेली माँ ने भी यह खबर सुनी तो उसने अपनी बेटी को सजाया और सजा कर एक सिंहासन पर बैठा दिया। फिर वह राजा के पास गयी और उससे कहा कि उसकी एक बेटी है जिसके पैरों की तरफ वह देख सकता है। हो सकता है कि वह जूता उसके पैर में फिट आ जाये।

उसने कोंकियाझरूना को तो एक कोने में बिठा दिया और उसको एक बड़ी सी टोकरी से ढक दिया।

जब राजा उसके घर आया तो वह उस जूते को पहना कर देखने के लिये उस टोकरी पर बैठ गया जिसके नीचे कोंकियाझरूना छिपी हुई थी।

कोंकियाझरूना ने एक नुकीली चीज़ ली और उससे टोकरी के नीचे से राजा को चुभाया। राजा को दर्द हुआ तो वह उसके ऊपर से उठ गया। सौतेली माँ बोली — "ओह वहाँ तो केवल एक टर्की है।"

राजा फिर से उस टोकरी पर बैठ गया पर कोंकियाझरूना ने उसको वह नुकीली चीज़ फिर से चुभो दी। राजा फिर से दर्द के मारे वहाँ से उठ खड़ा हुआ और चिल्लाया — "इस टोकरी को उठाओ। मुझे खुद देखना है कि इसको नीचे क्या है।"

सौतेली माँ ने विनती की — "मेहरबानी कर के मुझे दोष नहीं देना योर मैजेस्टी यह केवल एक टर्की है हमने अगर यह टोकरी उठायी तो यह भाग जायेगी।"

पर राजा तो उसकी कोई बात सुनने वाला था नहीं। उसने खुद ने ही वह टोकरी उठा दी तो लो उसमें तो एक सुन्दर सी लड़की निकल आयी। कोंकियाझरूना निकल आयी।

वह बोली — "यह जूता तो मेरा है यह मेरे पॉव में बिल्कुल ठीक आ जायेगा।"

वह बैठ गयी। उसको जूता पहना कर देखा गया तो वह तो उसके बिल्कुल फिट आया। बस फिर क्या था कोंकियाझरूना राजा की पत्नी बन गयी और उसकी सौतेली मॉ की गर्दन शर्म से झुक गयी।

12 असफ़ूरज़ीला

या तो वहाँ थी या फिर वहाँ बिल्कुल भी नहीं थी। वहाँ एक स्त्री रहती थी। इस स्त्री का पति जब वह छोटा था तभी चार बच्चों को छोड़ कर मर गया था – तीन बेटे और एक बेटी। माँ ने ही उनको पाला पोसा।

जब वे बड़े हो गये तो माँ ने उनसे कहा — "अब तुम लोग अपने पिता का काम देखना शुरू कर दो। उसको इस तरह से क्यों छोड़ देना।"

बच्चों को अपने पिता के धन्धे के बारे में कुछ पता ही नहीं था सो उन्होंने माँ से पूछा कि वह कहाँ काम करता था। माँ ने उन्हें बता दिया कि वह फलाँ फलाँ जगह पर काम करता था पर बच्चों को वहाँ के लिये लम्बा रास्ता पार करना था।

उन्होंने अपनी माँ से कहा — "माँ क्योंकि वह जगह बहुत दूर है तो वहाँ हमारा खाना पानी कौन ले कर आयेगा।"

तो माँ ने जवाब दिया कि वह उनकी बहिन को उनके पास उनका खाना ले कर भेज देगी। माँ की यह बात बच्चों को बहुत अच्छी लगी। वे वहाँ जाने के लिये तैयार होने लगे। उनकी माँ ने उनको साथ में ले जाने के लिये प्याज और लहसुन दी और कहा —

"जब तुम जा रहे हो तो उसका ऊपर का हिस्सा काट देना और उसकी छीलन नीचे गिरा देना इससे तुम्हारी बहिन को पता चल जायेगा कि तुम किधर की तरफ गये हो।"

इस तरह बच्चे प्याज और लहसुन ले कर चले गये। रास्ते में वे इनकी छीलन फेंकते गये ताकि जब उनकी बहिन उनके लिये खाना ले कर आये तो वह उन्हें ढूँढ सके।

अब इसी रास्ते के पास एक देवी[35] रहता था जिसके 100 सिर थे। एक दिन देवी की मॉ ने रास्ते पर प्याज और लहसुन के छिलके बिखरे हुए देखे तो उसने उन सबको इकट्ठा कर लिया और अपने घर की तरफ जाने वाले रास्ते पर बिखेर दिये।

तीन दिन हो गये थे तो बच्चों की मॉ ने सोचा कि शायद उसके बेटों का खाना खत्म हो गया होगा सो उसने काफी सारा खाना और बनाया एक थैले में रखा और अपनी बेटी को दे कर उसे उसके भाइयों के पास भेज दिया। लड़की प्याज के छिलके देखती हुई उनके पास चल दी।

चलते चलते वह एक घर के पास आ गयी। उस घर में एक बुढ़िया रहती थी। लड़की ने बुढ़िया से पूछा — "मॉजी क्या आपको पता है कि मेरे भाई यहीं काम करते हैं क्या?"

बुढ़िया बोली — "तुझे अपने भाइयों का क्या करना है।"

---

[35] A species of Demon.

वह फिर बोली — "यह घर तो एक ऐसी देवी का है जिसके **100** सिर हैं। वह जल्दी ही घर आता होगा तो अच्छा है कि मैं तुझे उसके आने से पहले पहले कहीं छिपा देती हूँ। क्योंकि अगर उसने तुझे देख लिया तो वह तुझे खा जायेगा।"

देवी की माँ उसको अन्दर ले गयी और उसको कहीं छिपा दिया। उसी समय देवी आ गया पता नहीं कहाँ से। उसके हाथ में एक मरा हुआ जानवर था और कुछ लकड़ियाँ थीं।

उसने उनको अपनी पीठ से खोला और अन्दर जा कर माँ से बोला — "माँ मुझे किसी आदमी की खुशबू आ रही है। यहाँ कौन आया है।"

माँ बोली — "तू ऐसा क्यों पूछता है। तेरे डर से आसमान में चिड़ियें तक तो उड़ नहीं पातीं कीड़े भी जमीन पर रेंग नहीं पाते तो कोई आदमी यहाँ कहाँ से आयेगा।"

पर जब देवी ने बहुत ज़ोर दिया तो उसको बताना ही पड़ा। उसने कहा — "यहाँ एक लड़की है जो तुझसे शादी करना चाहती है – अगर तू उसे न खाये तो मैं उसे तुझे दिखा देती हूँ।"

बेटे ने उससे वायदा किया कि वह उसे नहीं खायेगा तो वह लड़की को बाहर निकाल कर ले आयी। जब देवी ने उसे देखा तो वह उसे बहुत अच्छी लगी सो उसने उसे खाया नहीं।

उधर भाई लोग अपनी बहिन का इन्तजार करते रहे करते रहे कि वह उनका खाना ले कर अब आती होगी अब आती होगी पर

जब वह काफी देर तक नहीं आयी तो वे उठे और अपने घर चले गये। उन्होंने अपनी माँ से कहा — "माँ तुमने हमारा खाना क्यों नहीं भेजा।"

जब माँ ने अपने बच्चों के मुँह से यह सुना तब तो उसने रोना शुरू कर दिया। वह रोते रोते बोली — "बेटे सड़क के पास ही एक **100** सिर वाला देवी रहता है। भगवान उसका नाश करे लगता है उसी ने उसे खा लिया है।"

भाइयों को इस देवी का कुछ अता पता नहीं था पर जब उन्होंने उसके बारे में जाना तो वे अपनी बहिन को छुड़वाने के लिये उधर चल दिये।

काफी दूर चलने के बाद वे सब देवी के घर के पास पहुँचे। उस समय देवी की माँ और पत्नी घर की छत पर ही बैठी थीं। देवी की माँ ने उनको दूर से आते देखा तो वह अपनी बहू से बोली — "उधर देख, क्या तुझे कुछ आता दिखायी दे रहा है।"

उसकी बहू ने जवाब दिया — "हाँ माँ मैं कुछ आता देख तो पा रही हूँ पर मुझे अभी कुछ साफ दिखायी नहीं दे रहा। ऐसा लगता है जैसे कुछ मक्खियों का झुंड उड़ता हुआ इधर की तरफ चला आ रहा है।"

देवी की माँ ने कहा — "उनकी अपनी माँ के लिये भी और मेरे बेटे की माँ के लिये भी यह खराब है।"

कुछ देर बाद उसने अपनी बहू से फिर पूछा कि अब उसको क्या दिखायी दे रहा था। देवी की पत्नी बोली कि उसे तीन आदमी आते दिखायी दे रहे थे।

देवी की माँ फिर बोली — “यह तो उनकी माँ के लिये भी और मेरे बेटे की माँ के लिये भी बड़े दुख की बात है।”

आखिर तीनों भाई देवी के घर तक आ पहुँचे थे। वहाँ पहुँच कर उन्होंने पानी देखा पर वे किसी तरह भी उसको पार नहीं कर सके। फिर उन्होंने उसमें पत्थर फेंके और उन पर चल कर उसको पार किया।

तब लड़की ने देखा कि वे तो उसके भाई थे। वह तुरन्त ही नीचे उतरी और जा कर उनके गले लग गयी। जब देवी की माँ को पता चला कि वे कौन थे तो उसने उनको अन्दर बुलाया खाना खिलाया और उनको छिपा दिया। उसने कहा कि अगर मेरे बेटे ने तुम्हें देख लिया तो वह तो तुम्हें खा ही जायेगा।

तभी पता नहीं कहाँ से **100** सिर वाला देवी भी वहाँ आ गया। उसके एक कन्धे पर लकड़ियाँ थीं और दूसरे कन्धे पर मरे हुए जानवर। दरवाजे पर उसने अपना बोझ उतारा और अन्दर आ कर माँ से पूछा “माँ आज मुझे किसी आदमी की बू आ रही है। यहाँ कौन आया है।”

माँ ने सच छिपाने की कोशिश की पर उसका बेटा उसे छोड़ने वाला तो नहीं था सो उसने कहा कि अगर वह यह वायदा करे कि

वह अपनी पत्नी के भाइयों को नहीं खायेगा तो वह उनको उसके सामने ले कर आती है।

देवी ने उससे वायदा किया कि वह उनको नहीं खायेगा तो वह उनको बाहर ले कर आयी।

कुछ देर बाद देवी ने अपनी पत्नी के भाइयों से कहा — "आओ शाम का खाना बनाते है।" जितनी देर में तीनों भाइयों ने मिल कर एक हिरन साफ किया उतनी देर में देवी ने 60 हिरन साफ कर डाले। सब हिरनों के टुकड़े किये और उनको उबलने के लिये बर्तन में डाल दिये।

जब वे सब खाना खाने बैठे तो देवी ने अपनी पत्नी के भाइयों से पूछा — "तुम लोग हड्डी खाने वाले हो या मॉस खाने वाले हो।"

उन्होंने जवाब दिया — "मॉस से हमें क्या लेना देना। हमारे लिये तो हड्डियॉ ही काफी हैं।"

देवी ने अपना मुॅह भर कर मॉस तोड़ा और हड्डियॉ उसने तीनों भाइयों के सामने फेंक दीं। उसने उनसे फिर पूछा — "क्या तुम दोकी से पीते हो या फिर क्वान्सी[36] से।"

भाइयों ने जवाब दिया "क्वान्सी से।" सो देवी ने अपनी वाइन दोकी से पी और उनको उसने क्वान्सी दे दिये।

---

[36] Doki and Quantsi – measures for liquid. Doki is an Imeretian measure for wine = 5 bottles Quantsi is a drinking horn

जब वे लोग खाना खा चुके तो वे सोने जाने की तैयारी करने लगे तो देवी ने फिर पूछा — "तुम लोग पलंग पर सोना पसन्द करोगे या फिर घुड़साल में।"

भाइयों ने जवाब दिया — "हम लोग पलंगों का क्या करेंगे हम तो घुड़साल में ही सो जायेंगे।"

सो देवी अपने पलंग पर सो गया और उनको उसने घुड़साल में भेज दिया। सुबह को जब देवी उठा तो अपनी माँ से बोला — "माँ मुझे भूख लगी है।"

माँ को पता चल गया कि उसके बेटे का इस बात से क्या मतलब था। उसने यह कोशिश करते हुए कि उसकी बहू कहीं उसकी इस बात का ठीक मतलब न समझ ले उसने अपने बेटे से कहा — "घुड़साल में जाओ बेटा वहाँ एक बड़े से रोटी रखने वाले डिब्बे में तीन आधी सिकी आधी कच्ची रोटियाँ रखी हैं। उन्हें खा लो।"

देवी सीधा घुड़साल में गया जहाँ उसकी पत्नी के भाई लेटे हुए थे। एक को तो उसने दरवाजे में घुसते ही खा लिया। दूसरे दोनों भाइयों को अपनी बगल में दबाया और जंगल चला गया।

इस बीच तीनों भाइयों की माँ अपने बेटों का इन्तजार करती रही और जब वे वापस नहीं आये तो उसने सोचा कि उन्हें देवी ने उन तीनों को खा लिया होगा। वह यह सोच कर इतना ज़ोर से रोयी कि उसके आँसू आसमान तक जा पहुँचे।

उसी समय वहाँ से एक आदमी गुजर रहा था तो उसने उससे उसके रोने की वजह पूछी तो स्त्री ने उसे बताया कि वह ये आँसू अपने बेटों के खो जाने के गम में बहा रही थी।

तब उस गरीब आदमी ने उसको एक सेब दिया और उससे कहा कि वह उस सेब को 100 हिस्सें में काट ले और उनमें से तीन हिस्से रोज खा लिया करे। जब सेब खत्म हो जायेगा तब तुम्हारे एक बेटा होगा। उस बेटे का नाम तुम रखना अस्फूरज़ीला।

X X X X X X X

उस स्त्री ने वैसा ही किया जैसा कि उस आदमी ने उससे करने के लिये कहा था। उसने उस सेब के 100 टुकड़े किये और उनमें से तीन तीन टुकड़े रोज खाये। जब सेब खत्म हो गया तब उसके एक बेटा हुआ जिसका नाम उसने रखा अस्फूरज़ीला।

अस्फूरज़ीला बहुत जल्दी जल्दी बढ़ रहा था। दूसरे बच्चे जितना एक साल में बढ़ते हैं उतना वह एक दिन में बढ़ जाता था।

एक दिन अस्फूरज़ीला अपने साथियों के साथ खेल रहा था कि एक स्त्री वहाँ से एक कोका[37] अपने कन्धे पर लिये गुजरी। वह कोका पानी से पूरा भरा हुआ था। अस्फूरज़ीला के हाथ में उसकी

[37] Coca is a measurement of water = about 18 bottles. It may be a earthen pitcher holding 18 bottles of water like a pitcher

खेलने वाली हड्डियाँ[38] थीं। उसने उनमें से एक हड्डी उसके कोका में मारी।

हड्डी हवा में घूमती हुई गयी स्त्री के कोका में जा कर लगी और उसे तोड़ दिया। इस पर स्त्री को बहुत गुस्सा आया। वह नाराज हो कर बोली — "तेरे ऊपर भगवान का शाप पड़े। पर मैं तुझे शाप कैसे दे सकती हूँ तू तो अपनी माँ का अकेला बेटा है। भगवान करे तेरे भाई और बहिन देवी के पंजों से कभी न छूटें।"

यह बात अस्फूरज़ीला की समझ में बिल्कुल नहीं आयी। कौन से भाई कौन सी बहिन कौन सा देवी। वह जल्दी से भागा भागा अन्दर गया और अपनी माँ से बोला — "माँ मुझे अपना दूध पिलाओ।"

माँ बोली — "यह कौन सा समय है दूध पीने का।" पर जब वह जिद करने लगा तो उसने उसको दूध पिला दिया।

दूध पी कर अस्फूरज़ीला बोला — "माँ मुझे बताओ कि क्या मेरे कोई और भाई बहिन भी हैं।"

उसकी माँ उसको उनके बार में कुछ भी बताना नहीं चाहती थी पर वह भी क्योंकि बहुत दुखी थी इसलिये उसने उसको सब कुछ बता दिया। जब अस्फूरज़ीला ने उसकी कहानी सुनी तो वह उनको छुड़ने के लिये तैयार हो गया।

---

[38] Knuckle-bones – are the small pieces of bones children play with. This game is very old – as old as 5th century, especially in Italy. See any uTube video to understand this game.

उसकी मॉ ने उससे बहुत विनती कि वह उसको छोड़ कर न जाये पर अस्फूरज़ीला ने उसकी कोई बात नहीं सुनी और वह वहॉ से अपने भाईयों और बहिन को ढूँढने चला गया।

वह दूर गया वह पास गया और एक खुले मैदान में आ पहुँचा। वहॉ उसने देखा कि कुछ लोग अपना खेत जोत रहे थे। वह उनसे चिल्ला कर बोला — "खुद को बचाओ। **100** सिर वाला देवी आ रहा है।"

यह सुन कर सब लोग बहुत घबरा गये और चारों तरफ भाग गये। अस्फूरज़ीला ने उनके हलों में से एक हल अपनी पीठ पर लादा और उसे एक लोहार के पास ले गया। उसने उससे कहा — "इस लोहे का मुझे तुम एक जोड़ी जूता एक कमान और कुछ तीर बना दो।"

लोहार ने उसे वे बना कर दे दिये। अब अस्फूरज़ीला ने अपने लोहे के जूते पहने लोहे का तीर कमान लिया और **100** सिर वाले देवी की खोज में चल दिया।

चलते चलते वह देवी के घर आ गया। उस समय देवी की मॉ अपने घर की छत पर बैठी हुई थी। उसने देखा कि कोई उसके घर की तरफ चला आ रहा है।

उसने अपनी बहू से कहा — "बहू तुम्हें भी कुछ दिखायी दे रहा है या फिर मेरी अपनी ऑखें धोखा दे रही हैं।"

जब उसकी बहू ने देखा तो बोली — "नहीं माँजी आपकी आँखें आपको धोखा नहीं दे रहीं सचमुच में ही कोई आ रहा है।"

यह सुन कर देवी की माँ कराहने लगी और बोली — "यह उसकी माँ के लिये भी और देवी की माँ के लिये भी खराब बात है।"

इस बीच अस्फ़ूरज़ीला देवी के घर के काफी पास तक आ गया था। उसने कूद कर नाला पार किया और दरवाजे पर एक लड़की को खड़ा देखा तो बोला — "तुम जरूर ही मेरी बहिन हो।"

पर वह लड़की तो केवल अपने तीन भाइयों को ही जानती थी सो वह इस बात को मानने के लिये तैयार नहीं थी कि वह उसकी बहिन थी। बाद में जब अस्फ़ूरज़ीला ने उसको अपनी कहानी बतायी तब उसको विश्वास हुआ।

उसी समय देवी की माँ वहाँ आ गयी और बोली — "आजा बच्चे मैं तुझे अन्दर सुरक्षित रूप से छिपा देती हूँ। कहीं ऐसा न हो कि मेरा बेटा आ जाये और तुझे खा जाये।"

अस्फ़ूरज़ीला बोला — "ओ बुढ़िया तू अन्दर जा। भगवान करे तुझे और तेरे बेटे को शर्मिन्दा होना पड़े।" और वह वहीं देवी के लौटने का इन्तजार करने लगा।

तभी वहाँ देवी भी आ गया। उसके कन्धे पर शिकार लटके हुए थे और उसकी बगल में पेड़ों की जड़ें ठुसी हुई थीं। जब उसने एक अजनबी को वहाँ बहादुरी से खड़े देखा तो उसने सोचा "मेरे डर

से यहॉ कोई चिड़िया आसमान में भी पर नहीं मार सकती कीड़े भी धरती पर रेंगने से डरते हैं तो यह लड़का कौन है जो इतनी बहादुरी से मेरे सामने खड़ा है।"

देवी तो उसको देख कर पागल सा हो गया। उसकी ऑखों से लपटें निकलने लगीं। उसने अस्फूरज़ीला की तरफ एक गुस्से की नजर से देखा और चिल्लाया — "तू कौन है और तू यहॉ क्यों आया है।"

"क्या मैं तुझे बताऊॅ कि मैं कौन हूॅ। मैं तेरी पत्नी का भाई हूॅ। मैं तेरा मेहमान बन कर आया हूॅ इसलिये तू मेरा मेजबान है।"

देवी बोला — "ठीक है। तो चलो आओ शाम का खाना बनाते हैं। हमको पहले शिकार की खाल साफ कर लेनी चाहिये और फिर उनको तैयार करना चाहिये।"

सो वे दोनों शिकार की खाल साफ करने बैठ गये। जितनी देर में देवी ने एक जानवर की खाल निकाली अस्फूरज़ीला ने सारे जानवरों की खाल साफ कर के रख दी। फिर उनके टुकड़े कर के उनको पकने के लिये आग पर रख दिया।

देवी अस्फूरज़ीला को लगातार देखे जा रहा था। जब खाना तैयार हो गया तो देवी ने अस्फूरज़ीला से पूछा कि क्या वह मॉस खाने वाला था या फिर हड्डियॉ खाने वाला।

अस्फ़ूरज़ीला बोला — "हड्डियाँ कौन खाता है। क्या मैं कुत्ता हूँ जो हड्डियाँ खाऊँगा मैं माँस खाता हूँ तू मुझे माँस दे।" सो देवी ने उसे माँस दे दिया।

खाना खाने के बाद देवी ने पूछा — "क्या तुम क्वांसी से पीते हो या दोकी से।" अस्फ़ूरज़ीला बोला — "मुझे तो तुम दोकी दे दो मैं क्वांसी से नहीं पीता।" सो देवी ने उसे दोकी दे दी।

खाना खाने और शराब पीने के बाद देवी ने पूछा — "तुम पलंग पर सोओगे या फिर घुड़साल में।"

अस्फ़ूरज़ीला बोला — "मैं आदमी हूँ मैं घुड़साल में क्या करूँगा मैं पलंग पर सोऊँगा।"

सो अस्फ़ूरज़ीला पलंग पर सो गया और देवी को घुड़साल में सोना पड़ा। पर अफसोस उसको वहाँ नींद ही नहीं आयी। वह सारी रात यही सोचता रहा कि इस अजीब मेहमान से वह कैसे छुटकारा पाये।

जब वह यह सब सोच रहा था तो अस्फ़ूरज़ीला गहरी नींद सो रहा था उसने अपनी तलवार निकाली उसको तेज़ करने लगा। तलवार को तेज़ करने से जो आवाज हुई इससे अस्फ़ूरज़ीला की आँख खुल गयी।

उसने देवी का दिमाग पढ़ लिया कि वह क्या करना चाहता है सो वह खुद तो बिस्तर से बाहर निकल आया और ओढ़ने वाली चादर के नीचे एक लट्ठा रख दिया जिससे ऐसा लगे कि वहाँ

अस्फूरज़ीला अभी भी सो रहा है। फिर वह उसी कमरे में एक तरफ को छिप गया।

जब देवी ने अपनी तलवार हीरे की तरह से चमका ली तो वह दबे पॉव अपनी घुड़साल से निकला और अस्फूरज़ीला वाले सोने के कमरे का दरवाजा चुपचाप से खोला और कमरे में आ कर उसके बिस्तर की तरफ बढ़ा।

उसने अपने पूरे ज़ोर से अपनी तलवार ऊपर उठा कर पलंग पर मारी कि बिस्तर की सारी धूल हवा में उड़ गयी और लकड़ी के लट्ठे के बीच में से दो टुकड़े हो गये। यह कर के देवी वहॉ से चला गया और अपने पीछे से दरवाजा बन्द करता गया।

अस्फूरज़ीला ने अपना पलंग साफ किया और फिर शान्ति से सो गया। सुबह को देवी जब सो कर उठा और अपने साले साहब को ज़िन्दा देखा तो वह तो उसकी तरफ आश्चर्य से देखता ही रह गया।

उसने उससे पूछा — "क्या रात को तुम्हें कहीं दर्द हुआ था?"

अस्फूरज़ीला बोला — "नहीं तो। मुझे तो कल किसी कीड़े ने भी नहीं काटा।"

देवी बोला — "नहीं? अच्छा तो आओ चलो कुश्ती लड़ते हैं।"

अस्फूरज़ीला बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं।"

और फिर दोनों की लड़ाई शुरू हो गयी। देवी ने बहुत कोशिश कर ली पर वह तो अपने साले को हिला भी नहीं सका तब अस्फूरज़ीला ने उसके ऊपर हमला कर के उसे गर्दन तक जमीन में गाड़ दिया।

फिर उसने अपन तीर कमान उठाया और उसकी तरफ निशाना साध कर चिल्लाया — "जल्दी बता तूने मेरे भाइयों का क्या किया वरना मैं तुझे मार दूँगा।"

यह देख कर देवी डर गया और चिल्लाया — "मुझे मारना मत। मैं अभी बताता हूँ। मेरी छाती में एक डिब्बा है जिसमें वे तीनों मरे पड़े हैं। वहीं एक रूमाल भी है। अगर उस रूमाल को तुम उनके ऊपर रख दोगे तो वे ज़िन्दा हो जायेंगे।"

जब अस्फूरज़ीला ने यह सुना तो उसने देवी की छाती काट दी उसमें से एक छोटा सा बक्सा निकाला बक्से में से अपने मरे हुए भाइयों को निकाला उनके ऊपर रूमाल रखा जिससे वे तुरन्त ही ज़िन्दा हो गये।

उसके बाद उसने **100** सिर वाले देवी को अपने तीर से मार दिया। उसके शरीर के छोटे छोटे टुकड़े कर दिये। फिर उसने देवी की माँ को भी मार दिया। तब उसने अपने भाइयों की कहानी सुनी और उनको अपनी कहानी सुनायी।

भाइयों ने अस्फूरज़ीला का विश्वास तो कर लिया पर उनके दिलों में उसके लिये जलन पैदा हो गयी जब उन्होंने देखा कि वह तो उनके मुकाबले में कितना ज़्यादा बहादुर है।

X X X X X X X

खैर फिर वे सब उठे और अपने घर की तरफ चल दिये। रास्ते में एक बहुत बड़ा मैदान पड़ा। उसमें एक बहुत बहुत बड़ा पेड़ खड़ा था – इतना बड़ा कि वह सारे मैदान के ऊपर फैला हुआ था सारा मैदान उसके साये में था।

अस्फूरज़ीला ने अपने भाइयों और बहिन से कहा — "मैं बहुत थक गया हूँ। अब मैं यहाँ लेट कर थोड़ा आराम करना चाहता हूँ।" भाई लोग राजी हो गये।

अस्फूरज़ीला पेड़ की जड़ के पास जा कर लेट गया और सो गया। उसके भाई उसके पास बैठे बैठे आपस में फुसफुसा कर बात करते रहे। वे बोले अब इसने 100 सिर वाले देवी को मार दिया है तो अब यह हमारा और क्या अच्छा कर सकता है। चलो इसको इस पेड़ से बाँध देते हैं और इसको यहीं छोड़ जाते हैं।"

उन्होंने पेड़ की कुछ डालियाँ लीं उनको बटा और उनसे उसे पेड़ से बाँध दिया। उन्होंने उसको इतनी ज़ोर से बाँधा कि उसकी उँगलियों से खून भी बहने लगा।

जब उनकी बहिन ने यह देखा तो उनसे विनती की वह उसको छोड़ दें पर वे तो उसकी सुनने वाले थे नहीं। उन्होंने उसको पेड़ से कस कर बॉध दिया बहिन को साथ ले कर घर चले गये।

जैसे ही वे घर पहुॅचे बहिन ने सब कुछ अपनी मॉ को बता दिया। बेटी की बात सुन कर मॉ ने अपने तीनों बेटों को बहुत गालियॉ दीं।

उधर जब अस्फूरज़ीला की ऑख खुली तो उसने देखा कि वह तो पेड़ से बॅधा पड़ा है। उसने बहुत कोशिश की वह उसमें से निकल आये पर वह तो हिल भी न सका। फिर उसने अपने चारों तरफ देखा तो उसे तो अपने भाई बहिन भी कहीं दिखायी नहीं दिये।

उसने भगवान से प्रार्थना की — "हे भगवान। अगर मैंने अपने भाइयों को धोखा दिया है तो यह पेड़ मेरे लिये बहुत मजबूत हो जाये। पर अगर उन्होंने मुझे धोखा दिया है तो मैं यह पेड़ जड़ से उखाड़ सकूॅ।"

यह कह कर उसने फिर से उस पेड़ से छूटने की कोशिश की तो लो वह पेड़ तो जड़ से उखड़ आया। अस्फूरज़ीला उठा और अपने घर चल दिया। घर पहुॅच कर उसने अपने भाइयों को आवाज लगायी — "आओ और आ कर जल्दी से मेरे हाथ खोलो।"

उसको घर वापस आया देख कर उसके भाई तो डर से पीले पड़ गये। फिर भी उनको उसके हाथ तो खोलने ही पड़े। इस

घटना के बाद अस्फ़ूरज़ीला अपने भाइयों के साथ नहीं रहना चाहता था सो वह घर छोड़ने की तैयारी करने लगा।

उसकी माँ और बहिन ने उससे बहुत जिद की कि वह वहाँ घर में रुक जाये पर अस्फ़ूरज़ीला नहीं माना। वह घर से चला गया।

X X X X X X X

बहुत दिनों तक वह इधर उधर घूमता रहा। फिर वह एक खेत के पास आ गया। उसने देखा कि उस खेत में एक आदमी हल चला रहा था। उसने नीचे से मिट्टी का एक ढेला उठाया और अपने मुँह में रख लिया।

पहले तो अस्फ़ूरज़ीला उसको घूरता रहा घूरता रहा फिर उससे रहा नहीं गया तो उसने उस आदमी से पूछा — "भाई तुम ये मिट्टी के ढेले क्यों खा रहे हो।"

आदमी बोला — "इसमें इतने आश्चर्य की कोई बात नहीं है। अस्फ़ूरज़ीला ने तो **100** सिर वाले देवी को मार दिया है तो मेरे इन मिट्टी के ढेलों को खाने में ऐसी क्या खास बात है।"

अस्फ़ूरज़ीला बोला — "मैं अस्फ़ूरज़ीला हूँ तो आओ चलो हम दोनों एक दूसरे के भाई बन जायें।" उसके बाद वे एक साथ रहने लगे।

वे घूमते हुए एक और खेत के आस पास आ पहुँचे तो वहाँ इन्होंने देखा कि एक आदमी ने चक्की पीसने वाले पहिये अपने पैर में बाँध रखे थे और जेब में दो बड़े खरगोश[39] रखे हुए हैं। पहले उसने दोनों बड़े खरगोशों को छोड़ दिया और फिर उन्हें पकड़ लिया।

अस्फूरज़ीला उसको भी कुछ देर तक घूरता रहा फिर बोला — “भाई यह तुम क्या कर रहे हो। तुम इन बड़े खरगोशों को ऐसे कैसे पकड़ लेते हो।”

वह आदमी बोला — “अस्फूरज़ीला ने तो **100** सिर वाला देवी मार दिया तो इन बड़े खरगोशों को पकड़ने में ऐसी कौन सी बड़ी बात है।”

मिट्टी के ढेले खाने वाला बोला — “अरे अस्फूरज़ीला तो यह है और वह तुम्हारा भाई बन कर रहेगा अगर तुम चाहो तो।”

सो तीनों साथ साथ चलने लगे।

रास्ते में तीनों साथियों ने आपस में तय किया कि वे तीनों अपना अपना तीर फेंकेंगे और जिस जगह भी उनके तीर जा कर गिरेंगे वहीं वे अपना खाना खायेंगे।

---

[39] Translated for the word “Hare”. Hare is like a rabbit but it is a bit larger than ordinary rabbit and is wild. See its picture above.

सबसे पहले मिट्टी का ढेला खाने वाले ने अपना तीर चलाया। उसका तीर कहीं बड़ी अजीब सी जगह में जा कर पड़ा। सो वे लोग वहाँ गये और वहाँ उन्होंने अपना रात का खाना खाया।

उसके बाद बड़े खरगोश पकड़ने वाले ने अपना तीर चलाया तो उसका तीर भी एक बड़ी अजीब सी जगह जा कर पड़ा सो वे लोग वहाँ गये और वहीं उन्होंने अपना दोपहर का खाना खाया।

आखीर में अस्फूरज़ीला की बारी आयी तो उसने भी अपना तीर चलाया तो उसका तीर एक ऐसे घर में जा कर पड़ा जहाँ तीन देवी रहते थे। उस समय उन तीनों देवियों की शादी तीन सुन्दर लड़कियों से हो रही थी तो उस तीर को देख कर उनकी शादी रुक गयी।

उन्होंने वहाँ से तीर निकालने की बहुत कोशिश की। वे उसके साथ बहुत तरीके से जूझते रहे पर वे उसको हिला भी नहीं सके। उन्होंने सोचा कि जब हम इस तीर को बाहर नहीं निकाल सके तो हमें इसे छोड़ देना चाहिये। कहीं ऐसा न हो कि वह तीर चलाने वाला यहाँ आ जाये और यहीं रहने लग जाये।

ऐसा सोच कर वे घर से बाहर निकल गये और केवल एक लंगड़े देवी को वहाँ की चिमनी में छोड़ गये।

उधर तीनों दोस्त वहाँ उस मकान में आये वहाँ कपड़ा बिछाया अपना खाना बनाया। तीनों ने अपनी अपनी टोपियाँ उछाल कर खुशी मनायी। फिर आपस में बोले — “चलो हममें से एक आदमी बारी बारी से घर में रह कर खाना बनायेगा।”

पहले दिन मिट्टी के ढेले खाने वाले की बारी आयी तो उसने खाना बनाया और उसको तैयार कर के लगा कर रखा कि चिमनी में से लॅगड़ा देवी बाहर निकल कर आया और बोला — "मुझे कुछ खाने पीने को दो।"

उसने उसे कुछ खाना पीना दे दिया। पर उसने फिर से उससे खाना पीना मॉगा तो उसने उसको एक बार खाना पीना और दे दिया। पर जब उसने तीसरी बार खाना पीना मॉगा तो उसने उससे कहा — "अगर तू हमारा सारा खाना पीना खा पी जायेगा तो मैं अपने साथियों को क्या खाना खिलाऊॅगा।"

पर देवी ने फिर वही कहा — "मुझे खाना और पीना दो वरना मैं तुम्हें और तुम्हारे इस सब खाने के सामान को ही खा जाऊॅगा।"

मिट्टी के ढेले खाने वाला तो यह सुन कर डर गया और दरवाजे की तरफ भाग लिया। उसके जाने के बाद देवी ने वहॉ आराम से बैठ कर खाना खाया।

शाम को जब उसके दोनों साथी वहॉ आये और देखा कि वहॉ तो कोई खाना नहीं है तो वे सोचने लगे कि उस दिन वहॉ ऐसा क्या हुआ?

उस दिन तो उन्होंने किसी तरह भुगत लिया। अगले दिन उन्होंने बड़े खरगोश पकड़ने वाले को घर पर खाना बनाने के लिये छोड़ा। पर उस दिन उसके साथ भी वही हुआ जो मिट्टी के ढेले खाने वाले के साथ हुआ था।

अब तीसरे दिन अस्फ़ूरज़ीला की बारी थी। उसने बहुत सारे तरीके के खाने बनाये थे और पीने की चीज़ें तैयार की थीं। जब उसका खाना तैयार हो चुका तो लॅगड़ा देवी चिमनी से उतर कर उसके पास आ गया और बोला — “मुझे कुछ खाने के लिये और कुछ पीने के लिये दो।”

अस्फ़ूरज़ीला ने उसे कुछ खाना और कुछ पीने के लिये दे दिया। वह सब खा पी कर देवी ने उससे फिर से खाना पीना माँगा। अस्फ़ूरज़ीला ने उसे फिर एक बार खाना पीना और दे दिया। उसे खा कर उसने एक बार और खाना पीना माँगा।

जब उसने तीसरी बार खाना माँगा तो अस्फ़ूरज़ीला मुस्कुराया उसने अपना तीर कमान उठाया और अपना तीर देवी की छाती में बींध दिया और फिर उसको दो हिस्सों में काट दिया।

देवी का सिर कट कर एक तरफ जा पड़ा और उसका शरीर दूसरी तरफ। सिर लुढ़कते लुढ़कते बोला — “जो मेरे पीछे पीछे आयेगा वही खुश रहेगा।” शरीर बोला — “जो मेरे पीछे पीछे आयेगा वह दुखी होगा।”

इस बीच अस्फ़ूरज़ीला के साथी लोग वापस आ गये।

वे सब खाना खाने बैठ गये। खाना खा पी कर सबने सोचा कि चलो उस सिर के पीछे चल कर देखते हैं कि उसकी बात में कितनी सच्चाई है।

देवी का सिर लुढ़कता हुआ एक गड्ढे में गिर पड़ा। अस्फूरज़ीला ने उस गड्ढे में झाँक कर देखा तो उसमें उसे तीन सुन्दर लड़कियाँ दिखायी दीं।

यह देख कर वह बहुत खुश हुआ और बोला — "इनको बाहर निकाल लाते हैं फिर हम इनसे शादी कर लेंगे।"

मिट्टी के ढेले खाने वाला तो उस गड्ढे में नीचे खिसक गया पर इससे पहले कि वह उस गड्ढे की तली तक पहुँचता वह चिल्लाया — "मैं जल रहा हूँ। मैं जल रहा हूँ। मुझे ऊपर खींचो। मुझे ऊपर खींचो।" सो उन्होंने उसको ऊपर खींच लिया।

उसके बाद बड़े खरगोश पकड़ने वाला उसके अन्दर गया तो उसका भी यही हाल हुआ। उसको भी बाहर निकाल लिया गया।

अबकी बारी अस्फूरज़ीला की थी। उसने अपने साथियों से कहा "जब मैं चिल्लाऊँ कि मैं जल रहा हूँ तो तुम लोग मुझे ऊपर खींचने की बजाय नीचे की तरफ गिराते जाना।"

इसके बाद उसको गड्ढे में नीचे गिरा दिया गया। कई बार वह "मैं जला। मैं जला।" चिल्लाया पर उसके साथियों ने उसके कहे अनुसार ऊपर नहीं खींचा बल्कि और नीचे ही गिराते गये।

जब वह गड्ढे की तली तक पहुँच गया तो उसको तीनों लड़कियाँ मिल गयीं। उसने उनमें से सबसे बड़ी वाली लड़की को उठाया और उसको ऊपर भेजते हुए आवाज लगायी — "ओ मिट्टी के ढेले खाने वाले। यह तेरी वाली आ रही है।"

फिर उसने दूसरी वाली को उठा कर ऊपर भेजते हुए कहा — “ओ बड़े खरगोश पकड़ने वाले। ले यह तेरी वाली आ रही है।”

आखीर में वह तीसरी वाली को अपनी पत्नी कह कर भेजने ही वाला था कि वह लड़की बोली — “मुझे लगता है कि तुम्हारे दोस्त तुम्हें धोखा देंगे।”

अस्फूरज़ीला थोड़ा जिद्दी किस्म का था। वह इसी बात पर ज़ोर देता रहा कि वह लड़की ही पहले ऊपर जाये। और वह लड़की यह कहती रही कि वह पहले जाये वह खुद उसके बाद आयेगी। लेकिन फिर लड़की को अस्फूरज़ीला की इच्छा के आगे झुकना ही पड़ा।

वह बोली — “यह तुम्हारी इच्छा है कि मैं पहले जाऊँ तो मैं पहले जाती हूँ पर तुम मेरी बात ध्यान में रखना कि मेरे वहाँ पहुँचने के बाद वे तुम्हें ऊपर नहीं खींचेंगे। उलटे इस गड्ढे को भर देंगे और फिर तुम यहाँ अकेले रह जाओगे।

यह मैं तुम्हें बता दूँ कि यहाँ तीन नदियाँ बहती हैं – एक काली एक नीली और एक सफेद। तुम सफेद नदी के अलावा और किसी नदी के पानी में अपना सिर मत भिगोना। कहीं ऐसा न हो कि तुम डूब जाओ।”

वैसा ही हुआ जैसा उस लड़की ने कहा था। जब तीनों लड़कियाँ ऊपर चली गयीं तो अस्फूरज़ीला के दोनों साथियों ने उस गडढे के चारों तरफ पत्थर रख दिये।

यह देख कर अस्फूरज़ीला इतना गुस्सा हुआ कि उसने काली नदी में अपना सिर डुबो दिया। जैसे ही उसने ऐसा किया कि वह पाताल लोक[40] में खिंचा चला गया।

वह वहाँ इधर उधर घूमता रहा। आखिर वह एक बुढ़िया की झोंपड़ी के पास आ गया। उसने आवाज लगायी — "माँजी माँजी थोड़ा पानी दीजिये पीने के लिये।"

बुढ़िया बोली — "बेटे इस समय तो मेरे पास पानी बिल्कुल भी नहीं है। वह हमको फिर तब मिलेगा जब ड्रैगन राजकुमारी को उठा कर ले जायेगा।"

अस्फूरज़ीला बोला — "कैसा ड्रैगन? कौन सा ड्रैगन?"

बुढ़िया बोली — "हमारा पानी एक ड्रैगन के पास रखा हुआ है। और अगर हम उसको एक आदमी खाने के लिये नहीं देते तो हमारा पानी नहीं बहता। हम सबने उसका यह कर्जा चुकाया है सिवाय राजा के। आज राजा की बेटी की बारी है।"

अस्फूरज़ीला बोला — "अच्छा। तो आप मुझे पानी भरने के लिये एक बर्तन दें। मैं आपके लिये पानी ले कर आता हूँ। मुझे तुरन्त ही वहाँ उस कुँए तक पहुँचना चाहिये।"

बुढ़िया ने उससे बहुत विनती की कि वह वहाँ न जाये पर वह उसकी सुनने वाला कहाँ था। सो वह बुढ़िया उठी और उसने उसको पानी भरने के लिये कुछ बर्तन ला कर दिये।

---

[40] Translated for the words "Lower Regions"

अस्फूरज़ीला ने उसके वे छोटे छोटे पानी के जग तोड़ दिये और उससे पूछा कि क्या उसके पास शराब रखने वाला कोई बड़ा बर्तन नहीं था जिसमें वह पानी भर कर ला सके। सो उसने उसको शराब रखने वाला बड़ा बर्तन ला कर दे दिया।

वह बर्तन ले कर अस्फूरज़ीला वहॉ से चला गया। जब वह नदी के किनारे आया तो उसने वहॉ बहुत कीमती कपड़े पहने हुए एक लड़की देखी। वह बहुत ज़ोर ज़ोर से रो रही थी। उसने उससे पूछा कि वह क्यों रो रही थी तब उसे पता चला कि वह राजकुमारी थी और ड्रैगन के इन्तजार में बैठी थी।

उसने उससे कहा — "तुम रोओ नहीं। चुप हो जाओ। आज के दिन मैं यहॉ सोऊॅगा। जब ड्रैगन आये तो मुझे उठा देना।"

उसने लड़की की गोद में अपना सिर रखा और तुरन्त ही गहरी नींद सो गया। ड्रैगन भी वहॉ जल्दी ही आ गया। लड़की अस्फूरज़ीला को उठाने में डर रही थी बल्कि वह और ज़्यादा फूट फूट कर रोने लगी। इससे उसका एक ऑसू अस्फूरज़ीला के गाल पर पड़ गया और वह जाग गया।

अस्फूरज़ीला ने जब ड्रैगन को देखा तो उसने अपना तीर कमान निकाला और उससे उसके टुकड़े टुकड़े कर दिये।

यह देख कर लड़की बहुत खुश हो गयी। वह तुरन्त भागी भागी घर गयी और अपने पिता से जा कर सारा हाल बताया कि ऐसा ऐसा हो गया है और ड्रैगन अब मर चुका है।

पहले तो किसी को विश्वास नहीं हुआ पर बाद में जब विश्वास हुआ तो राजा भी बहुत खुश हुआ। फिर उसने अपने आदमी उस नौजवान की खोज में भेजे। वह उससे अपनी बेटी की शादी करना चाहता था और उसको अपना आधा राज्य देना चाहता था।

राजा के आदमी उसको ढूँढते रहे ढूँढते रहे पर वह उनको कहीं नहीं मिला।

बाद में बुढ़िया राजा के महल में आयी और बोली — “योर मैजेस्टी मेरे ऊपर और मेरे बेटे के ऊपर दया करें।”

राजा को मालूम था कि उसके कोई बेटा नहीं था सो वह बोला — “तुम्हारे तो इससे पहले कभी कोई बेटा नहीं था। अब यह बेटा तुम्हें कहाँ से मिल गया।”

बुढ़िया बोली — “मेरा यह बेटा मुझे भगवान ने दिया है जिसने हमारे दुश्मन ड्रैगन को मारा है।”

राजा को इस बात की बड़ी खुशी हुई कि वह नौजवान मिल गया था। उसने अपने मन्त्रियों को उसको महल लाने के लिये भेजा। जब अस्फूरज़ीला राजा के पास आया राजा ने उसको बहुत सारा इनाम दिया पर वह उसको ले नहीं रहा था। उसने कहा अगर आप मुझे मेरी दुनियाँ में भेज देंगे मैं उसी में खुश रहूँगा।

यह सुन कर राजा बहुत दुखी हो गया। उसने बहुत जिद की पर वह नहीं माना तो उसने उससे वायदा किया कि वह उसको उसकी दुनियाँ में वापस भेज देगा।

इसके बाद अस्फ़ूरज़ीला अपनी बुढ़िया माँ के पास वापस गया। रास्ते में उसने एक बहुत बड़ा पेड़ देखा जिसकी सबसे ऊँची शाख पर एक चिड़िया का घोंसला था।

वहाँ पर एक ड्रैगन नीचे उड़ता हुआ आया तो उसे देख कर चिड़िया के बच्चे डर से चीख पड़े। जब अस्फ़ूरज़ीला ने देखा कि क्या होने वाला है उसने अपना तीर कमान निकाला और पलक झपकते ही उस ड्रैगन को मार दिया।

तभी बच्चों की माँ चिड़िया आ गयी। बच्चों ने उसे बताया कि क्या हुआ था तो वह अस्फ़ूरज़ीला के पास आयी और उससे पूछा — "तुम क्या चाहते हो। मैं तुम्हारी सेवा कर सकती हूँ।"

अस्फ़ूरज़ीला बोला — "मैं कुछ नहीं चाहता सिवाय इसके कि मैं अपनी दुनियाँ में वापस जाना चाहता हूँ।"

चिड़िया बोली — "हालाँकि यह काम मेरे लिये ज़रा मुश्किल है फिर भी मुझे तुम्हारे लिये यह काम क्यों नहीं करना चाहिये।"

फिर उसने उसको कुछ खाना साथ रखने के लिये कहा और यात्रा के लिये तैयार होने के लिये कहा।

अस्फ़ूरज़ीला राजा के पास वापस आया और उससे खाने का इन्तजाम करने के लिये कहा।

जब सब कुछ तैयार हो गया तो चिड़िया ने अस्फ़ूरज़ीला को अपनी पीठ पर बिठाया और उड़ चली। रास्ते में जब चिड़िया चिल्लायी तब अस्फ़ूरज़ीला ने उसके मुँह में खाना दे दिया।

जब वे अपनी दुनियॉ मे घुसने को थे तो वह चिड़िया फिर चिल्लायी पर अस्फूरज़ीला के पास तो अब और खाना नहीं था सो उसने अपनी टॉग में से कुछ मॉस काटा और उसे खिला दिया।

यह मॉस चिड़िया को इतना स्वाद लगा कि उसने उसे खाया नहीं बल्कि अपनी जीभ की नोक पर रख लिया। जब वे अपनी दुनियॉ आ गये तो चिड़िया ने कहा — "अच्छा विदा। अब तुम नीचे कूद जाओ और अपने घर चले जाओ।"

अस्फूरज़ीला चिड़िया के ऊपर से उतरा और अपने घर की तरफ जाने लगा पर वह ऐसे चल रहा था जैसे कोई लॅगड़ा चलता है। चिड़िया ने देखा तो उससे पूछा कि "तुम्हारे कहीं दर्द है क्या जो तुम लॅगड़े जैसे चल रहे हो।"

तब उसने बताया कि क्या बात थी। चिड़िया ने तुरन्त ही अपनी जबान पर रखा मॉस निकाला और उसकी टॉग के उस हिस्से पर चिपका दिया जहॉ से वह निकाला गया था। अब उसकी टॉग साबुत हो गयी थी और अब वह आराम से चल सकता था।

चिड़िया भी वहॉ से चली गयी और अस्फूरज़ीला भी वहॉ से अपने घर चला गया।

फिर अस्फूरज़ीला अपने साथियों की खोज में निकला। चलते चलते वह एक जगह आ कर रुक गया। वहॉ उसको अपने दोनों साथी मिल गये। वे उन दोनों लड़कियों से शादी करने जा रहे थे।

यह देख कर उसने अपना तीर कमान निकाला और उससे निशाना साधते हुए बोला — “किसको दोष दूँ आदमियों को या लड़कियों को?”

सबसे छोटी लड़की बोली — “इसमें लड़कियों का कोई दोष कैसे हो सकता है। यह तो साफ साफ आदमियों की गलती है।”

यह सुनते ही अस्फूरज़ीला ने अपने तीर चलाये और अपने दोनों साथियों को मार डाला। फिर वह तीनों लड़कियों को साथ ले कर चला गया। सबसे छोटी बहिन से उसने खुद ने शादी कर ली और दोनों बड़ी बहिनें अपने दोनों बड़े भाइयों को दे दीं।

13 एक गड़रिया और एक खुशनसीबी का बच्चा[41]

पता नहीं वह था भी या नहीं पर एक बार की बात है कि एक जगह एक आदमी था जिसकी एक पत्नी थी। उनके पास पैसा तो बहुत था पर उनके कोई बच्चा नहीं था।

एक बार पत्नी ने अपने पति से कहा — "चलो हम अपने बैलों को अपने चर्चों में रखते हैं। रात को कोई उनकी पहरेदारी कर लेगा। हो सकता है कि भगवान ऊपर से हमको देखे और शायद हमको एक बच्चा दे दे।"

पति ने उसके इस विचार को मान लिया और पॉच बैल पॉच चर्चों में रख आया।

एक दिन दोनों एक चर्च में गये वहॉ उन्होंने एक बैल मारा और अपने गड़रिये[42] को दिया और कहा — "लो इसका मॉस लो और गरीबों में बॉट दो। और देखो रात भर चर्च में ही रहना और पहरा देते रहना। और जो कुछ सुनायी दे उसको ठीक से सुनते भी रहना।"

गड़रिया यह सुन कर वहॉ से चला गया और बैल का मॉस गरीबों में बॉट दिया। फिर वह चर्च में चला गया और रात भर वहीं

[41] The Shepherd and the Child of Fortune (Tale No 13)

[42] Translated for the word "Shepherd"

रहा। पर उसने अपने मालिक के बच्चे होने के बारे में वहाँ कुछ भी नहीं सुना।

सुबह हुई तो गड़रिया मालिक के पास गया और उससे कहा — “मालिक मैं रात भर वहाँ बैठा रहा पर मैंने वहाँ एक आवाज भी नहीं सुनी।”

उसके बाद यह आदमी दूसरे चर्च में गया। वहाँ जा कर उसने अपना दूसरा बैल मारा और अपने गड़रिये को दे दिया और उससे कहा कि वह उसके माँस को गरीबों में बाँट दे जैसे उसने अपने पहले बैल का माँस बाँटा था।

और उससे फिर उस चर्च में रात भर ठहरने के लिये कहा और अगर कुछ भी आवाज सुनायी दे तो उसको ध्यान से सुनने के लिये कहा। गड़रिया रात भर चर्च में रहा और कोई आवाज सुनने की कोशिश करता रहा पर उसे उस रात भी वहाँ कोई आवाज सुनायी नहीं दी। अगले दिन सुबह को उसने यह बात मालिक को बतायी।

उसके बाद वह आदमी तीसरे और चौथे चर्च में गया पर वहाँ भी यही हुआ।

अब केवल पाँचवाँ चर्च ही बचता था। यहाँ भी मालिक के कहने पर गड़रिये ने एक बैल का माँस गरीबों में बाँटा और कोई आवाज सुनने के लिये चर्च में एक तरफ को छिप कर बैठ गया।

बीच रात में लो देखो तो वहाँ पाँच देवदूत[43] उड़ कर आये और आपस में बात करने लगे। सब देवदूत बोले — "हमें इस आदमी के लिये कुछ करना चाहिये। इसके कोई बच्चा नहीं है हमको इसे एक बेटा देना चाहिये।"

पहला देवदूत बोला — "हाँ यह तो तुम ठीक कहते हो पर जब वह 20 साल का हो जाये तब उसको हमारे पास लौट कर आ जाना चाहिये।"

दूसरे देवदूत ने कहा — "नहीं नहीं। जब पादरी उसको कैथेड्रल ले कर जाये और उसके सिर पर ताज रखे तब वह मर जाये।"

तीसरे देवदूत ने कहा — "नहीं। जब इसकी शादी हो जाये और बच्चे हो जायें तब यह मर जाये।"

चौथा देवदूत बोला — "नहीं नहीं। उसको बहुत दिनों तक ज़िन्दा रहना चाहिये। उसको बूढ़ा होना चाहिये। पर उसको एक बेकार का आदमी होना चाहिये।"

पाँचवाँ देवदूत बोला — "अगर हमें इस आदमी को एक बच्चा ही देना है तो हमें इससे उसको कुछ ज़्यादा अच्छा ही देना चाहिये।"

दूसरे देवदूत पाँचवें देवदूत से बोले — "हम लोग तो बोल चुके अब आपकी बारी है। आपको इस बारे में क्या कहना है।"

---

[43] Translated for the Word "Angels"

पॉचवॉ देवदूत बोला — “हमको इसको एक अमर नौजवान देना चाहिये। और उसको यह ताकत देनी चाहिये कि जो कुछ भी वह भगवान से मॉगे वह सब उसको मिल जाये।”

“बहुत अच्छे बहुत अच्छे। हमको ऐसा ही करना चाहिये।” दूसरों ने हॉ में हॉ मिलाते हुए कहा और फिर वे सब अपनी अपनी जगह चले गये।

वहॉ बैठे गड़रिये ने उनकी यह सब बातें सुनी। सुबह को जब वह मालिक के पास आया तो उसके मालिक ने उससे पूछा — “आज की रात क्या तुमने कुछ सुना?”

गड़रिये ने जवाब दिया — “जी सरकार। चर्च के पॉच देवदूत वहॉ आये और उन्होंने कहा कि इस साल के आखीर तक आपके एक बेटा होना चाहिये पर साथ में यह भी तय किया गया कि जिस समय आपके यह बेटा हो यह गड़रिया भी वहॉ पर मौजूद होना चाहिये।”

यह सुन कर आदमी और उसकी पत्नी दोनों बोले — “भगवान का लाख लाख धन्यवाद है। अगर हमारे एक बेटा होता है तो तुमको भी वहॉ मौजूद रहना चाहिये।”

इसके बाद गड़रिया अपनी भेड़ों के पास चला गया और आदमी और उसकी पत्नी अन्दर चले गये। एक साल गुजर गया। गड़रिये ने थोड़ी देर कर दी। उसने एक छोटी बकरी को अपने थैले में रखा और मालकिन के कमरे में चला गया।

आदमी की पत्नी बिस्तर में थी। जब मालिक की पत्नी के बच्चा हो गया तो उसने अपने मालिक के बच्चे को अपने थैले में रखा और बकरी के बच्चे को मालिक की पत्नी के बिस्तर की चादर में लपेट दिया। फिर उसने मालिक की पत्नी के सोने के कमरे का दरवाजा खोला और बच्चे को ले कर बाहर चला गया।

जब उसे गये हुए कुछ देर हो गयी तो बच्चा उसकी जेब में और ज़्यादा नहीं रुक सका। उसने उससे अपने आपको नीचे रखने के लिये कहा। गड़रिये ने उसे नीचे रख दिया तो वह तो अपने आप ही उठ कर वहाँ से चल दिया।

गड़रिये को यह पूरा विश्वास था कि अब उसकी सब इच्छाऐं पूरी हो जायेंगीं सो उसने बच्चे से कहा कि वह बोले — "मेरी इच्छा है इस मैदान में खूब सजा हुआ रहने लायक एक घर बन जाये। उसके बाहर एक गाँव हो जिसके ऊपर मैं राज कर सकूँ और फलाँ फलाँ राजकुमारी मेरी पत्नी बन जाये।"

लड़के ने जैसे ही यह इच्छा प्रगट की कि उसकी इच्छा के अनुसार वहाँ सब कुछ बन गया। उसके लिया एक बहुत बढ़िया मकान भी बन गया, गाँव भी आ गया और उसी राजकुमारी से उसकी शादी भी हो गयी।

कुछ समय बीत गया। एक बार राजकुमारी ने गड़रिये से पूछा — "ऐसा कैसे हुआ कि मुझ जैसी राजकुमारी ने तुम जैसे सीधे सादे गड़रिये से शादी कर ली?"

उसके पति ने जवाब दिया — "एक लोहे की सलाख गर्म करो और उसको लड़के के पैर के तलवे के नीचे यह देखने के लिये रखो कि वह सोया हुआ है या नहीं। अगर वह सोया हुआ है तब मैं तुम्हें सब बात बताऊँगा।"

बच्चा ये सब बात सुन रहा था उसने अपने दिल में यह इच्छा प्रगट की — "हे भगवान तू मेरे पैर इतने सख्त कर दे कि मुझे कुछ महसूस ही न हो।"

राजकुमारी ने लोहे की सलाख गर्म की और उसको लड़के के पैर के तले पर छुआया पर वह लड़का तो हिला भी नहीं सो गड़रिये ने सोचा कि वह सचमुच में सोया हुआ है तो उसने अपनी पत्नी को सब कुछ विस्तार से बता दिया।

बच्चा चुपचाप पड़ा रहा और सब कुछ सुनता रहा। आज उसे पहली बार पता चला कि वह किसका बेटा है और वह गड़रिये के पास कैसे आ गया।

अगली सुबह वह सुबह सवेरे तड़के उठा और अपने माता पिता को ढूँढने चल दिया। वह चलता रहा चलता रहा और हर जगह अपने गाँव की खबर पूछता रहा।

आखिर वह अपने गाँव आ गया। वहाँ आ कर वह अपने पिता के घर गया और बोला — "क्या आपको एक मेहमान चाहिये?"

"सचमुच, बच्चे, मेहमान तो भगवान के बराबर होता है। आओ अन्दर आओ।" कह कर वे उसको घर के अन्दर ले गये।

बच्चे ने उनसे पूछा — "क्या आपका कुछ खो गया है?"

पिता ने कहा — "हॉ बच्चे मैंने अपना गड़रिया खोया है। मुझे उसकी चार साल की तनख्वाह भी देनी है।"

बच्चे ने कहा — "मैंने उसको बहुत सारे पैसे, पत्नी और परिवार के साथ अभी अभी इधर आते हुए देखा है।"

रात को जब सब लोग सो गये तब लड़के ने यह इच्छा प्रगट की कि "आज की रात गड़रिया अपने घर, अपने परिवार और अपने गॉव सहित यहॉ हमारे ऑगन में मौजूद हो।"

अगली सुबह जब उसका पिता घर के बाहर निकला तो उसको बड़ा आश्चर्य हुआ — "हे भगवान यह क्या? मेरे ऑगन में इतना बड़ा गॉव कैसे बन गया?"

उसकी पत्नी ने कहा — "प्रिय यह तुम क्या कह रहे हो? यह ऑगन तो हमारा ही है पर क्या हम कहीं और हैं?"

आदमी बोला — "नहीं नहीं प्रिये। यह घर तो हमारा ही है पर इसके आसपास की जगह वैसी नहीं है जैसी कि होनी चाहिये।"

पत्नी बोली — "अच्छा ज़रा मुझे अन्दर देखने दो अगर उसके अन्दर कोई लड़का सो रहा है तो फिर तो यह घर हमारा ही है।"

लड़का जागा हुआ था पर उसने सोने का बहाना किया। आदमी और उसकी पत्नी अन्दर गये तो उन्होंने देखा कि लड़का तो अन्दर सो रहा है।

उन्होंने उसको जगाया और उससे पूछा — "तुम कौन हो जो यहाँ आये हो। हम तुमसे प्रार्थना करते हैं कि तुम हमें यह बताओ कि तुमने यह सब क्या किया है कि हम अपना घर भी नहीं पहचान पा रहे हैं।"

लड़का मुस्कुराया और बोला — "मैंने तो आपसे कल ही कहा था कि आपका गड़रिया अपना सब सामान ले कर आज ही यहाँ आ रहा है। और देखिये वह कल ही आ पहुँचा और आपके घर के आँगन में आ कर रहने लगा। चलिये इस गड़रिये को अब हम यहाँ बुलाते हैं।"

उसी समय गड़रिया भी जाग गया। उसको लगा कि वह अपने घर में नहीं है सो वह बिस्तर से कूदा और उसने बाहर झाँका तो चिल्लाया — "हे भगवान मैं कहाँ हूँ। मैं तो अपने घर में अच्छे से रह रहा था और अब मैं यहाँ कहाँ आ गया।"

वह तुरन्त अपने मालिक के पास गया और घुटनों के बल बैठ कर बोला — "मालिक मैंने ऐसा ऐसा किया है। मैंने बहुत बुरा किया है। अब मैं आपकी शरण में हूँ आप जैसा चाहें मेरे साथ वैसा ही करें।"

जब उस आदमी और उसकी पत्नी ने उसकी कहानी सुनी तो वह तो यह सोच ही नहीं सके कि वे अपनी खुशी दिखाने के लिये क्या करें। पहले तो दोनों ने एक एक कर के बच्चे को गले लगाया।

फिर बच्चे ने कहा — "मैं सचमुच में आप ही का बेटा हूँ पर यह गड़रिया भी आप ही का बच्चा है। इसने गलती तो की है पर आप इसको माफ कर दें और इसकी तनख्वाह इसको दे दें।"

बच्चे के पिता ने गड़रिये को माफ कर दिया और उसकी बची हुई तनख्वाह भी उसके दो दी।

पर फिर भी बच्चा सन्तुष्ट नहीं था। उसने अपने माता पिता से कहा — "पिता जी इस गड़रिये को मेरे बदले में कम से कम एक बकरी दे दीजिये। क्योंकि अगर मेरी माँ ने एक बकरी पाली तो इसने भी तो मुझे पाला।

अगर आप चाहें तो बकरी आप रख लें और मैं इसके साथ चला जाता हूँ। और अगर आप मुझे रख रहे हैं तो बकरी इसको दे दीजिये।"

लड़के के पिता ने कहा — "मैं इसको केवल बकरी ही नहीं दूँगा बल्कि मैं इसको अपने आधे जानवर भी दे देता हूँ।

कह कर लड़के के पिता ने अपने जानवर आधे आधे किये और उनमें से एक आधा हिस्सा अपने गड़रिये को दे दिया।

पिता अपने लड़के को घर के अन्दर ले गया। वह अपने माता पिता के साथ ही रहा और वे सब खुशी खुशी रहे।

14 दो चोर[44]

एक बार की बात है कि एक शहर में एक चोर था उसका नाम था बड़ा चोर। एक बार यह बड़ा चोर एक शहर में चोरी करने गया। कुछ दूर चलने पर इसको एक अजनबी मिला।

अजनबी बोला — "भगवान तुम्हें विजयी करे।"[45]

बड़ा चोर बोला — "तुम भी विजयी हो। तुम कौन हो और तुम क्या करते हो?"

अजनबी बोला — "मैं चोरी करता हूँ और मेरा नाम छोटा चोर है।"

बड़ा चोर बोला — "मैं भी चोर हूँ तो हमको आपस में साथी बन जाना चाहिये।"

छोटा चोर राजी हो गया और दोनों आपस में साथी बन गये। सो अब दोनों एक साथ चोरी करने चले। रास्ते में बड़े चोर ने छोटे चोर से कहा — "तुम साबित करो कि तुम चोर हो।"

छोटे चोर ने कहा — "तुम बड़े चोर हो पहले तुम मुझे अपनी चोरी की होशियारी दिखाओ। मैं तुम्हारे मुकाबले में क्या कर सकता हूँ मैं तो छोटा चोर हूँ।" बड़ा चोर मान गया।

---

[44] The Two Thieves (Tale No 14)

[45] Usual greetings among Georgians

उसी समय उन्होंने एक कबूतर एक पेड़ पर बैठे हुए देखा। बड़ा चोर बोला — "देखो अब तुम देखना कि मैं बिना कबूतर को पता चले उसकी पूँछ कैसे ले आता हूँ।"

इतना कह कर वह उस पेड़ के पास गया। जब वह आधे रास्ते में ही था तो छोटा चोर उस पेड़ के नीचे पहुँच गया। जब बड़ा चोर उस कबूतर की पूँछ खींच रहा था तो छोटे चोर ने अपने साथी का खींचने वाला चुरा लिया और तुरन्त ही पेड़ से नीचे उतर आया।

कुछ देर में बड़ा चोर पेड़ से नीचे उतर आया और बड़े गर्व से कबूतर की खींची हुई पूँछ छोटे चोर को दिखाने लगा तो छोटे चोर ने अपनी जेब में हाथ डाला और उसका खींचने वाला दिखा दिया।

जब बड़े चोर ने यह देखा तो वह तो आश्चर्य में पड़ गया। उसने कहा — "हालाँकि मैं बहुत बड़ा चोर समझा जाता हूँ पर मुझे लगता है कि तुम भी मुझसे कुछ कम नहीं हो।"

इस तरह दोनों ने एक दूसरे की चोरी की होशियारियाँ जाँचीं और आगे चल दिये।

रास्ते में छोटे चोर ने बड़े चोर से पूछा — "तो फिर आज क्या चोरी करें?"

बड़ा चोर बोला — "चलो आज हम लोग राजा का खजाना लूटने चलते है।"

"ठीक है।" छोटे चोर ने हाँ में हाँ मिलायी और वे राजा के महल की तरफ चल दिये।

रात को जब लोगों का आना जाना बन्द हो गया तो चोरों ने दो थैले लिये राजा के खजाने की तरफ चले। छोटे चोर ने कहा — “तुम खजाने में चढ़ो और पैसा इकट्ठा करो मैं थैले भरता हूँ और फिर हम दोनों उनको ले कर चलते हैं।”

पर बड़ा चोर इस बात पर राजी नहीं हुआ। उसने कहा — “नहीं तुम छोटे से हो इसलिये तुम राजा के खजाने के अन्दर घुसो और मैं यहाँ बाहर ठहरता हूँ।” और वह अपनी बात पर अड़ा ही रहा जब तक छोटा चोर उसकी बात नहीं मान गया।

सो आखिर छोटा चोर अन्दर घुसा। अन्दर जा कर उसने पैसा इकट्ठा किया और बड़े चोर ने बाहर रह कर उस पैसे को थैलों में भरा। जब उसके दोनों थैले भर गये तो उसने छोटे चोर को इशारा किया कि वह अब खजाने से बाहर निकल आये। सो छोटा चोर बाहर आ गया। दोनों ने थैले उठाये और घर आ गये।

अगले दिन राजा अपने खजाने में गया। जब उसने वहाँ इधर उधर देखा तो उसकी समझ में आ गया कि वहाँ क्या हुआ था।

उसने अपनी काउन्सिल बुलायी और उनको बताया कि उसके खजाने में क्या हुआ था। सब लोगों ने सोचा और सोचा और फिर इस नतीजे पर पहुँचे। उन्होंने एक बैरल[46] लिया उसको गोंद से भरा और खजाने के दरवाजे पर रखवा दिया।

[46] A barrel is a hollow cylindrical container traditionally made of wooden staves bound by wooden or metal hoops. It has a standard size – in UK it is 36 Imperial gallons (160 L, 43 US Gallons). Modern barrels are made of US Oak wood and measure 59, 60 and 79 US Gallons. A US Gallon is 3.8 Liter and an Imperial Gallon is 4.5 Liter.

चोरों को इस बारे में कुछ पता नहीं था। अगली रात को वे फिर से राजा के खजाने से पैसा चुराने के इरादे से आये। छोटे चोर ने कहा — "कल मैं खजाने के अन्दर गया था आज खजाने के अन्दर जाने की तुम्हारी बारी है। मैं तुमको देखता रहूँगा।"

बड़ा चोर राजी हो गया। वह जैसे ही खजाने में घुसा तो वह तो गोंद में पकड़ा गया। छोटे चोर ने उसको बहुत खींचा पर वह वहाँ से निकल ही नहीं सका। वह तो उसमें पूरा का पूरा गर्दन तक धँस गया था और अब उसका केवल सिर ही दिखायी दे रहा था।

कोशिश करते करते सुबह हो आयी। जब छोटे चोर ने देखा कि वह अपने साथी को किसी तरह भी नहीं निकाल सका तो उसने अपने साथी की गर्दन काटी और उसको एक ऐसी जगह छिपा दिया जहाँ कोई आदमी उसको ढूँढने की सोच भी नहीं सकता था।

इसके बाद वह अपने साथी के घर गया और उसके बारे में उसकी पत्नी को बताया। उसकी पत्नी सब कुछ सुन कर बहुत दुखी हुई।

छोटे चोर ने उसको उसके पति के बारे में सावधान किया और कहा कि वह कहीं बाहर न जाये क्योंकि अगर किसी को पता चल गया कि हम लोग उसके बारे में जानना चाहते हैं तो वे लोग यकीनन हमें पकड़ लेंगे और हमें मार देंगे।

जब सुबह हुई तो राजा के दरबारी खजाने की तरफ देखने गये कि कोई चोर पकड़ा गया या नहीं। उन्होंने देखा कि एक चोर जाल

में पकड़ा तो गया है पर उसका सिर नहीं है। यह बात उन्होंने जा कर राजा से कही।

यह सुन कर राजा वह सब देखने के लिये खुद वहाँ गया तो उसने देखा कि उसके दरबारी ठीक कह रहे थे। चोर तो फँस गया था पर उसका सिर वहाँ नहीं था। यह देख कर तो वह आश्चर्यचकित रह गया। बिना सिर का आदमी चोरी कैसे कर सकता था।

उसने उनको हुक्म दिया — "इसके शरीर को ले जाओ और बीच बाजार में रख दो। वहाँ कुछ पहरेदार रख दो जो इसकी रखवाली करें। जो इसके पास से गुजरे और इसको देख कर रोये समझो कि वही इसका साथी है क्योंकि उस समय वह इस मरने वाले के लिये सहानुभूति दिखा रहा होगा। बस तुम उसको पकड़ कर मेरे पास ले आना।"

जब छोटे चोर ने यह सुना तो वह बड़े चोर के घर गया और उसकी पत्नी को बताया कि उसको क्या करना है। उसने कहा कि वह इस बात का पूरा पूरा खयाल रखे कि वह बाहर न जाये कहीं ऐसा न हो कि वे तुमको पहचान जायें।

उसने उसको राजा के हुक्म के बारे में भी बताया कि उसने क्या हुक्म दे रखा है।

बड़े चोर की पत्नी यह सब कुछ न सह सकी और उसने उससे यह कहते हुए प्रार्थना की कि वह उसको वहाँ जाने की इजाज़त दे

दे। बस वह दूर खड़ी रहेगी और चुपचाप रोयेगी। उसे कोई पहचान नहीं पायेगा।

छोटा चोर बोला — "ठीक है पर सावधान रहना। अपने साथ पानी का एक घड़ा लेती जाना जिससे ऐसा लगे कि तुम पानी भरने जा रही हो। जब तुम अपने पति के पास पहुँच जाओ तो अपना पैर किसी पत्थर से मार लेना और अपना घड़ा तोड़ देना। फिर रोने बैठ जाना जिससे ऐसा लगे कि तुम अपने टूटे घड़े के लिये रो रही हो।"

बड़े चोर की पत्नी ने वैसा ही किया जैसा कि उससे करने के लिये कहा गया था। उसने अपने कन्धे पर पानी भरने वाला एक घड़ा रखा और पानी भरने चली।

जब वह उस जगह के पास पहुँची जहाँ उसके पति की लाश पड़ी हुई थी उसने अपना पैर एक पत्थर पर मारा और घड़ा नीचे गिरा दिया। इससे वह टूट गया।

तब वह उस टूटे हुए घड़े के टुकड़ों के पास बैठ गयी और रोने लगी – दूसरे लोगों के लिये घड़े के लिये पर वास्तव में अपने पति के लिये। जब वह काफी रो चुकी तब वह उठी और वहाँ से चली गयी।

यह देख कर पहरेदारों को बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने आपस में कहा — "यह स्त्री बेचारी कितनी बदकिस्मत होगी जो एक टूटे घड़े के लिये इतना रो रही थी।"

रात हुई तो पहरेदार चोर के शरीर को ले कर राजा के पास आये और राजा से कहा — "हमने वहाँ किसी को रोते नहीं देखा सिवाय एक स्त्री के जिसको एक पत्थर से ठोकर लग गयी थी इससे वह गिर गयी और उसका मिट्टी का घड़ा टूट गया। और इसके लिये वह काफी देर तक बहुत ज़ोर ज़ोर से रोती रही।"

राजा यह सुन कर बहुत नाराज हुआ क्योंकि उसने जान लिया कि इस तरह से उस स्त्री ने चाल खेली थी। वह पहरेदारों पर बहुत गुस्सा हुआ कि उन्होंने उसको क्यों नहीं पकड़ा। उसको वे उसके पास क्यों नहीं लाये क्यों उसको जाने दिया।

क्योंकि वह स्त्री उस चोर की जरूर ही कुछ रही होगी। सो राजा ने उन पहरेदारों का सिर धड़ से कटवाने का हुक्म दे दिया।

अब क्योंकि यह तरकीब नाकामयाब रही सो राजा ने दूसरी तरकीब सोची। अबकी बार राजा ने चोर की लाश शहर के बाहर भेजी और उसको वहीं छुड़वा दिया। शायद ठीक आदमी उसको वहाँ देख ले और उसको वहाँ से चोरी करने के लिये आये।

यह खबर सुन कर छोटा चोर एक गधा हाँक कर उसके पास वाले गाँव में ले गया। वहाँ उसने कुछ केक बेक करवायीं कुछ टर्की और मुर्गे भुनवाये उन सबको एक थैले में रखा और गधे पर लाद लिया। उसके बाद उसने थोड़ी सी शराब खरीदी और फिर जहाँ बड़े चोर की लाश पड़ी हुई थी वहाँ चल दिया।

वह उस जगह पर आया जहॉ राजा के पहरेदार बड़े चोर की लाश पर पहरा दे रहे थ। वहॉ आ कर वह चिल्लाया — "क्या तुम लोग एक मेहमान को नहीं चाहोगे? मैं बहुत दूर से आया हूं और आज की रात यहॉ ठहरना चाहता हूं। मुझे डर है कि कहीं कोई मेरा गधा न चुरा ले इसलिये मैं तुम लोगों के पास ही बैठना चाहता हूॅ। चलो पहले अच्छा सा खाना खाते हैं।"

पहरेदारों ने जब खाने की बात सुनी तो वे तो बहुत खुश हो गये। सो सब खाना खाने बैठे। छोटे चोर ने उनके लिये शराब परोसी। उन सबने शराब पी पर छोटे चोर ने वह शराब नहीं पी।

जब उन सब लोगों ने काफी खा पी लिया तो छोटा चोर बोला — "अब मुझे नींद आ रही है मैं सोने जा रहा हूं। मेहरबानी कर के ज़रा मेरे गधे का ध्यान रखना कोई इसे चुरा न ले जाये। अगर यह चोरी हो गया तो मैं राजा के पास जाऊॅगा और तुम्हीं को इसका जिम्मेदार ठहराऊॅगा।"

पहरेदार बोले — "जाओ और जा कर लेटो और आराम करो। तुम्हारा गधा कोई इतना खूबसूरत नहीं है जो तुमको इसके चोरी होने का डर रहे।"

छोटा चोर लेट गया और सोने का बहाना करने लगा पर उसका ध्यान उन पहरेदारों की तरफ ही लगा रहा। कुछ देर बाद ही सब पहरेदार गहरी नींद सो गये। वे इतनी गहरी नींद सो गये थे जैसे मर ही गये हों।

छोटा चोर उठा उसने अपने मरे हुए साथी की सिर कटी हुई लाश अपने गधे पर डाली और उस गधे का मुँह घर की तरफ कर दिया। खुद वह वहीं पर फिर से सो गया।

गधे को अपने घर का रास्ता मालूम था सो उसने अपना सिर नीचे किया जैसे वह ध्यान कर रहा हो और अपने घर की तरफ चल दिया और जा कर घर का दरवाजा खटखटाया।

बड़े चोर की पत्नी ने दरवाजा खोला अपने पति की लाश गधे पर से उतारी एक काउच पर रखी और रोने लगी। जब वह काफी रो चुकी तो उसने उसको काउच के नीचे जमीन में दफ़न कर दिया।

सुबह हुई तो पहरेदार जागे तो उन्होंने अपने मेहमान को जगाया। छोटा चोर जागा तो उसने इधर उधर देखा और अपने गधे को पुकारा। उसने देखा कि वह तो वहाँ नहीं है तो उसने डर के मारे चिल्लाना शुरू कर दिया।

उसने कहा — "मैं राजा के पास जाऊँगा जा कर उनसे तुम्हारी शिकायत करूँगा।"

यह सुन कर पहरेदार बहुत डर गये। और यह देख कर तो उनका सिर ही घूम गया कि वहाँ से तो उनके मेहमान का केवल गधा ही नहीं बल्कि वह लाश भी गायब है जिसकी पहरेदारी के लिये वे वहाँ रखे गये थे।

उन्होंने कुछ पैसा अपनी जेब से निकाला और अपने मेहमान को अपना मुँह बन्द रखने के लिये दिया। यही तो वह छोटा चोर

चाहता भी था। उसने न केवल अपने दोस्त की लाश ले ली थी बल्कि कुछ पैसे भी बना लिये थे।

पहरेदार राजा के पास गये। राजा ने जब उनकी कहानी सुनी तो वह तो फिर बहुत नाराज हुआ। उसने उनका भी सिर काटने का हुक्म दिया।

राजा ने देखा कि उसका तो यह दूसरा प्लान भी नाकामयाब रहा सो उसने फिर तीसरा प्लान सोचा।

अबकी बार उसने एक सड़क पर पैसे बिखेर दिये और अपने पहरेदारों को कहा कि वह यह देखें कि कोई उन पैसों को बटोरने के लिये आता है या नहीं। और अगर कोई आये तो उसको पकड़ लें क्योंकि वह या तो उस चोर का मालिक होगा या फिर उसका साथी होगा।

छोटे चोर ने जब यहा सुना तो वह तो बहुत खुश हो गया। उसने अपने एक जोड़ी जूते में तारकोल लगाया उनको अपनी बगल में दबाया और वहाँ चल दिया जहाँ पैसे बिखरे पड़े थे।

जब वह उस सड़क के पास आया जहाँ पैसे बिखरे पड़े थे तो उसने अपने पहने हुए जूते उतारे और तारकोल लगे जूते पहने और उस सड़क पर निडर हो कर कोई गीत गुनगुनाता हुआ चलने लगा।

जब वह उस सड़क के आखीर तक पहुँचा तो वहाँ पहुँच कर उसने अपने जूतों में चिपके हुए पैसे निकाले जो उनमें तारकोल की वजह से चिपक गये थे और उनको एक गड्ढे में दबा दिया।

फिर वह उसी सड़क पर वापस लौट गया। सड़क के आखीर में जा कर उसने फिर से अपने जूते साफ किये और जो पैसे फिर से उसके जूतों में चिपक गये थे वे निकाल कर जमीन में गाड़े और फिर उसी सड़क पर वापस चल दिया।

ऐसा वह सारा दिन करता रहा। इस बीच उसने राजा के फैलाये हुए पैसों में से करीब करीब आधे पैसे अपने जूतों में चिपका लिये थे।

शाम को पहरेदारों ने जो कुछ पैसे वहाँ बचे थे उन्हें इकट्ठा किया और राजा के पास पहुँचे और उनको बताया कि वहाँ पैसे लेने के लिये तो कोई नहीं आया था पर एक आदमी उस सड़क पर सुबह से शाम तक चलता रहा।

राजा को यह सुन कर फिर से बहुत गुस्सा आया। उसने कहा — "जो आदमी सड़क पर सारा दिन चलता रहा वही तो वह आदमी था जो मेरे पैसे ले गया। और वही उस चोर का साथी था। तुमको उसी को तो पकड़ना था।"

सो गुस्से में आ कर उसने उन पहरेदारों का भी सिर कटवाने का हुक्म दे दिया।

अब राजा बहुत परेशान हो गया था क्योंकि अपनी कई कोशिशों के बावजूद वह किसी को नहीं पकड़ पा रहा था सो अबकी बार उसने अपने सलाहकारों को बुलाया और उनसे सलाह माँगी।

इस राजा के पास एक हिरनी थी। अगर वे उसको खोल देते तो वह उसके घर के सामने घुटनों पर बैठ जाती जिसने राजा के खिलाफ कोई काम किया होता था।

सो वज़ीर[47] बोला — "योर मैजेस्टी, हम इस हिरनी को खोल देते हैं। यह हिरनी चोर के घर के सामने अपने घुटने मोड़ कर बैठ जायेगी। इससे हम चोर को पहचान लेंगे।"

राजा ने उनकी सलाह मान ली और हिरनी को खोल दिया गया। हिरनी सड़कों पर भागती रही और आखीर में छोटे चोर के घर के सामने जा कर अपने घुटनों पर बैठ गयी।

सुबह को जब छोटा चोर जागा तो उसने अपनी खिड़की से बाहर झॉका तो देखा कि राजा की हिरनी तो उसके घर के सामने बैठी हुई है।

उसने इस हिरनी के बारे में पहले से सुन रखा था तो वह समझ गया कि इसका क्या मतलब था। वह तुरन्त बाहर गया और हिरनी को पकड़ कर अन्दर ले आया। उसने उसको मार दिया और उसकी खाल निकाल ली। खाल तो उसने छिपा दी और उसका मॉस घर में रख लिया।

जब राजा को उसकी हिरनी नहीं मिली तब तो राजा गुस्से से पागल ही हो गया। उसने फिर अपने वज़ीरों को बुलाया और उनको अपनी खोयी हुई हिरनी की कहानी सुनायी।

---

[47] Vazeer means Minister

वज़ीरों की तरकीबें अब खत्म हो चुकी थीं। वे अब चोर को पकड़ने के लिये किसी और जाल के बारे में सोच ही नहीं सके।

तभी वहाँ कहीं से एक बुढ़िया आ गयी। वह राजा के पास गयी और बोली — “आप मुझे क्या देंगे अगर मैं आपकी खोयी हुई हिरनी ढूँढ दूँ।”

राजा बोला — “जो तुम चाहो।”

बुढ़िया बोली — “तो आप मुझे आजाद कर दें।”

राजा बोला — “न मैं केवल तुम्हें आजाद कर दूँगा बल्कि तुम्हें मैं राजकुमारी का ओहदा दे दूँगा। तुम बस मेरी हिरनी ढूँढ दो।” सो बुढ़िया उठी और हिरनी ढूँढने चली गयी।

वह शहर में चारों तरफ हिरनी का माँस माँगती हुई घूमती रही पर किसी के पास हिरनी का माँस नहीं था। घूमते घूमते वह छोटे चोर के घर तक आयी। छोटा चोर उस समय घर में नहीं था पर बड़े चोर की पत्नी घर में थी।

उसने उससे कहा — “बेटी अगर तुम्हारे पास हिरनी का थोड़ा सा माँस हो तो मुझे दे दो। मुझे यह एक बीमार आदमी के इलाज के लिये चाहिये।”

बड़े चोर की पत्नी को बुढ़िया की चालाकियों का पता नहीं था सो वह घर में गयी और हिरनी के माँस का एक टुकड़ा ला कर उसको दे दिया। बुढ़िया हिरनी के माँस को देख कर बहुत खुश हुई। उसको ले कर वह तुरन्त ही राजा के पास चल दी।

कुछ दूर जाने के बाद ही उसको छोटा चोर मिल गया। छोटे चोर ने उससे पूछा — "यह आप क्या ले कर जा रही हैं माँ जी?"

बुढ़िया बोली — "थोड़ा सा हिरनी का माँस है बेटा इसे मैं अपने इलाज के लिये ले जा रही हूँ। यह मुझे उस घर से एक स्त्री ने दिया है।"

छोटा चोर समझ गया कि यह बुढ़िया जरूर कुछ चालाकी कर के जा रही है। सो वह उससे बोला — "इतने छोटे से माँस के टुकड़े का क्या फायदा है। आप मेरे साथ चलिये तो मैं आपको बहुत सारा हिरनी का माँस दूँगा। अगर आप उसको पूरा न खा सको तो बाकी बचा आप अपनी दोस्तों को दे दीजियेगा। इस तरह से वह आपके काम आयेगा।"

बुढ़िया तो यह सुन कर बहुत खुश हो गयी। वह लौट पड़ी और छोटे चोर के साथ बहुत सारा हिरनी का माँस लेने के लिये उसके साथ चल पड़ी।

जैसे ही वह धोखा देने वाली बुढ़िया छोटे चोर के साथ उसके घर में घुसी कि छोटे चोर ने अपनी कटार निकाली और उसका सिर काट लिया। उसका शरीर भी उसने उसी काउच के नीचे जमीन में दफ़न कर दिया जिसके नीचे बड़े चोर का शरीर दफ़न था।

इधर राजा उस बुढ़िया का इन्तजार करता रहा कि वह उसको उसकी हिरनी की खबर ला कर देगी पर वह तो आयी ही नहीं।

जब कुछ समय बीत जाने पर भी बुढ़िया नहीं आयी तो राजा का गुस्सा तो सातवें आसमान पर चढ़ गया।

उसने अपने सलाहकारों को फिर से बुलाया और कहा — "इस सबसे हमें क्या फायदा हो रहा है। क्या इस चोर को पकड़ने का कोई रास्ता नहीं है?"

वजीर बोले — "योर मैजेस्टी, यह चोर इतना बहादुर और होशियार है कि हम लोग इसको पकड़ ही नहीं पा रहे।"

यह सुन कर राजा उठा और बोला — "उस चोर को मेरे पास आने दो। मैं उसको कोई नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा बल्कि अपनी बेटी की शादी उसके साथ कर दूँगा। क्योंकि वह इतना चालाक है कि मैं उसको चालाकी से नहीं पकड़ सकता।"

जब छोटे चोर ने यह सुना तो वह राजा के पास गया और बोला — "मैं ही वह चोर हूँ जिसे आप ढूँढ रहे हैं और मैं योर मैजेस्टी की इच्छा पूरी करने आया हूँ।"

अब राजा तो अपने कहे से मुकर नहीं सकता था सो उसने अपनी बेटी की शादी उस चोर से कर दी।

पड़ोसी राजा ने यह कहानी सुनी तो उसने उस चोर के ससुर राजा को रोज कई तंग करने वाली चिट्ठियाँ लिखीं — "क्या तुम एक नीच चोर को अपना दामाद बना कर कोई शर्मिन्दगी महसूस नहीं कर रहे हो?"

राजा इन चिट्ठियों को पा कर बहुत गुस्सा हो रहा था। जब वह उनको और नहीं सह सका तो आखिर वह बीमार पड़ गया।

राजा की बीमारी देख कर उसका चोर दामाद उसके पास आया और उससे पूछा — "राजा साहब क्या बात है। आप क्यों बीमार हैं?"

राजा ने उसको सारी बात बता दी तो चोर बोला — "आप इतने परेशान क्यों होते हैं। मुझे कुछ दिनों की छुट्टी दे दीजिये तब मैं आपको कुछ दिखाऊँगा। फलॉ फलॉ दिन आप एक बहुत बढ़िया दावत का इन्तजाम कीजिये और मैं यहॉ मौजूद रहूँगा।"

यह कह कर उसने दावत का एक दिन निश्चित किया और वहॉ से चला गया। चलते चलते वह उस पड़ोसी राजा के देश में आया जो उसके ससुर की हॅसी उड़ा रहा था। वहॉ आ कर वह एक घर में ठहर गया।

अगले दिन वह एक दर्जी से मिला। उसने उससे कहा — "मुझे एक पोशाक बनवानी है जो खाल की बनी हो और जो बहुत सारे रंगों की हो। उसके ऊपर कुछ घंटियॉ भी हों।"

दर्जी ने उसके लिये वैसी ही पोशाक बना दी। चोर ने उसको उसका पैसा दिया वह पोशाक पहनी हाथ में एक नंगी चमकती हुई तलवार ली और राजा के महल जा पहॅुचा।

महल के पहरेदार उसको अन्दर नहीं आने दे रहे थे तो चोर ने कहा — "मैं भगवान का भेजा हुआ माइकल गैब्रील हूॅ। मुझे यह

हुक्म मिला है कि मैं तुम्हारे राजा और रानी की आत्माओं को स्वर्ग ले जाऊँ और अगर तुम लोग मुझे परेशान करो तो मैं तुम्हारी आत्माओं को भी ले जाऊँ और उनको नरक में भेज दूँ।"

ऐसा कह कर वह उनमें से एक की तरफ आगे बढ़ा तो उसकी पोशाक में लगी घंटियाँ बज उठीं। पहरेदार यह सब सुन कर और देख कर डर गये तो वे छिप गये।

चोर को रास्ता मिल गया तो वह राजा के पास गया। राजा ने जब उस आदमी को देखा तो वह तो पीला पड़ गया।

माइकल गैब्रील बोला — "मैं तुमको तीन दिन की मोहलत देता हूँ। इन तीन दिनों में तुम अपना हिसाब किताब ठीक कर लो और अपना वारिस निश्चित कर लो। अपना सब कुछ उतार दो और

अपने आपको और अपनी पत्नी को ताबूतों में बन्द कर लो और उनकी चाभी उसके ऊपर रख दो। तीन दिन बाद मैं फिर आऊँगा ताबूतों को ताला लगाऊँगा और उनको अपने साथ ले जाऊँगा।"

यह कह कर वह वहाँ से चला गया। वह वापस घर आया अपनी खालों वाली पोशाक उतारी और तीन दिन तक इन्तजार किया।

तीसरे दिन वह वैसे ही तैयार हुआ जैसे वह पहले तैयार हुआ था और राजा के महल पहुँच गया। वहाँ राजा और रानी ने अपना

सब कुछ उतार दिया था और ताबूत में लेटे हुए माइकल गैब्रील का इन्तजार कर रहे थे।

वहाँ आ कर वह बोला — "जब तुम स्वर्ग पहुँचो तो तुम वहाँ मीठा सा संगीत सुनोगे। तब ताबूत खोले जायेंगे और तुम स्वर्ग का शानदार दृश्य देखोगे।"

फिर उसने चाभियाँ उठायीं ताबूतों को ताला लगाया उनको अपनी पीठ पर रखा और उनको बाहर ले चला। बाहर निकल कर उसने उनको अपने गधे पर लादा फिर गधे के पीछे जा कर उसको कहा "चल बेटा चल।"

तय किये दिन वह अपने ससुर के राज्य आया। उस दिन राजा ने अपने राज्य के सारे लोगों को और पड़ोसी राज्य के बहुत सारे राजकुमारों को दावत के लिये बुला रखा था।

चोर वहाँ ताबूतों के साथ आया। उसने गधे पर से ताबूत उतारे तो बड़ा मीठा सा संगीत सुनायी पड़ा। फिर चोर ने ताबूत खोले तो राजा और रानी ताबूतों में से कूद कर नंगे ही निकल पड़े और नाचने लगे। वहाँ आये लोगों ने उनकी वह बेवकूफी देखी तो वे तो हँसते हँसते दोहरे हो गये।

तब राजा आया उसने उनको शाही कपड़े पहनाये और कहा — "अब आप लोग अपने देश वापस जा सकते हैं और अपने राज्य पर राज कर सकते हैं। आगे से कभी किसी का मजाक मत बनाना।"

उसके बाद तो राजा अपने दामाद को बहुत प्यार करने लगा और जब वह मरा तो अपने बाद उसको वहाँ का राजा बना गया।

15 एक लोमड़ा और एक राजा का बेटा[48]

एक बार की बात है कि एक राजा था जिसके एक ही बेटा था। सब उसके साथ बुरा बर्ताव करते थे और उसको अपने पास से भगा देते थे। यहाँ तक कि आस पास से जाने वाले भी उसकी तरफ देखना पसन्द नहीं करते थे।

राजकुमार ने सोचा और सोचा और सोचा कि क्या किया जाये। आखिर वह अपने घोड़े पर चढ़ा अपना तीर कमान लिया और अपने पिता के महल से चल दिया।

चलते चलते वह एक जंगल में आ गया। वहाँ उसने एक अच्छी सी जगह चुन कर अपने लिये मिट्टी की एक झोंपड़ी बनायी और उसमें रहने लगा।

वह रोज शिकार करने जाता और रोज ही कोई न कोई बारहसिंगा या फिर कोई हिरन मार कर घर ले आता। उसमें से काफी सारा माँस खाने के बाद में भी उसके पास अगले दिन के लिये काफी माँस बच जाता पर वह उसको अगले दिन खाता नहीं था। क्योंकि वह अगले दिन वह फिर शिकार के लिये जाता था।

इस तरह से उसके पास बहुत सारा माँस बचा पड़ा था। एक लोमड़ा यह सब देख रहा था। रोज जब राजकुमार शिकार करने के लिये चला जाता तो वह उसकी झोंपड़े में जाता और उसका बचा

---

[48] The Fox and the King's Son (Tale No 15)

हुआ सारा खाना खा जाता। और फिर वहाँ से चुपचाप चला आता।

कुछ दिनों तक ऐसे ही चलता रहा। एक दिन लोमड़े ने सोचा "इस तरह से माँस चुराने में न तो कोई मजा है और न ही कोई बहादुरी कि मैं उसका सारा माँस इस तरह छिप कर ले आता हूँ और फिर भी बहुत सारा पड़ा रह जाता है। मुझे उसको अपने आपको दिखाना चाहिये।"

सो एक बार जब राजकुमार शिकार के लिये गया हुआ था तो वह लोमड़ा उसके घर में घुस गया। वहाँ जा कर पहले उसने माँस खाया और फिर उसकी झोंपड़ी में रखी उसकी सब चीज़ें ठीक कर के रखने लगा।

जब राजकुमार घर आया तो वह उसके सामने ही वहाँ से कूद कर बाहर भागने लगा। पर राजकुमार भी कोई सुस्त नहीं था। उसने तुरन्त अपनी कमान निकाली और उस पर तीर रख कर चलाने ही वाला था कि लोमड़ा बोला — "मुझे मत मारो। मैं तुम्हारी तुम्हारी किस्मत बनाने में सहायता करूँगा।"

सो राजकुमार का हाथ रुक गया और उसने लोमड़े को नहीं मारा। अब लोमड़ा राजकुमार के घोड़े की देखभाल करता और उसको घास चराता। इस तरह से रहते रहते उन्हें कुछ समय बीत गया।

लोमड़ा उसकी आग जलाता उसकी झोंपड़ी की सफाई करता और घर का सब काम करता। इस सबके बाद भी राजकुमार का लाया काफी मॉस बच जाता।

एक दिन लोमड़ा बोला — "मैं जा कर किसी को ढूँढ कर लाता हूँ जो इस मॉस को खाने में हमारी सहायता करे।"

सो वह बाहर गया और एक भेड़िये को देखा जो भूख के मारे इतना कमजोर हो गया था कि वहा जहाँ था वहाँ से बहुत मुश्किल से हिल पा रहा था।

लोमड़ा बोला — "आओ मेरे साथ मेरे घर चलो। वहाँ तुमको हर चीज़ बहुत सारी मिलेगी।" भेड़िया उसके पीछे पीछे चल दिया।

दोनों झोंपड़ी में आये तो लोमड़े ने भेड़िये से कहा — "मैं घर की सफाई करता हूँ तुम यहीं ठहरो जब मालिक आ जायें तो तुम उनके घोड़े की देखभाल करना।"

कुछ देर बाद राजकुमार आ गया। उसके घोड़े की जीन से एक बारहसिंगा लटक रहा था। भेड़िया उसको देखते ही घोड़े की देखभाल के लिये कूद पड़ा।

राजकुमार ने तुरन्त भेड़िये को मारने के लिये अपनी कमान निकाली और भेड़िये को तीर मारने ही वाला था कि लोमड़ा बोला — "उसे मत मारो। वह हमारा दोस्त है।"

राजकुमार रुक गया उसने भेड़िये को नहीं मारा और अपने घोड़े से उतर पड़ा। उसने अपने घोड़े से बारहसिंगा उतारा और घर में चला गया।

भेड़िया घोड़े की देखभाल करने लगा और उसको इधर उधर घुमाने लगा। लोमड़ा घर के अन्दर की देखभाल करता रहा। इस तरह उनको फिर कुछ समय बीत गया।

लोमड़े ने देखा कि मॉस अभी भी काफी बच जाता है। सो वह एक बार फिर बाहर गया और एक भालू को बुला लाया। भेड़िये को घास लाने के लिये भेज दिया गया। भालू को घोड़े की देखभाल करने के लिये रख दिया गया। और लोमड़ा घर की देखभाल करता रहा।

थोड़ी देर में ही राजकुमार घर आया तो भालू कूद कर घोड़े की देखभाल के लिये आगे बढ़ा तो राजकुमार ने अपनी कमान निकाल कर उसे तीर मारना चाहा तो लोमड़ा चिल्लाया — "इसे मत मारो यह तो एक दोस्त है।"

सो राजकुमार ने भालू को नहीं मारा। भालू ने फिर घोड़े की देखभाल की और उसको घुमाने ले गया। कुछ देर में भेड़िया घास ले कर आ गया। उसने घोड़े को घास खिलायी।

फिर कुछ समय बीत गया। लोमड़े ने देखा कि मॉस अभी भी बहुत बच रहता है सो वह फिर बाहर गया और अबकी बार वह एक गरुड़ को घर ले आया।

उसने गरुड़ से कहा कि वह घोड़े की देखभाल करे भालू को घास लाने के लिये भेज दिया भेड़िये को जंगल से जलाने के लिये लकड़ी लाने के लिये भेज दिया और खुद वह उसके घर की देखभाल करता रहा।

इस तरह से अब सबके पास अपना अपना काम था। जब मालिक घर लौटा तो गरुड़ घोड़े की देखभाल के लिये उड़ा। राजकुमार उसको तीर मारने ही वाला था कि लोमड़ा चिल्लाया — उसको मत मारना वह हमारा दोस्त है।"

राजकुमार ने उसको मारा तो नहीं पर मन ही मन में सोचा "अबकी बार यह लोमड़ा पता नहीं किसको ले कर आयेगा। क्या मुझे सारे शिकार यहीं मिल जायेंगे।" इस तरह से वे फिर कुछ दिन तक रहते रहे।

एक बार लोमड़े ने मालिक से कहा — "हमको दो हफ्ते की छुट्टी चाहिये। दो हफ्ते बाद हम आपके पास लौट आयेंगे।"

मालिक ने सबको छुट्टी दे दी और अपने मन में सोचा "मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता अगर तुम लोग वापस न भी आओ तो। क्योंकि मुझे तुम सबसे बहुत डर लगता है।

इस तरह लोमड़ा भेड़िया भालू गरुड़ सब राजकुमार से दो हफ्ते की छुट्टी ले कर चले गये। चलते चलते वे एक जंगल में एक खाली जगह जा पहुँचे जहाँ जा कर उन्होंने आराम किया।

लोमड़े ने अपने साथियों से कहा — “अब हमको अपने मालिक के लिये एक बहुत अच्छा घर बनाना चाहिये।” सो सब जानवर राजकुमार के लिये मकान बनाने में लग गये।

भेड़िये ने पेड़ काटे। भालू ने उस लकड़ी को जिस तरीके की शक्लों में काटना चाहिये था उस शक्ल में काटा और उनको जोड़ा। गरुड़ उनको ले कर गया। और लोमड़े ने उनको सबको बताया कि फिर क्या करना है।

जब लकड़ी तैयार हो गयी तब वे मकान बनाने के लिये तैयार हुए। उन्होंने इतना सुन्दर मकान बनाया कि उसके जैसा मकान राजकुमार सपने में भी नहीं सोच सकता था। मकान तो बन कर तैयार हो चुका था पर अभी उसमें कोई फर्नीचर नहीं था।

लोमड़ा उठा और अपने साथियों को ले कर पास के शहर में गया। वहाँ जा कर वे बाजार गये और घर के लिये फर्नीचर देखा। अब फिर हर एक के करने लिये एक काम था।

लोमड़े ने सामान चुना। भेड़िये ने शटर बनाने का आर्डर दिया। भालू ये सब सामान उठा कर दरवाजे तक ले गया और गरुड़ उनको महल में ले गया।

उन्होंने वह सब सामान खरीदा जो एक महल के लिये जरूरी था – घर के बर्तन, कालीन, बड़े बड़े बर्तन आदि आदि। वे सब चीज़ें उन्होंने महल में ले जा कर सजा दीं। अब वहाँ किसी चीज़ की कमी नहीं थी।

दो हफ्ते गुजर चुके थे सो चारों घर गये। राजकुमार उस समय शिकार पर गया हुआ था इसलिये वे उससे वहीं मिलने चले गये। उन्होंने जा कर उसको चारों तरफ से घेर लिया और उसको कहीं जाने न दें।

लोमड़ा ज़ोर से बोला — "हम तुम्हें हुक्म देते हैं कि तुम हमारे साथ आओ जिधर भी हम तुम्हें ले चलें।"

राजकुमार तो यह सुन कर डर गया। उसको यह पता ही नहीं था कि इस सबका क्या मतलब था। पर फिर भी उसको जाना पड़ा। थोड़ी ही देर में जब वे सब खुली जगह पहुँच गये। वह जगह एक दीवार से चारों तरफ से घिरी हुई थी जिसके पार कोई चिड़िया तक नहीं उड़ सकती थी।

उन्होंने उसके फाटक खोले और उसके अन्दर गये। जब राजा के बेटे ने वह सब देखा तो वह तो आश्चर्य से भौंचक्का रह गया। दीवार के अन्दर बहुत ही सुन्दर बागीचा था जिसमें कई फव्वारे पानी बिखेर रहे थे। और उनके बीच खड़ा था एक बहुत सुन्दर महल।

यह दिखा कर वे बोले — "यह हम सबने मिल कर तुम्हारे लिये दो हफ्ते में बनाया है। अब तुम इस मकान में खुशी खुशी आराम से रहो।"

राजकुमार तो यह सब देख कर बहुत खुश हुआ और लोमड़े का दिल से धन्यवाद किया। वहाँ रहते रहते फिर कुछ समय बीत गया।

अब लोमड़ा बोला — "अब मुझे लगता है कि मालिक के लिये हम एक बहुत अच्छी सी पत्नी ढूँढ दूँ।"

सो वह राजकुमार के पास गया और उसने उससे फिर से दो हफ्ते की छुट्टी माँगी। राजकुमार ने तुरन्त ही उसको छुट्टी दे दी।

छुट्टी ले कर उसने एक स्ले[49] बनायी। उसने उसमें भालू और भेड़िया जोता और गरुड़ से कहा — "तुम बहुत ऊँचे ऊपर उड़ जाओ और ज़रा ध्यान से देखते रहो। जब तुमको कोई बहुत सुन्दर राजकुमारी मिल जाये तो उसको अपने पंजों में पकड़ कर यहाँ ले आना।"

वह खुद उस स्ले में बैठ कर कोचवान का काम करने लगा। इस तरह से वे जगह जगह घूमते फिरे।

गाँवों में लोमड़े ने बिगुल बजाये भालू और भेड़िया कूदे और नाचे। उनका नाच कूद देखने के लिये बहुत सारी भीड़ जमा हो गयी। जब वे राजधानी में आये तो वहाँ सूरज की तरह से सुन्दर एक बहुत सुन्दर लड़की आयी।

गरुड़ ने उसको देखा तो तुरन्त ही उसको अपने पंजों में दबोचा और उड़ चला। भालू और भेड़िये भी अपने घर को लौट चले।

[49] Sledge or sleigh is a wheelless carriage which is used normally in snow covered regions and is drawn by horses or reindeers. See its picture above.

जब लोगों ने देखा तो वे भी उनके पीछे पीछे चले। लोमड़ा अपने साथियों से पीछे था। कुत्ते उसके पीछे भागे चले आ रहे थे। वे तो उसका शाल पकड़ने ही वाले हो रहे थे कि किसी तरह से वे सब उस सुन्दर राजकुमारी को ले कर अपने मालिक के पास अपने घर आ गये।

राजकुमार तो यह देख कर खुशी के मारे उछल ही पड़ा। उसके तो पैर ही जमीन पर नहीं पड़ रहे थे।

यह सब देख कर राजकुमारी का पिता बहुत गुस्सा था। उसने कहा — "जो कोई भी मेरी बेटी को ढूँढेगा और उसे मेरे पास वापस लायेगा मैं उसे अपना आधा राज्य दूँगा।" पर कोई उसका निशान भी नहीं पा सका।

आखिर एक बुढ़िया वहाँ आयी और बोली — "मैं अपकी बेटी को ढूँढ कर लाऊँगी।" कह कर वह उठी और चल दी।

आखिर वह राजकुमार के घर आयी और वहाँ आ कर पूछा — "क्या आपको कोई नौकरानी चाहिये। मैं बहुत कम पैसे में आपका काम कर दूँगी।"

लोमड़ा भेड़िया भालू गरुड़ यहाँ तक कि राजकुमारी ने भी उसको यह कह दिया कि उनको उसकी जरूरत नहीं थी। पर राजकुमार उनसे राजी नहीं था। उसने उसको नौकर रख लिया।

बुढ़िया ने काफी दिनों तक उनकी बड़ी वफादारी से सेवा की और उनको किसी तरह की कोई तकलीफ नहीं होने दी।

एक दिन जब राजकुमार सोया हुआ था तो बुढ़िया ने राजकुमारी से उसके साथ बागीचे में चलने के लिये कहा।

राजकुमारी जाना नहीं चाहती थी पर बुढ़िया उससे जिद करती ही रही जब तक कि वह राजी नहीं हो गयी। सो दोनों बागीचे में घूमने आ गयीं। दोनों फव्वारे के पास आयीं तो बुढ़िया ने उसको पानी पीने को दिया। राजकुमारी ने मना किया तो उसने उससे पीने की जिद की।

उसने पानी का एक बड़ा सा बर्तन राजकुमारी के होठों से लगा दिया। अचानक ही उसने राजकुमारी को निगल लिया। फिर बुढ़िया ने उसको अपने मुँह से लगाया तो उसने उसको भी निगल लिया। अब बर्तन लुढ़क चला।

लोमड़ा यह सब देख रहा था। उसने उस बर्तन का पीछा भी किया पर वह जल्दी ही उसकी आँखों से ओझल हो गया। लोमड़ा तुरन्त अपने मालिक के पास गया पर अब उससे कुछ कहने का कोई फायदा नहीं था।

उसने उससे फिर से दो हफ्ते की छुट्टी माँगी उसने फिर से अपनी पुरानी तरह की स्ले बनायी उसने फिर से भालू और भेड़िये को उसमें जोता और खुद फिर से कोचमैन की जगह पर बैठ कर चल दिया।

अबकी बार उसके पंजों में तम्बूरीन्स थी। वह उसको बजाता था और भालू और भेड़िया नाचते थे।

गरुड़ ऊपर उड़ता हुआ इधर उधर राजकुमारी को ढूँढ रहा था। उस देश में बहुत सारे लोग यह नजारा देखने के लिये घर से बाहर आ गये।

राजा अपनी बेटी से अभी भी बहुत नाराज था। जब राजकुमारी ने बाहर जाना चाहा तो राजा ने उससे कहा — "नहीं बाहर मत जाओ। बल्कि बाहर देखना भी नहीं।"

गरुड़ बहुत देर तक इधर उधर देखता रहा। आखीर में उसने एक खिड़की में से राजकुमारी की एक छोटी सी झलक देख ली। बस वह उस खिड़की से जा कर टकराया और उसको तोड़ दिया। राजकुमारी को अपने पंजों में पकड़ा और उड़ चला।

वह अपने साथियों से जा कर मिल गया और वे सब घर की तरफ चल पड़े। वे राजकुमारी को अपने मालिक के पास ले आये। उधर राजा ने अपनी सेना इकट्ठी की और उस बुढ़िया को साथ ले कर राजकुमार के महल भेज दिया।

लोमड़े ने दूर से उनको एक मक्खियों के झुंड की तरह आते देखा तो उसने गरुड़ को आसमान में पत्थर ले जाने के लिये कहा और कहा कि जब सेना आ जाये तो वे पत्थर वह उन आदमियों के ऊपर फेंक दे। लोमड़ा भालू और भेड़िया उन पर अलग से हमला कर देंगे और उनको सबको मार देंगे। ऐसा ही हुआ।

केवल एक आदमी बचा सो वे उस पर भी टूट पड़े और उस पर अपना एक पंजा रख कर उससे कहा — "जाओ और जा कर अपने राजा को बता दो कि उसके आदमियों पर क्या बीती है।"

वह आदमी अपने राज्य चला गया। जब राजा ने अपने केवल एक आदमी को वापस आते देखा और अपनी सेना के मारे जाने के बारे में सुना तो वह दुख से पागल हो गया।

उसने अपने राज्य के सारे बड़े बड़े पादरियों को बुलाया और उनको ले कर राजकुमार के महल ले गया। वे आये और उसके सामने घुटने टेक कर बैठ गये।

जब वे पास आये तो लोमड़े ने उनको देखा और अपने मालिक को बताया। राजकुमार उनसे मिलने के लिये दौड़ा गया और उनको उनके पैरों पर खड़ा किया। फिर वह उनको अपने घर में अन्दर ले गया। राजकुमारी का पिता और उनके दामाद ने फिर आपस में समझौता कर लिया और दोनों खुशी खुशी रहे।

लोमड़ा अपने मालिक से बोला — "मैं अब बूढ़ा हो रहा हूँ। मैं अब जल्दी ही मर जाऊँगा। आप मुझसे वायदा कीजिये कि आप मुझे एक मुर्गीखाने में दफ़नायेंगे।"

राजकुमार ने वायदा किया कि वह वैसा ही करेगा जैसा कि उसने उससे करने के लिये कहा है।

लोमड़े ने सोचा "मैं देखता हूँ कि मेरे मालिक अपना वायदा निभाते हैं या नहीं।" और वह ऐसा पड़ गया जैसे कि वह मर गया

हो। राजकुमार ने जब उसकी लाश देखी तो उसने हुक्म दिया कि उसको ले जा कर बाहर जमीन में गाड़ दें।

इस पर लोमड़ा बहुत गुस्सा हुआ। वह कूद पड़ा और ज़ोर से चिल्लाया — "मेरी अच्छाइयों को क्या आप इसी तरह से याद रखेंगे। अब क्योंकि आपने ऐसा कर दिया है तो जब मैं मरूँगा तब आप सब पर मेरा शाप पड़ेगा आप सबका नामोनिशान तक मिट जायेगा।"

इसके कुछ समय बाद लोमड़ा मर गया। इसके बाद उसके वे शब्द सच हुए। वे सब मर गये। बस केवल भेड़िया भालू और गरुड़ ही वहाँ के मालिक रहे।

16 एक राजा और सेब[50]

एक बार की बात है कि या तो था और या फिर बिल्कुल ही नहीं था एक राजा रहा करता था। वह बहुत बूढ़ा हो गया था और उसकी मौत का समय पास आ गया था।

सो उसने अपने बेटे को बुलाया और उससे कहा — "लो बेटा यह सन्दूकची तुम अपने पास रखो। जिस दिन तुम शिकार के लिये पूर्व की तरफ जाओ और तुम बहुत परेशानी में हो तब इसे खोलना।"

यह कह कर राजा मर गया। उसको जिस तरह वह चाहता था उसी तरह से दफ़ना दिया गया। पिता की मौत के बाद राजकुमार बहुत दुखी हो गया और इतना दुखी हो गया कि उसने घर से बाहर ही निकलना बन्द कर दिया।

आखिर राज्य के मन्त्री लोग अपने नये राजा के पास आये और उसको सलाह दी कि उसको शिकार के लिये जाना चाहिये ऐसे घर में बैठे रहने से कैसे काम चलेगा।

राजा को यह विचार अच्छा लगा और वह शिकार के लिये चल दिया। वे लोग पूर्व की तरफ गये और उन्होंने बहुत सारे शिकार मारे।

---

[50] The King and the Apple (Tale No 16)

जब वे लोग लौट रहे थे तो नौजवान राजा ने सड़क के पास एक मीनार देखी। उसको देख कर उसने यह इच्छा हुई कि वह उसमें जा कर देखे कि उसमें क्या है।

उसने अपने एक मन्त्री से कहा कि वह उसके अन्दर जाये और जा कर देखे कि उसके अन्दर क्या है। उसने राजा का हुक्म माना पर कहा — "मुझे लगता है कि मैं इसमें से तीन दिनों में वापस आ जाऊँगा और अगर मैं न आऊँ तो समझियेगा कि मैं मर गया।"

तीन दिन बीत गये। मन्त्री नहीं लौटा। राजा ने दूसरा मन्त्री भेजा फिर तीसरा मन्त्री भेजा फिर चौथा मन्त्री भी भेजा पर चारों में से कोई भी मन्त्री वापस लौट कर नहीं आया। तब वह खुद उठा और उसमें अन्दर जाने के लिये तैयार हुआ।

जब वह दरवाजे के पास पहुँचा तो उसने देखा कि दरवाजे के ऊपर लिखा था "तुम घुसोगे तो तुम पछताओगे। और नहीं घुसोगे तो भी तुम पछताओगे।"

राजा ने सोचा "तो मुझे कुछ न कुछ तो करना ही है। मैं घुसूँ या फिर न घुसूँ। मैं घुस कर भी पछताऊँगा और बिना घुसे भी। तो फिर मैं घुस कर ही क्यों न पछताऊँ।" उसने दरवाजा खोला और उसके अन्दर घुस गया।

लो वहाँ तो **12** आदमी नंगी तलवारें हाथ में लिये खड़े थे। उन्होंने उसका हाथ पकड़ा और उसको **12** कमरों में से निकाल कर अन्दर ले गये।

जब वह **12**वें कमरे में आया तो उसने वहॉ एक सोने का काउच देखा जिस पर एक आठ नौ साल की उम्र का लड़का लेटा हुआ था। उसकी ऑखें बन्द थीं और वह एक शब्द भी नहीं बोला।

राजा को बताया गया कि वह लड़के से तीन सवाल पूछ सकता था। पर अगर वह उन सवालों को नहीं समझता और सब सवालों के जवाब नहीं देता तो उसका सिर कटवा दिया जायेगा।

यह सुन कर तो राजा बहुत दुखी हो गया कि वह अब क्या करे। पर फिर उसको अपने पिता की दी हुई सन्दूकची का ध्यान आया। उसने सोचा "इससे ज़्यादा मेरी बदकिस्मती क्या होगी कि मुझे मरना पड़ रहा है।"

सो उसने सन्दूकची निकाली और उसे खोला। खोलते ही उसमें से एक सेब निकल कर नीचे गिर पड़ा। गिर कर वह काउच की तरफ लुढ़क गया। राजा ने सोचा "यह मेरी क्या सहायता करेगा।"

वह यह सोच ही रहा था कि सेब बोलने लगा। उसने लड़के को नीचे लिखी हुई कहानी सुनायी —

"एक आदमी अपनी पत्नी और भाई के साथ यात्रा कर रहा था। चलते चलते उनको रात हो गयी। उनके पास खाना भी नहीं था। सो भाई पास के गॉव में डबल रोटी खरीदने गया। रास्ते में

उसको डाकू मिल गये जिन्होंने उसे लूट लिया और उसका सिर काट दिया।

जब आदमी ने देखा कि उसका भाई लौट कर नहीं आया तो वह उसको देखने गया। उसका भी वही हाल हुआ जो उसके भाई का हुआ था। अगले दिन वह दुखी स्त्री उनको देखने गयी। बीच रास्ते में उसने अपने पति और उसके भाई की लाशें पड़ी देखीं जिनका सिर नहीं था।

पास में ही उनके सिर पड़े थे। उनके चारों तरफ खून बिखरा पड़ा था। वह स्त्री बेचारी वहीं बैठ गयी। वह अपने बाल नोचने लगी और उसने बहुत ज़ोर ज़ोर से रोना शुरू कर दिया।

तभी वहाँ एक छोटा सा चूहा आया और उसने खून चाटना शुरू कर दिया। इस पर स्त्री ने एक पत्थर उठाया उसको चूहे पर दे मारा जिससे चूहा मर गया।

अब चूहे की माँ बाहर आयी और बोली — "मेरी तरफ देख। मैं तो अपने बच्चे को ज़िन्दा कर सकती हूँ पर तू अपने पति और उसके भाई के लिये क्या कर सकती है।" कह कर उसने एक जड़ी बूटी उखाड़ी और उसे चूहे के शरीर पर मल दिया और लो वह चूहा तो ज़िन्दा हो गया। बस फिर वे दोनों अपने बिल में घुस गये।

यह देख कर वह स्त्री तो बहुत खुश हो गयी। उसने भी वही जड़ी बूटी तोड़ी अपने पति और उसके भाई के सिर उनके धड़ से जोड़े और वह जड़ी बूटी उनके ऊपर लगा दी। उसका पति और

उसके पति का भाई दोनों ज़िन्दा हो गये। पर उससे एक गलती हो गयी। उसने वे सिर गलत शरीरों पर लगा दिये।

अब मेरे नौजवान बेटे तुम यह बताओ कि उस स्त्री का पति कौन सा था।" कह कर सेब ने अपनी कहानी खत्म की।

लड़के ने अपनी ऑखें खोलीं और कहा — "निश्चित रूप से वही जिस शरीर पर उसके पति का सिर था।"

राजा यह सुन कर बहुत खुश हुआ।

सेब फिर बोला — "एक बार एक मिलाने वाला[51], एक दर्जी और एक पादरी एक साथ कहीं जा रहे थे। चलते चलते उनको जंगल में रात हो गयी सो उन्होंने एक बहुत बड़ी आग जलायी खाना खाया फिर बोले — "हमको नौकरी दिलवा दीजिये। हममें से हर एक बारी बारी से पहरा देगा और अपने अपने काम में कुछ न कुछ करेगा।"

मिलाने वाले की बारी पहली थी सो उसने एक पेड़ काटा और उसकी लकड़ी से एक आदमी बनाया। फिर वह लेट गया और सो गया। अब दर्जी की पहरा देने की बारी आयी। तो उसने एक आदमी की मूर्ति देखी तो उसने अपने कपड़े उतारे और उसको पहना दिये।

दर्जी के बाद अब पादरी की पहरा देने की बारी थी। जब उसने एक आदमी कपड़े पहने हुए देखा तो उसने भगवान से प्रार्थना

[51] Translated for the word "Joiner"

की वह उसमें आत्मा डाल दे। उसने प्रार्थना की और भगवान ने उसकी इच्छा पूरी की। अब यह बताओ मेरे बच्चे कि उस आदमी को किसने बनाया?”

“जिसने उसमें आत्मा डाली।” लड़के ने जवाब दिया।

राजा यह सुन कर बहुत खुश हुआ। उसने अपने मन में सोचा “ये दो सवाल हो गये।”

सेब फिर बोला — “एक बार एक ज्योतिषी था एक डाक्टर था और एक तेज़ भागने वाला था। ज्योतिषी बोला — “एक जगह एक राजकुमार है जो फलॉ फलॉ बीमारी से बीमार है।”

डाक्टर बोला — “मैं जानता हूँ कि उसका इलाज क्या है।”

तो तेज़ भागने वाला बोला — “मैं उस दवा को वहॉ जल्दी से जल्दी ले जा सकता हूँ।”

सो डाक्टर ने उसके लिये दवा तैयार की और वह तेज़ भागने वाला उस दवा को ले कर वहॉ भाग गया। और राजकुमार ठीक हो गया।

अब यह बताओ कि राजकुमार को किसने ठीक किया – ज्योतिषी ने जिसने राजकुमार के बारे में बताया या फिर डाक्टर ने जिसने दवा तैयार की या फिर उस आदमी ने जो दवा ले कर भाग कर गया।”

लड़का बोला — “जिसने दवा तैयार की।”

जब लड़के ने तीनों के जवाब दे दिये तो वह सेब फिर से अपनी सन्दूकची में जा कर बैठ गया। और राजा ने वह सन्दूकची अपनी जेब में रख ली।

लड़का उठा उसने राजा को गले लगाया और बोला — "यहॉ बहुत लोग आये पर इससे पहले मैं बोल नहीं सका। अब तुम मुझे अपनी इच्छा बताओ कि तुम्हारी क्या इच्छा है मैं वही पूरी करूँगा।"

राजा ने कहा कि उसके मन्त्री जो मर चुके थे उनको ज़िन्दा कर दिया जाये।

लड़के ने वैसा ही किया। सब लोग बहुत सारी भेंटें ले कर अपने घर वापस गये।

Classic Books of European Folktales in Hindi
Translated by Sushma Gupta

1353 **Il Decamerone.**
No 33 By Giovanni Boccaccio.
Translated in 3 volumes

1550 **Nights of Straparola**
No 21 By Giovanni Francesco Straparola. 1550, 1553. 2 vols.
First Translator : HG Waters. London : Lawrence and Bulletin.

1634 **Il Pentamerone.**
No 9 By Giambattista Basile. 50 tales. Translated in 3 volumes
First two volumes from John Edward Taylor – 32 tales
The third volume from Sir Richard Burton – remaining 19 tales

1874 **Serbian Folklore.**
No 2 By Madam Csedomille Mijatovies. London : W Ibisters. 26 tales.
"Hero Tales and Legends of the Serbians". By Woislav M Petrovich.
London : George and Harry. 1914 (1916, 1921).
It contains 20 folktales out of 26 tales of "Serbian Folklore: popular tales"

1885 **Italian Popular Tales.**
No 27 By Thomas Frederick Crane. 109 tales. 4 volumes

1894 **Georgian Folk Tales**.
No 18 Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt. **1894**. 35 tales.
Its Part I was published in 1891, Part II in 1880 and Part III was published in 1884.

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें हिन्दी में
हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

1. Zanzibar Tales: told by the Natives of the East Coast of Africa.
Translated by George W Bateman. Chicago, AC McClurg. **1901**. 10 tales.
ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं। अनुवाद – जौर्ज डबल्यू बेटमैन। **2022**

2. Serbian Folklore.
Translated by Madam Csedomille Mijatovies. London, W Isbister. **1874.** 26 tales.
सरबिया की लोक कथाऐं। अंग्रेजी अनुवाद – मैम ज़ीडोमिले मीजाटोवीज़। **2022**

"Hero Tales and Legends of the Serbians". By Woislav M Petrovich. London : George and Harry. 1914 (1916, 1921). it contains 20 folktales out of 26 tales of "Serbian Folklore: popular tales"

3. The King Solomon: Solomon and Saturn
राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्न्। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – प्रभात प्रकाशन। जनवरी **2019**

4. Folktales of Bengal.
By Rev Lal Behari Dey. **1889**. 22 tales.
बंगाल की लोक कथाऐं — लाल बिहारी डे। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – नेशनल बुक ट्रस्ट।। **2020**

5. Russian Folk-Tales.
By Alexander Nikolayevich Afanasief. **1889**. 64 tales. Translated by Leonard Arthur Magnus. 1916.
रूसी लोक कथाऐं – अलैक्ज़ैन्डर निकोलायेविच अफ़ानासीव। **2022**। तीन भाग

6. Folk Tales from the Russian.
By Verra de Blumenthal. **1903**. 9 tales**.**
रूसी लोगों की लोक कथाऐं – वीरा डी ब्लूमैन्थल। **2022**

7. Nelson Mandela's Favorite African Folktales.
Collected and Edited by Nelson Mandela. 2002. 32 tales
नेलसन मन्डेला की अफ्रीका की प्रिय लोक कथाऐं। **2022**

8. Fourteen Hundred Cowries.
By Fuja Abayomi. Ibadan: OUP. 1962. 31 tales.
चौदह सौ कौड़ियॉ – फूजा अबायोमी। **2022**

9. Il Pentamerone.
By Giambattista Basile. 1634. 50 tales.
इल पैन्टामिरोन – जियामबतिस्ता बासिले। **2022**। **3** भाग

10. Tales of the Punjab.
By Flora Annie Steel. 1894. 43 tales.
पंजाब की लोक कथाऐं – फ्लोरा ऐनी स्टील। **2022**। **2** भाग

11. Folk-tales of Kashmir.
By James Hinton Knowles. 1887. 64 tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं – जेम्स हिन्टन नोलिस। **2022**। **4** भाग

12. African Folktales.
By Alessandro Ceni. Barnes & Nobles. 1998. 18 tales.
अफ्रीका की लोक कथाऐं – अलेसान्ड्रो सैनी। **2022**

13. Orphan Girl and Other Stories.
By Offodile Buchi. 2001. 41 tales
लावारिस लड़की और दूसरी कहानियाँ – ओफ़ोडिल बूची। **2022**

14. The Cow-tail Switch and Other West African Stories.
By Harold Courlander and George Herzog. NY: Henry Holt and Company. 1947. 143 p.
गाय की पूँछ की छड़ी – हैरल्ड कूरलैन्डर और जौर्ज हरज़ौग। **2022**

15. Folktales of Southern Nigeria.
By Elphinston Dayrell. London : Longmans Green & Co. **1910**. 40 tales.
दक्षिणी नाइजीरिया की लोक कथाऐं – ऐलफिन्स्टन डैरैल। **2019**

16. Folk-lore and Legends : Oriental.
By Charles John Tibbitts. London, WW Gibbins. 1889. 13 Folktales.
अरब की लोक कथाऐं – चार्ल्स जौन टिबिट्स। **2022**

17. The Oriental Story Book.
By Wilhelm Hauff. Tr by GP Quackenbos. NY : D Appleton. **1855**. 7 long Oriental folktales.
ओरिऐन्ट की कहानियों की किताब – विलहैल्म हौफ़। **2022**

18. Georgian Folk Tales.
Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt. **1894**. 35 tales. Its Part I was published in 1891, Part II in 1880 and Part III was published in 1884.
जियोर्जिया की लोक कथाऐं – मरजोरी वारड्रौप। **2022**। **2** भाग

19. Tales of the Sun, OR Folklore of South India.
By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri. London : WH Allen. **1890**. 26 Tales
सूरज की कहानियाँ या दक्षिण की लोक कथाऐं — मिसेज़ हावर्ड किंग्सकोटे और पंडित नतीसा सास्त्री। **2022**।

20. West African Tales.
By William J Barker and Cecilia Sinclair. **1917**. 35 tales.
पश्चिमी अफीका की लोक कथाऐं — विलियम जे बार्कर और सिसीलिया सिन्क्लेयर। **2022**

21. Nights of Straparola.
By Giovanni Francesco Straparola. **1550, 1553**. 2 vols. First Tr: HG Waters. London: Lawrence and Bullen. **1894**.
स्ट्रापरोला की रातें — जियोवानी फ्रान्सैस्को स्ट्रापरोला। **2022**

22. Deccan Nursery Tales.
By CA Kincaid. **1914**. 20 Tales
दक्कन की नर्सरी की कहानियाँ – सी ए किनकैड। **2022**

23. Old Deccan Days.
By Mary Frere. **1868 (5th ed in 1898**) 24 Tales.
पुराने दक्कन के दिन – मैरी फैरे। **2022**

24. Tales of Four Dervesh.
By Amir Khusro. **Early 14th century**. 5 tales. Available in English at :
किस्सये चहार दरवेश — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**

25. The Adventures of Hatim Tai : a romance (Qissaye Hatim Tai).
Translated by Duncan Forbes. London : Oriental Translation Fund. **1830.** 330p.
किस्सये हातिम ताई — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**।

26. Russian Garland : being Russian folktales.
Edited by Robert Steele. NY : Robert McBride. **1916**. 17 tales.
रूसी लोक कथा माला — अंग्रेजी अनुवाद – ऐडीटर रोबर्ट स्टीले। **2022**

27. Italian Popular Tales.
By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. **1885**. 109 tales.
इटली की लोकप्रिय कहानियाँ — थोमस फैडैरिक केन। **2022**

28. Indian Fairy Tales
By Joseph Jacobs. London : David Nutt. 1892. 29 tales.
भारतीय परियों की कहानियाँ — जोसेफ जेकब्स। **2022**

29. Shuk Saptati.
By Unknown. c 12th century. Tr in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911.
Under the Title “The Enchanted Parrot”.
शुक सप्तति — । **2022**

30. Indian Fairy Tales
By MSH Stokes. London : Ellis & White. **1880.** 30 tales.
भारतीय परियों की कहानियॉ — ऐम ऐस ऐच स्टोक्स। **2022**

31. Romantic Tales of the Panjab
By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. **1903**. 422 p. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियॉ — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

32. Indian Nights' Entertainment
By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. **1892**. 426 p. 52/85 Tales.
भारत की रातों का मनोरंजन — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

33. Il Decamerone
By Giovanni Boccaccio. **1353**. 100 Tales.
इल डैकामिरोन — जिओवानी बोकाकिओ। **2022**

34. Indian Antiquary 1872
A collection of scattered folktales in this journal. 1872.

35. Short Tales of Punjab
By Charles Swynnerton. Collected from his two books "Romantic Tales of the Panjab" and "Indian Nights' Entertainment". **1903 and 1892** respectively.
पंजाब की लघु कथाऐं —

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022
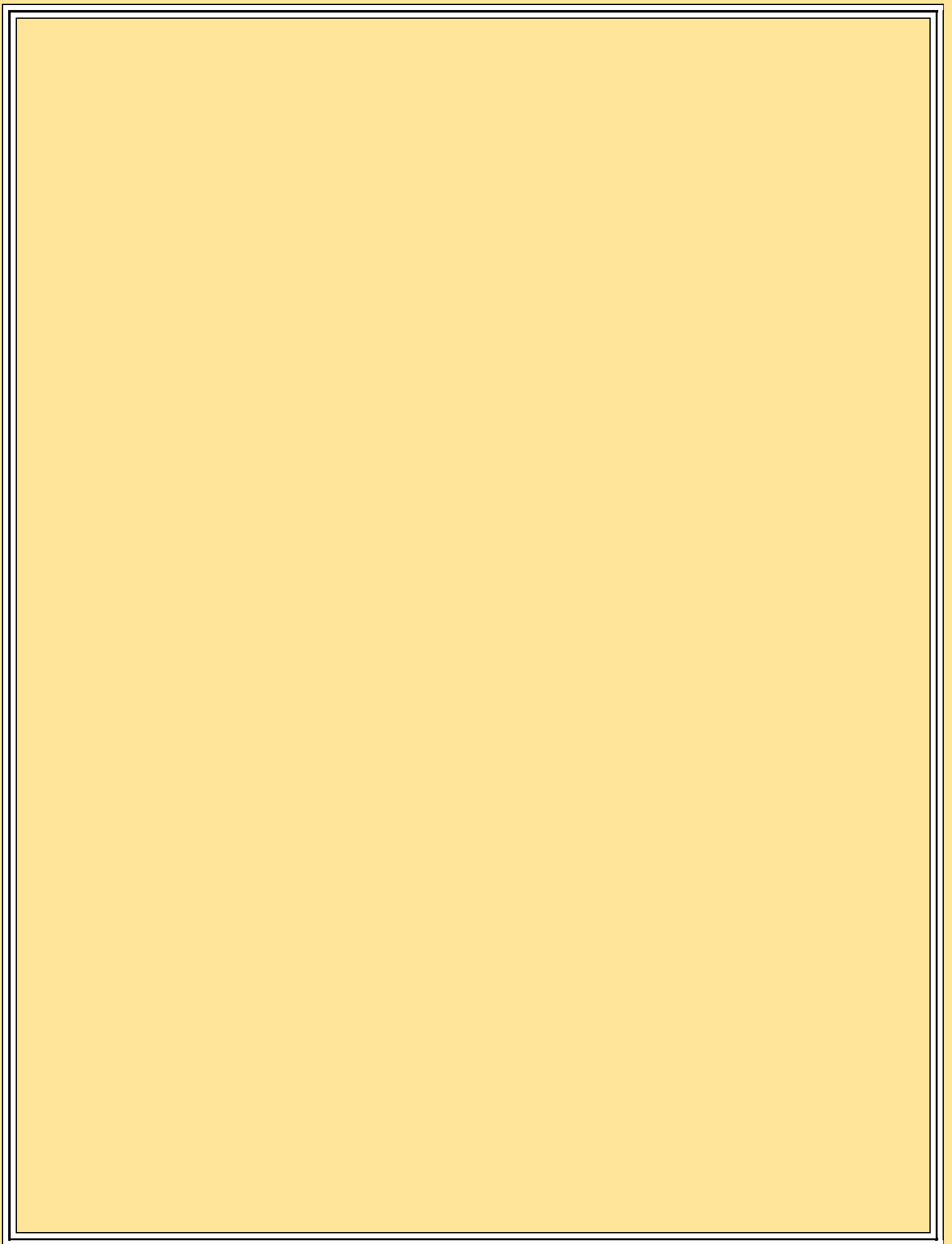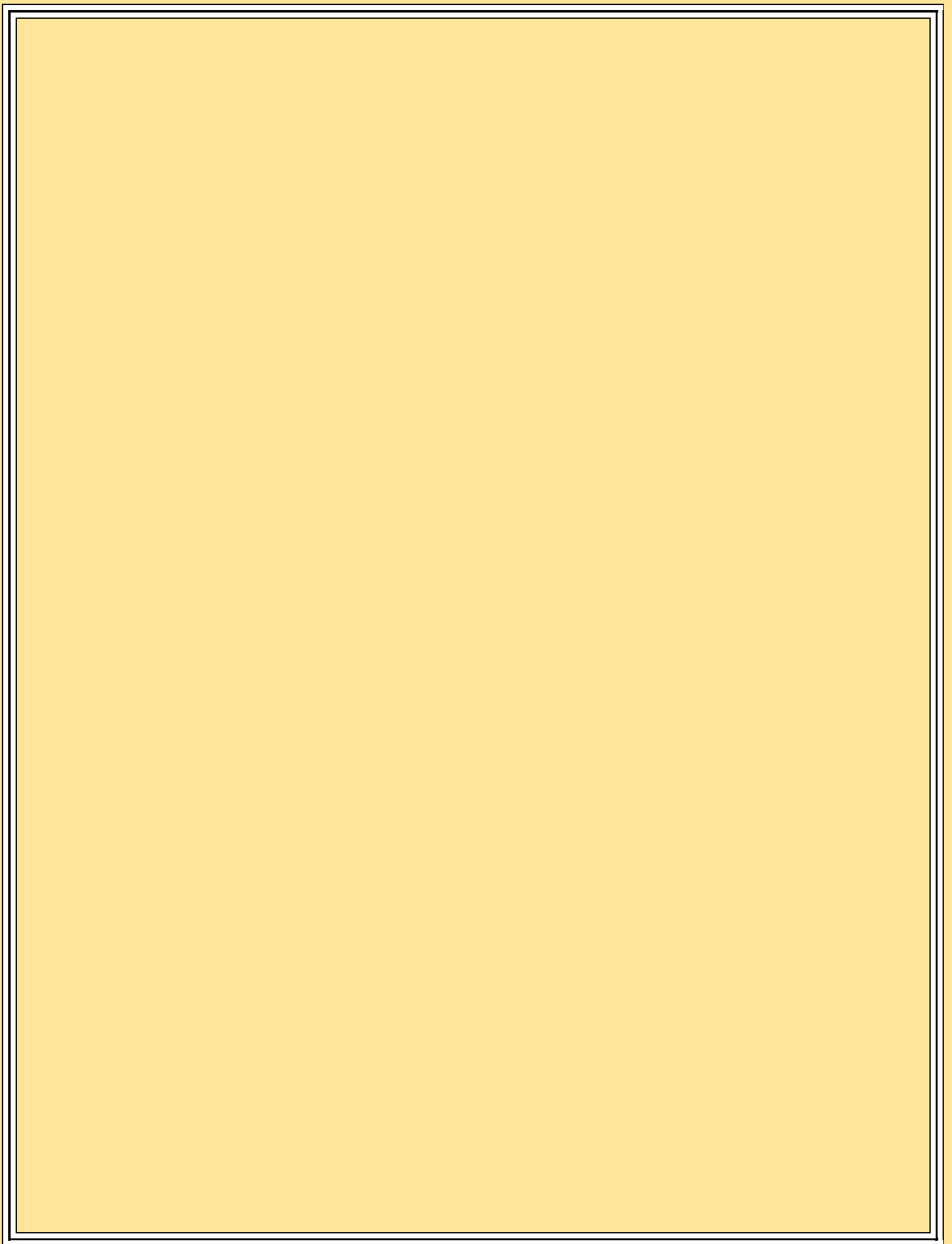
लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2022** तक इनकी **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया गया है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022